॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज
रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-
मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके
मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की
आज्ञानुसार और सहायतासे,
कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ
अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् - यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावणवध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

कानन कठिन कलेश छबीली तुमतौ अति सुकुमारी ॥
सकल महादुख कैसे सहिहौ ह्वैहौ निपट दुखारी ॥
कोल भील गज सिंह रीछ कपि बिकट सदा बनचारी ॥
डरिहौ तिनहिं निहारि सुंदरी ते लागत भयकारी ॥ ४१ ॥
ताते इतहिं रहौ वैदेही सबही विधि सुख पैहौ ।
करिहैं सकल रावरी सेवा जो कछु आयसु दैहौ ॥
हम निज करते नव पत्रन की रचिहैं कुटी सुहाई ।
सखी सदा तुम संयुत बसिहैं राम लषण दुहुँभाई ॥ ४२ ॥
अवधि बिताय अवध पुनि चलियो हम सब संग सिधैं हैं ।
जौलौं इत रहिहो तौलौं नित लखि निज नैन सिरैं हैं ॥
जबते सुनो श्रवण ते स्वामिनि हम वन गमन तिहारो ।
तबहीते उर कल न परत है करसकत हृदय हमारो ॥ ४३ ॥
ग्रामवधुनके बचन सुनत सिय कही मनोहर बानी ॥
जानति हौ तिय धर्म सखीरी तुम सब परम सयानी ॥
राजकुँवर वर श्याम सलोने धर्म धुरंधर आली ॥
चौदह वर्ष प्रमाण राजतजि पितु आयसु जिन पाली ॥ ४४ ॥
तिनकी रुचि जो होय सखीरी सोई मोहिं सुहाही ॥
पतिसेवा मन बचन कर्म तिय धर्म परम यह आही ॥
सब दुखदानि सुखद उनके सँग रंच भीति कछु नाहीं ॥
निरखि श्याम मुखचंद्र सहेली हम दिन रैन अघाहीं ॥ ४५ ॥
इत बतरात रहीं तिय सियसों उत मन रघुवर पाँहीं ।
दृरशत कबहुँ दुरत कबहूँ चलि बन तरु लतिकन माहीं ॥
बिचरत फिरत विपिनमें लालन निरखि नवेली बामा ॥
सकुचति सी चितवैं तिहि ओरे जित डोलत घनश्यामा ॥४६॥
मिसते उठि सिय ढिगते सब तिय, राजकुँवर ढिग आईं ।
निरखि लालकी छटा अनूपम नैनन जल भरिलाईं ॥
लतन ओट ठाढे रघुनंदन लखि बोली इक बामा ।
हम रावरे दरशहित आईं हे सुंदर घनश्यामा ॥ ४७ ॥

तुम हौ राजकुमार छबीले हमहैं नारि गमारी ।
कहा करैं लखि रूप तिहारी, लागी प्रीति हमारी ॥
निरखि रावरी छटा लाडिले हम कुलकानि बिसारी ॥
रुकत नहीं तन प्राण राखियै अब कहँ लौ मन मारी ॥ ४८ ॥
हम सब तिय तुव पास छबीले विनय करन कछु आई ॥
सो सुनि मानिलेउ हे प्यारे करियो जनि वरियाई ॥
सुनो लाल बन गमन तिहारो तबते अति विलपाती ।
तुमहिं विलोकि विपिन दुख सुमिरत फटत हमारी छाती ॥ ४९ ॥
येती बिनय सुनो हो प्यारे सब ह्वै दीन निहोरैं ॥
प्राण अधार मानलीजो यह शीशनाय कर जोरैं ॥
सिया बंधु संयुत मनमोहन इतही अवधि बितावो ।
सबऋतु इहाँ सुखारी रैहो कितहूँ अनत न जावो ॥ ५० ॥
कै पुनि संग लेहु हम सबहीं चलि हैं साथ तिहारे ।
तुमहिं बिहाय सुहाय और नहिं घर पुर सकल बिसारे ॥
करिहैं सदा रावरी सेवा विनादामकी दासी ।
और कछू न चहैं हे प्यारे हम सब रूप उपासी ॥ ५१ ॥
और न कौऊ सुहात साँवरे तुम कछु टोना कीनो ।
नेक छटा दरशाय छबीली तन मन सब हरिलीनो ॥
कै अब इतही रहो लाड़िले कै सबही सँग लेहू ।
अबला अबल जानि हे प्रीतम, जनि बिछुरन दुख देहू ॥ ५२ ॥
साँची प्रीत हमारी प्यारे हम छलछंद न जानै ।
तुमैं दियो तन प्राण आपनो करो सु जो मन मानै ॥
हैं सब ग्राम निवासिनि भोरी लखि तुव रूप लुभानी ।
तिन पर कृपा करो हे रघुवर दीन हीन मति जानी ॥ ५३ ॥
तिनकी प्रीतिरीति साँची लखि रघुनंदन हरषाने ।
बोले बचन धीर दे सब सों नीति नेहरस साने ॥
यों अधीर जनि होउ छबीली तुमहो परम सयानी ।
लोक लाज कुल धर्म विचारो कैसी भई अयानी ॥ ५४ ॥

पितु आयसु तजि राज साज हम, ह्वै तापस इत आये।
चौदह वर्ष न जाहिं ग्राम बन रहैं परण गृह छाये॥
एक जटिल दूजे परदेशी तुम हौ नारि ललामा।
हमरो तुमरो संग सयानी बनै नहीं अभिरामा॥ ५५॥
सबही बसौ सदा मेरे हिय सुधि राखियो हमारी।
फिरि हैं अवधि बिताय फेरि हम मिलिहैं वेगि पियारी॥
तुमरो धर्म यही है सुंदरि पति सुतमें चित दीजो॥
हृदय हमारो ध्यान राखियो नीतिकाज सब कीजो॥ ५६॥
राजकुँवरके बचन सुनत सब बाम विकल बिललानी।
ह्वै अधीर मोहनसों बोलीं विरह प्रीति नय बानी॥
तुम हौ नृपति किशोर लाडिले नीति धर्म सब जानौ।
लोक लाज मर्याद वेदकी सकल रीति पहिचानौ॥ ५७॥
हम हैं नारि गँवारि साँवरे धर्म कर्म नहिं जानैं।
मन लग जाय छैल जाही सों ताहीके हित सानैं॥
राखैं साँचीं प्रीत लाड़िले यही धर्म हमारे।
प्यार एक रस सदा निबाहैं सुन ले बचन पियारे॥ ५८॥
सुनौ बैन हे यार बटोही अबला अबल सदाहीं।
ताहू पै पुनि ग्राम निवासिनि कछू चातुरी नाहीं।
छलबल एकौ रंच न जानैं केवल प्रीत पियासी।
सांचोनेह लगै जाही सों ताहीकी हम दासी॥ ५९॥
जबते रूप तिहारो हेरो तबते सकल लुभानी।
पति सुत धाम त्यागिकै प्यारे हम तुव हाथ बिकानी॥
जिय भावै सो करौ लाडिले मारौ चहौ जिवावो।
पै यह विनय मान मनमोहन अब न रंच बिलगावो॥ ६०॥
परम प्रेममय बचन तियनके सुनि बोले रघुराई॥
तुम जु कही वाणी रससानी सब मेरे मन भाई॥
मानो सीख हमारी एती सकल बाम गृह जाहू॥
कबहुँ न कोऊ मोहिं बिसरियो मैं भूलौं नहिं काहू॥ ६१॥

लगे श्यामके बैन बाणसे बोलीं सब बिलखाई ॥
हाय हमारी पीर साँवरे रंचहु तोहिं न आई ॥
प्याय सुधा फिर विषदै मारैं ऐसे गुण नहिं जानें ॥
कारे कपटी होत सांचहू अब नीके पहिचानें ॥ ६२ ॥
कोऊ बोलि उठीं सुन सजनी और उपाय नकीजै ।
सब विरहिनी बाम जुरि मिलिके प्राण इनहिं ढिग दीजे ॥
कोऊ कहैं अरी आली यह जतन करौ सब कोऊ ।
अंगविभूति रमाय त्यागि घर सकल फकीरिन होऊ ॥ ६३ ॥
कोऊ कहैं हाय हे छैला मैं तुमरी बलि जाऊँ ।
अब जनि मोहिं सताव पियारे पद गहि हाहा खाऊं ॥
कोऊ कहैं साँवरे तुम तौ राजकुमार कहावौ ॥
ऐसी निठुराई नहिं चहिये हिये दया कछु लावो ॥ ६४ ॥
कोऊ कहैं हाय हे प्रीतम डार प्रीतकी फाँसी ।
करी मोहिं अधमरी छोडि जनि जाओ मीत विशासी ॥
कोऊ कहैं श्याम यह तुमरी नेक चितौन तिरीछी
रोम रोम विधि गई हमारे छुवत चढ़ी जनु बीछी ॥ ६५ ॥
कोऊ कहैं सखी रघुवंशी इनहिं दया नहिं आवै ॥
करत अहेर हेर मृगछौनन रंचहु कसक न लावै ।
कोऊ कहैं सखी ये तापस प्रीत रीत कह जानैं ॥
कोऊ कहैं भटू निरमोही मोह न रंचहु मानैं ॥ ६६ ॥
कोऊ कहैं सखी कहुँ इनको विरह पीर नहिं व्यापी ।
कोऊ कहैं भटू सब कारे लखियत पर संतापी ॥
कोऊ कहैं अलीरी इनको निपट कठोर हियो है ।
कोऊ कहैं ऐसही गुणतें पितु बनवास दियो है ॥ ६७ ॥
कोऊ कहैं श्याम निरमोही अब तू जनि दुख दे रे ।
कै इतहीं रह प्राणपियारे कै सबहीं सँग लेरे ॥
कोऊ कहैं अरे निरदैया इतनी कृपा किये जा ।
निज करते सब तियन मारिकै प्राणन साथ लियेजा ॥ ६८ ॥

कोऊ कहैं लाल तुम लाखनके जिय लीने ह्वै हौ॥
कोऊ कहैं प्राण अबहीं कह कोटिनहूंके लै हौ।
कोऊ कहैं अली इनके हिय रूप गुमान घनेरो॥
कोऊ कहैं लरकपन आली छुटो नहीं बहु तेरो॥ ६९॥
कोउ कहैं भटू मनमोहन पाई नारि सयानी।
याते हीय न रंचहु भावै हम सब निपट अयानी॥
कोऊ कहैं चरण गहि रहिये, कैसे फेर तजैंगे।
कोऊ कहैं निरदई छली ये नेक न लाज लजैंगे॥ ७०॥
कोउ कहैं वरजोरी राखैं हमतौ जान न दै हैं॥
कोउ कहैं जित चहैं जाँय तित अब तौ संग सिधै हैं॥
कोउ कहैं सबही चलि हूजि, योगिनि इनके पाछे॥
लाज कहा तस नाच नाचिये वीर काछ जस काछे॥ ७१॥
कोऊ कहैं सखीरी इन बिन धृगजीवन सबहीको॥
सुत पति हित धन धाम भोग सुख एकौ लगत न नीको॥
कोऊ कहैं भली अति कीनी श्याम जु इत ह्वै आये॥
कोऊ कहैं हमहिं मारनके कारन बनहिं सिधाये॥ ७२॥
कोऊ कहैं लाल कछु साँची कितनी नवला मारी॥
कीनी कहां घायलै केती किती तजीं अधमारी॥
कोऊ कहैं सखीरी इनके जहां जहां पग परि हैं॥
तहां तहां सबही वनितनकी ऐसीही गति करिहैं॥ ७३॥
कोऊ कहैं जहां ये सजनी ह्वैहैं रहत सदाई।
ता पुर में क्यों बसत होइँगे हेली लोग लुगाई॥
कोऊ कहैं सुनो री सजनी राजकुमार नहीं हैं।
ये रति काम देह द्वै धरिकै आये बनै सही हैं॥ ७४॥
कोऊ कहैं कहा अब कीजै अमित जतन करि हारी।
रंचहु कसक न आवत इनको अधिक कठोर हियारी॥
कोउ कहैं हम ओर हाय बलि नेक निहार छबीले।
जीव दया कछु लाव लाडिले हो न निठुर गरवीले॥ ७५॥

कोऊ कहैं सुनो हो प्यारे जो हमको कलपैहो ॥
सब बिरहिनि की हाय परैगी तो कबहुँ न कल पैहो ॥
कोऊ कहैं पाय छबि नीकी प्यारे गरब न कीजे ।
धन जोबन नहिं रहत सदाही यश जगमें करि लीजे ॥ ७६ ॥
कोऊ कहैं अरे साँवलिया क्यौं इतरात घनेरो ।
कछू बोल तौ रहो मौन क्यों हर कलेश यह मेरो ॥
कोऊ कहैं सखी या ढिगते चलिय गेह मन मारी ।
देखि देखि याकी छबि औरौ पीर उठत उर भारी ॥ ७७ ॥
कोऊ कहैं भटू विधि इहिकी जो ऐसी छबि कीनी ।
तौ सजनी याके उर काहे नेक दया नहिं दीनी ॥
कोऊ कहैं सखी काहू को काहे दोष लगैये ।
जो कछु होनी होय होय सो कर्म लिखे फल पैये ॥ ७८ ॥
कोऊ धाय जाय रघुवरके चरण परीं अकुलाई ।
कोऊ हाय हाय करि रोवन लगीं सामुहे आई ॥
विरह नेह वश विकल सबै तिय तन मन कीन सम्हारा ।
विह्वल बचन कहैं नैननते चली जात जलधारा ॥ ७९ ॥
तिनकी प्रीति निरखि नृप लालन नैन नीर भरि आयो ।
गदगद कंठ हृदय उमँगानो सकल अंग पुलकायो ॥
उर धरि धीर कही सबहीसों रघुनंदन मृदुबानी ।
हे सुंदरी प्रीत सब तुमरी मेरे हीय समानी ॥ ८० ॥
तुम सब हौ मम प्राणपियारी मैं हों तुव आधीनो ।
सांचो नेह सदा मुहिँ भावे रुचै न प्रीति विहीनो ॥
जाके जिय जैसी अभिलाषा तैसी ताहि पुजैहौं ।
हे भामिनीं बिलग मति मानौं मनमानो सुख दैहौं ॥ ८१ ॥
कहि कहि मधुर बचन रघुराई सब उर धीर धराई ।
संध्या समै जानि शिष दैकै निज निज गेह पठाई ॥
अपने अपने भौन गईं तिय जिय रघुनंदन माहीं ।
जकी थकी सी रहीं बैठिकै मनहीं मन बिलखाहीं ॥ ८२ ॥

उत रघुनंदनमें मन अटको इतै लाज गुरु जनकी।
दशा दुराय रहीं सबही तिय राखि मनहि में मनकी ॥
होय प्रात कब चलिय लाल ढिग नींद न रंचहु आवै।
छिन छिन लखैं चंद निशि तारे युग समान पलजावै ॥ ८३ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० ग्राम वधू समागम
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

इतै रैनि वसिकै रघुनंदन प्रातहि विपिन सिधारे।
ग्राम बधुनकी प्रीति सराहत चले जात मग प्यारे॥
दोऊ सिय रघुचंद परस्पर तिनही की सुधि करहीं।
साँचो नेह बखानि तियनको अतिआनँद उर भरहीं ॥ १ ॥
निशा विगत लखि उठीं सबै तिय करि गृहकाज उताली।
गुरु लोगनकी डीठ दुरै कै चलीं तहाँ मिलि आली॥
आईं जहाँ रहे नृपलालन तहाँ न श्याम निहारे॥
हिय धकधकी उठी सबहींके लखैं चहूँ कित प्यारे ॥ २ ॥
जाय निहारत भई सुवट तर सूनि साथरी पाई।
हेरतही सब वाम हाय करि गिरीं धरणि मुरझाई॥
घोर शोर करि रोवन लागीं कहँ गये कित प्यारे।
आँसुनधार बही नैननते तन मन प्राण बिसारे ॥ ३ ॥
कोऊ भूमि परी रज लोटैं कोउ फिरैं बिललाती।
कोऊ शीश धुनैं व्याकुल ह्वै कोऊ पीटति छाती॥
कोऊ हाय श्याम! कहि टेरैं कोऊ मौन रही हैं।
कोऊ लेति उसाँस आह भरि कोऊ विरह दही हैं ॥ ४ ॥
काहूकी सारी तनु ते गिरि लतिकनमें उरझानी।
काहूकी कंचुकी फटी सब सुधि बुधि सकल नशानी॥
काहूके अंगन ते केते भूषण टूट परेहैं।
काहूके आनन पै दुहुँदिशि कुंतल छूट परेहैं ॥ ५ ॥
काहूके तनुमें तरु वेलिनते जु खरौट परैहैं।

काहूके पायनमें कंटक लागे अमित खरेहैं ॥
काहूके अतिविरह ज्वालतें मुखसे फेन बहोहै ।
काहूके सब अंगन माहीं स्वेद जु छाय रहोहै ॥ ६ ॥
राज कुँवरके बिछुरत सबहीं भई बावरी बाला ।
जो जिय आवै कहैं करैं सो बढी विरहकी ज्वाला ॥
कोऊ कर कर शोर रोयकै हँसत निशंक बहोरी ।
कोऊ हाय मार रहि जावैं पुनि बैठे मुख मोरी ॥ ७ ॥
कोऊ मनहीं ते बतरावैं अरु अनखाय रिसावैं ।
कोऊ बिरह कवित्त छंद कहि फिरि चुप है शिरनावैं ॥
कोऊ भानु भूमि नभ पक्षिन तरु गिरि निकट बुलावैं ।
कोऊ कहैं लाल वे ठाढे चलौ चलौ री धावैं ॥ ८ ॥
कोऊ दौरि चढें तरु गिरि पै इत उत चहुँ दिशि हेरैं ।
आव आव हो श्याम बटोही फिरौ फिरौ कहि टेरैं ॥
कोऊ धाय गहैं तरुपल्लव कहैं दौरियो आली ।
हम कर गहि राखे मनमोहन दुरे हुते इत ख्याली ॥ ९ ॥
कोऊ निज परछाँहीं लखिकै ताहि गहनको धावैं ।
कहैं वेगि आवोरी पकरौ लाल भगे ये जावैं ॥
कोऊ लखि प्रतिबिंब वारि बिच बोलैं अति बिलखाई ।
धाव धावरी आव वेगही ये ठाढे रघुराई ॥ १० ॥
कोऊ झुकि झुकि भूमि पंथमें चरण चिह्न चहुँ हेरैं ।
कोऊ खग मृग तरु लतिकन को जाय जाय मिलि घेरैं ॥
कोऊ कहैं सखी हम सबको आवत देखि दुराने ।
कोऊ कहैं अलीरी कालिहि वे निशि मांझ पराने ॥ ११ ॥
कोऊ कहैं सुनौरी सजनी हैं दुहुँ बंधु अहेरी ।
खेलनगये भटू काननमें आवत हैहैं येरी ॥
कोऊ कहैं अली टुक टेरौ हैं किहि ओर चलीजे ।
कोऊ कहैं सखी चुप साधौ इतही आवन दीजे ॥ १२ ॥
कोऊ विरह अधीर विकल है टेरन लगीं सुवामा ।

हाय प्राणप्यारे अब आवो किते गये घनश्यामा ॥
कोऊ कहैं लेत कह प्रीतम हमरी प्रेम परीक्षा ।
हैं सब विकल वियोग तिहारे आय करौ कछु शिक्षा ॥ १३ ॥
हे लाडिले सुजान छबीले अब टुक मुख दरशाजा ।
विरह ज्वाल ते जरत सबै तन नेह सुधा बरसाजा ॥
तो बिन हे दिलदार पियारे निकसैं प्राण हमारे ।
हिये दया कछु लाय जिवाले हे प्रीतम इत आरे ॥ १४ ॥
कहाँ दुरेहौ जाय बिपिनमें बोलौ मीत बटोही ।
कल्प समान पलक बीतत हैं श्याम मोहिं बिनतोही ॥
पहिले मारि नैन बाणन ते सब घायल करि डारी ।
प्रीत लगाय हाय अब प्यारे काहे सुरति बिसारी ॥ १५ ॥
राजकुमार सुजान जानि कै हम तुमसे हित कीनो ।
ऐसे निपट अजानकढे जू मोहिं अधिक दुख दीनो ।
या विधि बिकल बाम सब विरहिनि विरह भरी बिललाहीं ।
धाय धाय इत उत जिततिनसों बूझत हैं सब पाहीं ॥ १६ ॥
तरु गिरि महि सरिता खग मृगको जड चेतन नाहिं सूझें ।
निज प्रीतमकी खबर दीन ह्वै धाय सबहिंसों बूझें ॥
कहैं अधीन बचन करजोरें अब जनि कोउ दुरावो ॥
प्यारे प्राणअधार सांवरे हैं कित मोहिं बतावो ॥ १७ ॥

कलित छंद ।

हे अशोक तुम शोक हरौ सबहीके । क्यों न मिलावो मोहन जीवन जीके ॥ हे कदंब बलि अब विलंब जनि लावो ॥ राजकुँवर रघुवरकों हमहिं बतावो ॥ १८ ॥ हे रसाल कहुलाल कहूँ इत हे रे । पहुँचावो जू वेगि हमैं उन नेरे ॥ हे पीपर तुमहीं पर दया जुलावो ॥ सुंदरश्याम सजनको रूप दिखावो ॥ १९ ॥ हे पाकर अब इती कृपा कर देही । कहाँ बतादे मोकहँ श्याम सनेही ॥ हे तमाल रघुलाल कहूं तुम पाये । कहो किते मुहि तजिकै रहे दुराये ॥ २० ॥ हे वट तुम तजि कपट बचन टुक बोलौ । भये

अचल यों काहे रंच न डोलौ ॥ तुमहूसे कहि गये कछू मम प्यारे। रहे रैनि दिन तो ढिग मीत हमारे ॥ २१ ॥ हे अनार कचनार यार निरमोही । कहां बतादे छैल निहोरौं तोही ॥ हे पलाश तुम आश पुजावो मोरी । कहां दिखावो लाल कहों कर जोरी ॥ २२ ॥ हे चंदन रघुनंदन रूप दिखावो । विरह ताप मो उरकी सकल सिरावो ॥ हे कदली कस बदली बुद्धि तुमारी॥ कहां बतावो श्याम लेति बालिहारी ॥२३॥ हे अवनी दुख दवनी हौ सबही की । कहौ लाल कित हरौ व्यथा मोजीकी ॥ हे मग तुम पग चिह्न बतावो मोही । गये कहां ह्वै सुंदर छैल बटोही ॥ २४ ॥ हे समीर बलि वीर पीर हरमेरी । कितै गये रघुवीर धीर मुहिं देरी ॥ धाय लाल ढिग जाय मोहिं सुधि लादे । उन हूं को या विरहिनि दशा सुनादे॥२५॥ हे सरिता तपहरिता तुमहु कहावो।जरत हृदय यह मेरो क्यों नसिरावो॥ हे सरोज प्रीतमको खोज बतावो।कहाँ दुरे मनमोहन वेगि दिखावो२६ अहो मीन जलहीन दशा तुव जैसी ॥ श्याम सुघर बिन तलफतहैं हम तैसी ॥ हाय न कोउ सहाय आय हो जावै ॥ विरह अगिन मो हियकी विषम बुझावै ॥ २७ ॥ अहो भौंर बहु ठौर सदा तुम डोलौ । लखे होय कहुँलाल वेगि तौ बोलो॥ वेऊ कपटी छैल तुम-हिसे कारे । प्रीतलाय हरि लैगे प्राण हमारे ॥ २८ ॥ हे खंजन मन रंजन नैन तिहारे । हम जानी कहुँ निरखे हैं तुम प्यारे ॥ हे मैना वरबैना क्यों न सुनावो । गये पथिक किहि ओर जु मोहिं बतावो ॥ ॥ २९ ॥ हे शुक तुम टुक बोलौ मधुरी बानी । कहूं निहारे रघुवर रूप गुमानी ॥ अरे काग बलिभाग तोहिं बलि दैहौं । मोकहँ सगुन बताव श्याम कब पैहौं ॥३०॥ हे हरिनी मन हरिनी आंख तिहारी । नृप लालनकी तुम कहुँ छटा निहारी॥ हेदिशि किहि दिशि गये साँवरे प्यारे । कहौ लाल बिन तलफत प्राण हमारे ॥ ३१ ॥ हे गिरिहौ अति ऊंचे फिरि चहुँ हेरौ । लखौ लाल कित जात,वेगि किन टेरौ॥ अहो मोर अति ऊंचे शोर मचावो । विरहकलपना मेरी सकल सुनावो ॥ ३२ ॥ अरे पपीहा तू प्रीतम ढिग जारे । दीन बचन कहि

पीउ पीउ रट लारे ॥ हूक उठै सुनि कूक कोकिला तेरी । नेक मौन गहु हाय न मुहि दुख देरी ॥ ३३ ॥ अरे चंद मतिमंद, अंग क्यों जारे । पंचबाण उर बाण, हाय क्यों मारे॥ अरी रैनि दुखदैनि, सिरात न काहे । अरे विरह मो सकल अंग कसदाहे ॥ ३४ ॥ अलबल बोलैं विकल, विरहिनी वामा । तिनहि कछू न सुहाय, विना घन-श्यामा ॥ सुधि बुधि भूलगई हैं सब, तन मनकी । घर पुरकी नहिं सुरति, भई बन बनकी ॥ ३५ ॥ कोऊ कहूँ विहाल, बैठ पछताती । कोऊ करि करि हाय, धुनैं शिर छाती ॥ भई बावरी कोऊ, इत उत दौरैं । कोऊ विहबल गिरिं, परी क्षिति छौरैं ॥ ३६ ॥ कोऊ तिया तियाको, भुज गहि लेही । कहै चले कित तजिकै, श्याम सनेही ॥ बोलैं कोऊ गहि, तमाल अकुलाई । आउ आउरी, हम पाये रघुराई ॥ ॥३७॥ काहूके शिरकेश खुले न सम्हारैं । काहू तनतें वसन गिरे नहिं धारैं ॥ काहूके पट फटे, कंटकन माहीं । काहू परे छगैंट कछू सुधि नाहीं ॥ ३८ ॥ हाय हाय कहि, कोउ उसासन लेहीं । कोऊ काहुहि कछू न उत्तर देहीं ॥ भई बावरी रघुवर, विरह वधूटी । लोक लाज कुलरीति नीति सब छूटी ॥ ३९ ॥ कोउ कहैं सखि हाय कहाे कित जैये । कोउ कहैं यह काको विरह सुनैयै ॥ कोऊ कहैं सखी उन विन धृग ज़ीनो । कोऊ कहैं विधाता यह दुख दीनो ॥ ४० ॥ कोऊ कहैं सखी सो निठुर महाहै । कोऊ कहैं अली उहि दोष कहाहै ॥ कोऊ कहैं मुहि हाय संग नहिं राखी । कोऊ कहैं कछु चलतहुँ मीत न भाखी ॥ ४१ ॥ कोऊ कहैं हे योगिनि भस्म रमैये । सब मिलि श्यामहि हेरन जित तित जैये ॥ कोऊ कहैं सखीरी हम तन देहैं । मनमोहनके ढिगहीं प्राण पठैहैं ॥ ४२ ॥ कोऊ कहैं अली हम अब लखि पावैं । तौ छिनहू भरि नैननते न दुरावैं ॥ कोउ कहैं सखि होनीहुती भईसो ॥कोऊ कहैं करी, जासि दई दई सो ॥ ४३ ॥ कोऊ कहैं अलि कारो कठिन महाहै । कोऊ कहैं तापसकी प्रीत कहाहै ॥ कोऊ कहैं कपटी जस, मुहिं दुख दीनो । सोऊ तस फल पैहै अपनोकीनो ॥ ४४॥ कोऊ कहैं सखी सांवलिया भोरो ॥

ताके संग महा छलिया है गोरो॥कोऊ कहैं अली सो नारि सयानी । हम सबको लखि लै निज पियहि परानी ॥ ४५ ॥ कहैं वचन सब जाके जिय जो आवैं । रघुनंदनके विरह विकल बिललावैं । ताहीं मग ह्वै एक पथिक तहँ आयो । तिहि विलोकि सब वनितन अति सुखपायो ॥ ४६ ॥ घेरि लयो तिहि धाय जाय सब नारी । चकित भयो सो तिनकी दशा निहारी ॥ कहै पथिक तुम को हौ कौन कहांकी । कछू न बोलैं वाम, श्याम मद छाकी ॥ ४७ ॥ बैठि गयो इक तरु तर आय बटोही । घेरि रहीं चहुँ फेर वाम सब वोही । बूझतिहैं मिलि खबर मीतकी तासों । कहन चहैं कछु कछू कढै रसनासों ॥ ४८ ॥ कहौ पथिक तुम साँचे बैन सुखारे ॥ कहूं निहारे हमरे प्राण पियारे । श्याम गौर द्वै बंधु सुभग धनुधारी । है तिनके सँग एक मनोहरनारी॥४९॥कीने तापस भेष तिहूँ वनचारी ॥ कहौ बटोही तुम कहुँ छटा निहारी । लछमन नाम सु गौर राम हैं श्यामा । सीता नाम ललाम वाम गुणधामा ॥ ५० ॥ अविलोके तुम होय कहूं तौ बोलौ । रंच न राखौ हृदय गांठ बलि खौलौ ॥ पथिक तिहारे पायँ परैं करजोरी ॥ कहौ श्याम सुधि निरखि दीनता मोरी ॥ ५१ ॥ भई बावरी सिगरी विरहिनि बाला । कहैं पथिक कित मिले तुमैं रघुलाला॥कहो कछू हम सबसों श्याम सँदेशो । पाई खबर न मोजिय, अधिक अँदेशो ॥ ५२ ॥ कहौ कहा कहि भेजो वह निरमोही । कैपाती लिखि दई बतावो मोही ॥ कै हम सबको भेद लेन, तुम आये । राजकुवँर छल करिकै सिखै पठाये ॥ ५३ ॥ बारबार तुव पाय, पथिक हम परहीं ॥ हाथ जोरि शिरनाय विनय बहु करहीं ॥ वा निरमोहीकी, कछु खबर सुनावो ॥ तिहि बिन तलफत प्राण, सुहाय बचावो ॥ ५४ ॥ येकै तिया बटोहीसों कर जोरैं । एकै तिहि निज शीश नवाय निहोरैं ॥ एकै कर झझकोरि कहैं कछुतेही । बूझैं इक गुलचाय कहौं कित नेही॥५५॥

एकै बूझें बात, बलैया लैकै । एकै विनवैं ताहि, चिबुक कर दैकै ॥ एकै कहैं अली यह बौरो नर है । याको निज तन मनकी कछु न खबर है ॥ ५६ ॥ एकै कहैं भटू इन श्याम निहारे । डोलत वन वन तन मन सुधि सकलबिसारे ॥ जौ इन छबि न लखी होती लालनकी । सुरति न जाती तौ याके तनमनकी ॥५७॥ एकै कहैं अली यह उनढिग जैहैं । विरह दशा या सबकी, सकल सुनैहैं ॥ एकै कहैं कछू तौ बोल कसाई । तोहि हमें कछु रंचहु दया न आई ॥ ५८ ॥ एकै कहैं पथिक प्रीतम ढिग जैयो । हम दिशिते पग परि परि विनय सुनैयो ॥ कहियो तुम बिन तलफत हैं सब वामा । तिनहि जाय सुखदेहु बेगि घनश्यामा ॥ ५९ ॥ एक बेर फिरि आय वदन दर शावैं । कहियो फिरि जित भावै, जिय तित जावैं ॥ कहियो जब ते नैन बान तुम मारे । तबते निशिदिन तलफत प्राण विचारे ॥ ६० ॥ कहियो लालन जो न वेगि तुम जैहौ । तो मरि हैं सब विरहिनि जियतन पैहौ ॥ कहियो आय सु प्राणदान दै जावैं । नाहीं तौ निज करते जिय लै जावैं ॥ ६१ ॥ कहत वचन विरहिनी नेहमदछाकी । सही जात नहिं पीर वियोग व्यथाकी ॥ अहो पथिक उन पास जाय फिरि आवो । कहा कहो मनमोहन मोहि सुनावो ॥ ६२ ॥ कोऊ लैकर कंकन पथिकहि देहीं । कोऊ निज मुद्रिका देति हैं तेहीं ॥ कोऊ तिय भुजबंद देयँ अतिनीको । देनलगी हैं चंद्रहार वरहीको ॥ ६३ ॥ कोऊ बेसर कोऊ कुंडल देहीं । शीशफूल मंजरि देय उठिकेहीं ॥ करनफूल नथ झूमक कोउ उतारैं । चंपकली वर माल कोऊकर धारैं॥६४॥पथिकनहीं कछु लेय देयँ बर जोरी । पांय परैं तिय विनय करैं कर जोरी ॥ कहै पथिक तुम वेगि श्याम सुधि लावो । एक बेर रघुवर सो हमहि मिलावो ६५॥ तिनकी प्रीति निहारि पथिक हरषानो । वंदि चरण निज जन्म सफल करिमानो ॥ धन्य वाम ये जिनै प्रीति अतिसाँची । लाज त्यागि रघुराज रंगमें राची ॥ ६६ ॥ तिनहिं धीरदै पथिक कही

मृदुवानी । धीर धरौ निज हियमें परम सयानी ॥ यौं जनिहोहु अधीर विरहिनी वामा । तुमहिं मिलैंगे वेगि राम अभिरामा ॥ ६७॥ धर्म धुरंधर राम विषयरसरूखे । रहत भक्त आधीन प्रीतिके भूखे॥ तुम उनते नाहिं दूर नवे तुमसे हैं । दुहूँ निकट हौ दोऊ दुहूँ हिये हैं ॥ ६८ ॥ रैनि दिवस ज्यों तुम सब उनहिं रटौहो । तिय सिगरी त्यों तिनकेहिये बसौहो ॥ वेसबहीके जीकी जाननवारे । दूर करैंगे सकल कलेश तिहारे ॥ ६९ ॥ पथिक धीरदै सबही विधि समुझाई। विरह आगिनि कछु कहि रस बैन सिराई ॥ कहैं वियोगिनि बाल बटोही प्यारे । और श्यामकी चरचा फेरि चलारे ॥ ७० ॥ फेरि विरहिनी विकल भई अकुलानी । हाय लाल कहि टेरन लगीं सुवानी ॥ विरह विवश तिन सुधि बुधि पुनि बिसराई । उठो बटोही ताछिन औसर पाई ॥ ७१ ॥ तिन चरणनकी रज निज नैन लगाई । चलत भयो कछु मिसतै डीठ बचाई ॥ चलो जात मग पथिक नैन भरिलावै । करि करि तिनकी सुरति हिये हुलसावै ॥ ७२ ॥ इतै विरहिनी वाम अधिक अकुलानी । हाय बटोही गयो कहैं बिलखानी ॥ धाय धाय चहुँ ओर जाय तिहि हेरैं । कोऊ कहुँ न दिखाय वैसहीं टेरैं ॥ ७३ ॥ कहैं पथिक कित गयो नेक इत आरे । मेरो कछु संदेशो तौ लेजारे ॥ इहि विधि करति विलाप विकल सब नारी । बढ़ी पीर उत लागी विरह कटारी ॥ ७४ ॥ ताही छिन चहुँ ओर घेर घन आये । बरसन लागो नीर अधिक क्षिति छाये ॥ झोका देत समीर दामिनी कोंधै । जाकी चमक निहारि नैन चकचोंधै ॥ ७५ ॥ नटत मोर वंन पक्षिन शोर मचायो । सुनि विरहिनि हिय दूनो विरह बढ़ायो ॥ नीर बुंद जो परैं तियनके तनमें । रंचक हू न लखाय सुछनकैं छिनमें ॥ ॥ ७६ ॥ देखतहीं घनश्याम विरहिनी बाला । रोय उठीं अति भई विरह बेहाला ॥ काहू कह्यो भटू जैसे घनकारे । तैसही मनमोहन अपने प्यारे ॥ ७७ ॥ कोऊ विरहिनि कहैं मेघ इत आरे । तो लखि सीतल होत सुनैन हमारे ॥ वेऊहैं घनश्याम

तुमौं घनश्यामा । दोउनको है एक रूप गुण नामा ॥ ७८ ॥ कोउ कहैं घन इतै नहीं तुम छावो । जितै होय मनमोहन तितै सिधावो ॥ उनही के ढिग जाय घेरि झरि लैयो । यह दुख हमरो श्यामहि सकल सुनैयो ॥ ७९ ॥ नेह विरह वश ग्राम वधू कर-जोरैं । शीश नाय ह्वै दीन जु सबहि निहोरैं ॥ कानन योग नहैं सुकुमार पियारे । ते वन वन यौं डोलैं पाँय उघारे ॥ ८० ॥ तुम सबही मिलि प्रीतमको सुख दीजो ॥ जड चेतन निज जन्म सफल कर लीजो ॥ अहो मेघ तहँ कीजो छाँह सदाहीं । सुंदर श्याम सलोने जहँ जहँ जाहीं ॥ ८१ ॥ अहो पवन नित त्रिविध लाल हित ढरियो । होन न पावै सकल स्वेद श्रम हरियो ॥ अहो चंद्र रघुचंद अनंद करीजो । अहो रैन प्रीतमहिं चैन बहु दीजो ॥ ८२ ॥ अहो भूमि तुम तहाँ मृदुल अति होऊ । जहां जाहिं सिय सहित बंधु वर दोऊ ॥ अहो पंथ लघु सुगम स्वच्छ शुचि रहियो । राजकुँवरको मोद सहित निरवहियो ॥ ८३ ॥ रघुवरके हित हेतु अहो तरु बेली । फूलौ फलौ सबै ऋतु समय सकेली ॥ अहो भानु तुम उनके कुलपति हौजू । राजकुँवर सुख हेतहि सीत गहौजू ८४॥ सब पसारि निज अंचल विधिहि मनावैं ॥ जहां रहैं रसिकेश तहाँ सुखपावैं ॥ देव पुजैयो वेगहि आश हमारी । बहुरि विलोकैं नयनन भरि धनुभारी ॥ ८५ ॥

इति श्री० रा०र० व० वि०ग्रामवधूविलाप वर्णनो नाम तृतीयो विभागः॥ ३॥

दोवई छंद ।

सब रघुवर छबि छकीं छबीली तन मनकी सुधि भूली ।
राजकुँवर घनश्याम सुघर बिन विरह शूल हिय हूली ॥
सकल दिवस निशि बन विलपतहीं रहीं नवेली बाला ।
घर पुरजन अकुलात सोच वश खोजत फिरत विहाला ॥१॥
दूजे दिवस विपिनमें पाईं तिनकी दशा निहारी ॥
भये विकल गुरजन पुर परिजन बढ़ो सोच उरभारी ॥

कहौ कहा बूझैं यह तिनसों कछू न उत्तर देहीं ।
लै उसाँस उर ससकि सबै तिय नैननन जल भरि लेहीं ॥ २॥
काहू तन हेरैं नहिं काहुहि, कछू सु भेद बतावैं ।
लैहिलकी तिय शीश नाय कहि हाय श्याम रहिजावैं ॥
तिन सब बनितनको निज निज गृह लाये करि वरियाईं ।
सुनि चरचा जित तितते धाये देखन लोग लुगाईं ॥ ३ ॥
तिनकी दशा विहाल विलोकत पुर परिजन अकुलाने ।
जाय जाय जिहिं तिहिं सब टेरैं फिरत बिकल विललाने॥
कोऊ गुणी मयूर पक्ष कुश लै पढि मंत्रन झारैं ।
कोऊ दोऊकर जोरि मनावत विधि यह व्याधि उबारैं ॥ ४ ॥
कोऊ कहैं इनैं कछु लागो कोऊ कहैं डरी हैं ।
कोऊ कहैं कोऊ इन ऊपर दृढ करतूत करी हैं ॥
कोऊ कहै व्यथा है बाढी कोऊ कहैं रिसानी ।
कोऊ कहैं भई ये बौरी कहै सु जो मन मानी ॥ ५ ॥
यंत्र मंत्र अरु टोटका किये अनेक उतारे ।
काहूको कछु फुरो न एकहु अमित जतन करिहारे ॥
सबै थकित ह्वैरहे मौन गहि रंच उपाय लगीना ।
चकी जकीसी रहीं सकल तिय नेकौ पीर भगीना ॥ ६ ॥
यदपि रहैं गृह माहिं तदपि पै दिनहीं दिन मुरझाहीं ।
देह गेह मधि वसै इतै उत प्राण प्राण पति पाहीं ॥
सबहि शृंगार भोग सुख त्यागो रहति सदा मन मारी ।
श्याम नाम निशिदिन उर सुमिरैं अवधि आश उर धारी ॥ ७ ॥

बरवा छंद ।

ग्रामवधू सब हिलि मिलि पनिघट जाहिँ ॥ श्याम सुरति उर करि करि अति विलखाहिँ ॥ ८ ॥ बोलति विकल वियोगिनि दीन अधीन ॥ वृथा जियब अब सजनी श्याम विहीन ॥ ९ ॥ हम न आज लग जानी बिछुरन पीर ॥ अब पहिचानी, मोहन बिछुरे वीर ॥ १० ॥ कोऊ कहैं सखीरी कछु न बसाय ॥ मारि मारि मन

रहिये करि करि हाय ॥ ११ ॥ वह मधुरी रस बोलनि कसकत हीय ॥ वा तिरछी रस हेरनि पैठी जीय ॥ १२ ॥ कबहूँ फिरि अब ऐहैं इहि मग लाल ॥ हमहिं बहुरि दरशैहैं वदन विसाल ॥१३॥ सो दिन धौं कब होइहि अति अभिराम ॥ जादिन प्रीतम हेरैं फिरि सब वाम ॥ १४ ॥ दई देवता कित धौं गये पराय ॥ सबै मनाये कोउ न होत सहाय ॥ १५ ॥ श्याम मिलनकी धरि धरि जियमें आस॥ करत सदा हम सजनी जप उपवास ॥ १६ ॥ हम उन लागि परनवां अरपन कीन ॥ सो अस निठुर पियरवा सुधिहु न लीन१७॥ लिखि न पठाई पतियौ एकौ मीत ॥ का राखिहि निरदैया साँची प्रीत ॥ १८ ॥ सजनी नेह निबाहब सहज न होय ॥ प्रीत रहै बरु जियरा जावै खोय ॥ १९ ॥ सखी इकंगी नेहवा दुख बहु आय ॥ दिवला माहिँ पतँगवाकर जिय जाय ॥ २० ॥ करि करि श्याम सुरतिया हम दिन रैन ॥ रोय रोय मन मारैं छिनहुँ न चैन ॥ २१ ॥ कोऊ खबरि सुनाइहि आसि फिरि हाय ॥ आये मीत पियरवा देखहु जाय॥२२॥सजनी कस सुधि होइहि उनहि हमारि॥राजकुँवर वे हमहैं नारि गँवारि ॥ २३ ॥ कोऊ कहैं सखीरी मुहि दिन रैन ॥ झझक उठै हिय धरकत परै न चैन ॥ २४ ॥ रहे जहाँ मोहन तहँ जाय न जाय ॥ सजनी सो वट छहियाँ धरि धरि खाय ॥ २५ ॥ लगत मशान भवनवाँ परिजन भूत ॥ रिपु समान दरशावैं पितु पति पूत ॥ ॥२६ ॥ जबसे श्याम सजनवाँ बिछुरे हाय ॥ तबसे आपनि देहिया मुहि न सुहाय ॥ २७ ॥ बिछुरत प्रीतम छातिया फाटि न मोरि ॥ अब छिन छिनहिं करेजवा उठत मरोरि ॥ २८ ॥ बूड़ि मरै वरु हेली समुद मँझार ॥ विरह कलेश न डारै कहुँ करतार ॥ २९ ॥ लाय भसम वरु देहिया बसै पहार ॥ प्रीतम के बिछुरनिया होय न पार ॥ ॥ ३० ॥ दुख चाहै सो विधिना दे भरपूर ॥ पै अँखियन ते मितवहि करै न दूर ॥ ३१ ॥ प्रीतम साथ सहेली वनहुँ सुहाय ॥ न बिन सून सदनवां विपिन लखाय ॥ ३२ ॥ बोली एक सुनौरी सपना मोर ॥ लखे आज जनु आये राजकिशोर ॥ ३३ ॥

बोली इक कुवना पर बैठो काग ॥ कहु साँची यह देहौं तुहि बलि-भाग ॥ ३४ ॥ काग कनकके पिंजरा राखौं तोहि ॥ जुपै सगुन यह साँचो तेरो होहि ॥ ३५ ॥ जस हमारहैं जियरा उन महँ लाग ॥ तस मित ऊकर ह्वैहै कहुरे काग ॥ ३६ ॥ कोऊ कहैं सखि बूझिय गणक बुलाय ॥ किते दिवस महँ ऐहैं अब रघुराय ॥ ३७ ॥ वामनैन द्वै-दिनसे फरकत मोर ॥ आय काग शुभ बोलिया बोलत भोर ॥ ३८ ॥ सखिरी नीक सगुनवाँ अब नित होहि ॥ जानि परै अस प्रीतम मि लिहैं मोहि ॥ ३९ ॥ इहि विधि निशि दिन सब तिय सुमिरहिं श्याम ॥ अवधि आश मग निरखैं सिगरी वाम ॥ ४० ॥

प्र० ॥ तुलसीकृत रामायणे अयोध्याकांडे।

चौ०—सीता लषण सहित रघुराई ❀ ग्रामनिकट जब निसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृह काज बिसारी ॥
नारि सनेह विकल सब होहीं ❀ चकई सांझ समै जनु छोहीं ॥ १ ॥

इत्यादि।

इति श्री० रा० र० वि० वि० ग्रामवधूस्नेहकथन-
वर्णनो नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोहा—उत इहि विधि मगवासिनी, हिय सुमिरैं नित श्याम ॥
छिन छिन तिनकी प्रीति इत, सदा सराहत राम ॥ १ ॥
सिया लषण रघुवर मुदित, पहुँचे जाय प्रयाग ॥
मज्जन करि बहु मुनिनतें, मिले सहित अनुराग ॥ २ ॥
भरद्वाज ऋषि दरशलहि, भये परम आनंद ॥
तहँ तें चलि न्हाये तिहूँ, कालिंदी सुखकंद ॥ ३ ॥
दोऊ बंधु पुनीत मृग, लाये खेलि अहेर ॥
विधि कृत्य युत अशन करि, चलै मुदित तिहुँफेर ॥ ४ ॥

प्र० वाल्मीकीय अयोध्याकांडे सर्ग ॥ ५५ ॥ श्लोक।

क्रोशमात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥
बहून्मेध्यान्मृगान्हत्वा चेरतुर्यमुनावने ॥ १ ॥

दोहा—वाल्मीकि आश्रम निरखि, लहो परम आनंद ॥
आय शीश नायो मुनिहि, सिया लषण रघुचंद ॥ ५ ॥

वाल्मीकि लखि मुदित है, तिहुँ शुभ आशिष दीन ॥
यथा उचित सत्कार बहु, प्रीत सहित मुनि कीन ॥ ६ ॥
पुनि कर जोरि निहारिकै, मुनिसन बूझी राम ॥
नाथ रजायसु दीजिये, वास करौं किहि ठाम ॥ ७ ॥
वाल्मीकि मुनि मुदित है, बोले मंजुल बैन ॥
राम तिहारे वासु हित, अमित अनूपम ऐन ॥ ८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मनमें मुनीनके कवीनके सुबैननमें नेहिनके नैननमें प्रानमें पुरारीके। अवधनिवासिनके मिथिलाविलासिनके परम उपासिनके सत्यव्रत धारीके॥ज्ञानी गुणवंतनके सज्जन अनंतनके साँचे शुचि संतनके परउपकारीके। राम अभिराम सीता लषण समेत सदा, हृदय निवास करौ रसिकविहारीके ॥ ९ ॥ सकल सुपास पास वास मुनि मंडलीको लायक विलास थलदायक हुलासको। कंद मूल सरस अतूल फल फूल मृग सरिता विशाल गिरि बिपिन विकासको ॥ रसिकविहारी सो निहारी छबि भारी ताहि भावैना अनूप रूप अमर निवासको। चित्रकूट विशद विचित्र है पवित्र तहां ठाम अभिराम राम रावरे निवासको ॥ १० ॥

चौ॰ सुनि वरबैन मुनिहि शिरनाई ❀ चले बंधु सिय युत रघुराई ॥
आये चित्रकूट छबि हेरी ❀ मुदित फिरे गिरिवर चहुँ फेरी ११
पुनिद्वै परणकुटी वर भारी ❀ लषण लाल निज हाथ सवारी ॥
सो लखि राम कही हुलसाई ❀ शाल प्रतिष्ठा उचित सदाई १२
सो सुनि लषण कृष्ण मृगलाई ❀ विधि युत पल साकल्य बनाई ॥
तब रघुवर जपि मंत्र प्रमाना ❀ कीनो हवन समेत विधाना १३

प्र॰ । वा॰ । अ॰ कां॰ स॰ ५६ ॥ श्लो॰ ।

ऐणेयमांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम् । कर्तव्यं वास्तुशमनं सौमित्रे चिरजीविभिः ॥ २ ॥ भ्रातुर्वचनमाज्ञाय लक्ष्मणः परवीरहा । चकार च यथोक्तं हि तं रामः पुनरब्रवीत् ॥ ३॥ अयं सर्वसमस्तांगः श्रितः कृष्णमृगो मया। देवता देवसंकाश यजस्व कुशलो ह्यसि ॥ ॥ ४ ॥ बभूव च मनोह्लादो रामस्यामिततेजसः । वैश्वदेवबलिं कृत्वा रौद्रं वैष्णवमेव च ॥ ५ ॥ इत्यादि ।

चौ० इमि विधियुत करि शालप्रतिष्ठा ❀ दशरथसुत रघुवर धरमिष्ठा ॥
येक कुटी मधि सिय रघुबीरा ❀ इकमहँ रहे लषण रणधीरा १४॥
राम आगमन सुनि सब धाये ❀ मुनि मुनितिय लखि हिय हुलसाये
इहिविधि चित्रकूट मधिरामा ❀ कियो वास लखि थल अभिरामा १५
सेवा करैं लषण चित लाई ❀ सुखी परस्पर प्रीति सदाई॥
वसे राम लछमन वन जबते ❀ निर्भय भये देव मुनि तबते १६॥

दोहा–चित्रकूटवासी सकल, जेते जड़ चैतन्य।
तिन सराहि सुर कहत हैं, धन्य धन्य ये धन्य ॥ १७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूटनिवास
वर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दो०–चित्रकूट उत राम सिय, लखि सब भये निहाल।
इत कौशलपुर शोक वश, विलपत सकल विहाल॥ १ ॥
अवधनिवासी नारि नर, निशिदिन करत विलाप।
राम लषण सियके विरह, सबके उर संताप ॥ २ ॥
कहत परस्पर वैन सब, विरह विवश बहु दीन।
हाय लषण सिय राम हम, काहे संग न लीन ॥ ३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सोचत हिये में सबै रसिकविहारी यहै काननमें येते दिन कैसे वे बिताय हैं। संग सुकुमारी तिय देखि मृगराजको अतिही सशंक ह्वै के जिय बिलखाय हैं॥ कंटक समेत बाट चलि हैं उघारे पाँय ताहू पै विरस कंद मूल फल खायहैं। जो सुमन सेज पै रहत दिन रैनिहुते तेई सिय राम अब साथरी बिछायहैं ॥ ४ ॥

दोहा–इहि विधि कोशल नगरमें, छायो चहुँ संताप॥
जड चैतन सब करत अति, राम विहीन विलाप ॥ ५ ॥
अवधनगर चहुँ ओर महि, लगत भयावन घोर॥
जित तित विलपत नारि नर, हाय राम करि शोर ॥ ६ ॥
लाज शोक वश सचिव पुर, आये रैनि निहारि॥
धाये चहुँ दिशि ते विकल, रथ विलोकि नर नारि ॥ ७ ॥

लखि स्यंदन सूनो सबै, गिरैं धरणि करि हाय ॥
सचिव वेगि नृप सदनमें, जाय गहे प्रभु पाँय ॥ ८ ॥
दशरथ निरखि सुमंतको अतिही उठे उताल ॥
बूझे गदगद कंठ कित, सिया लषण रघुलाल ॥ ९ ॥
सुनि सुमंत बहु विकल ह्वै, कहे बैन बिलपाय ॥
लषण सीय संयुत वनहिं, गये राय रघुराय ॥ १० ॥
निज विनती उत्तर तिहूँ, गुह मिलि उतरन गंग ॥
सकल यथारथ समय सम, वरणो सचिव प्रसंग ॥ ११ ॥
राम लषण सिय वन गमन, जब दृढ सुनो नरेश ॥
गिरे भूमि मूर्छित विकल, बाढो विपुल कलेश ॥ १२ ॥

चौ०-हाय राम सिय लषण पुकारी ❀ रुदन करत नृप आरत भारी ॥
सुनि कौशला आदि बहु रानी ❀ धाय आय पति पद लपटानी १३
ताछिन प्रेम विवश महि पाला ❀ कहे कौशलहि वचन विहाला ॥
दीनी तापस अंध जु शापा ❀ सोफल मोहिं सत्य अब व्यापा १४॥
हौं अहेरहित रैनि मझारी ❀ सरयू तीर हुतो पदचारी ॥
ताछिन इक तापस सुत आयो ❀ कुंभ नीर पूरण चित लायो १५॥
जल पूरत घट शब्द सुनो मैं ❀ करि केहरि ध्रुव हीय गुनो मैं ॥
शब्द वेध करि शर तिहि मारा ❀ गिरो धरणि सो विकल पुकारा १६॥
मानुष गिरा सुनत हौं धायो ❀ जाय निकट गहि वेगि उठायो॥
लखि तापस सुत वचन उचारा ❀ बिन अपराध मोहिं किमि मारा १७
मो पितु मातु दुहूँ दृगहीना ❀ बसत सदा कानन तप लीना॥
तिन हित नीर भरन मैं आयो ❀ वृथा नृपति मो प्राण नशायो १८॥
तब हौं कहे वचन अति दीना ❀ विन जाने यह पातक कीना ॥
यौं कहि तिहि तनुते शर काढो ❀ तजो प्राण सो दुख लहि गाढ़ो १९
हौं तिहि निरखि महादुख छायो ❀ लै पूरित घट वेगि सिधायो ॥
जाय नीर धरि सब गति वरनी ❀ सुनतहिं गिरे रुदित दुहुँ धरनी२०

दोवई छंद ।

पुनि दुहुँ विलपत कही मोहिं द्रुत लैचल सुतके पासा ।
हौं तिन कंध राखि तहँ लायो अतिहीं दुखित हिराशा ॥

दुहुँ पितुमातु पुत्र कर परसो वरदै शुभ गति कीनी।
पुनि रचि चिता बैठि तिहि ऊपर घोर शाप मुहि दीनी॥२१॥
कही दुहू ज्यौं हम तनु त्यागैं पुत्र दुखित इहि काला।
त्यौंहीं सुत वियोग वश तेरों मरन होय महिपाला॥
दै इमि शाप दुहू तनु जारो देवलोक सो पायो।
भई सिद्धि सो शाप राम बिन मृत्युसमैं अब आयो॥२२॥

प्र० ॥ वा० ॥ अ० का० ॥ स० ॥ ६४ ॥ श्लोक।

पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम साम्प्रतम्॥
एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि॥ १ ॥ इत्यादि॥

चौ०-यौं कहि भूपति अति अकुलाई ❀ बोले दीन नेह उरछाई॥
राम मात मम उर कर धारो ❀ लखि न परत मुहि वदन निहारो॥२३॥
अंतसमै अब मो मुख देखो ❀ हाय न मैं टुक तुव मुख पेखो॥
रघुवर दरश हेतु सब रानी ❀ तनु रखियो मम आयसुमानी॥२४॥
यौं कहि नृपति विकल ह्वै भारी ❀ हाय राम सिय लषण पुकारी॥
रुदन करत आरत खघोरा ❀ आये धाय सकल सुनि शोरा॥२५॥
गुरु द्विज सचिव विविध पुरवासी ❀ सेवक सखा दासअरु दासी॥
सब निजमति अनुसार बुझाई ❀ कहि सुगाथ बहु धीर धराई॥२६॥
अवध नाथ कछु उतर न देहीं ❀ हाय राम कहि हिलकिन लेहीं॥
लखि नरेशगति विलपति रानी ❀ यौंहीं निशि द्वैयाम विहानी॥२७॥
ताछिन दशरथ नृप अकुलाई ❀ उठे विकल चितवत चहुँधाई॥
नैननते रंचहु कछु सूझै ❀ विह्वल बिलपि बिलपिबहु बूझै॥२८॥
कहाँ राम लछमन वैदेही ❀ हाय कहाँ सुत परम सनेही॥
यौं कहि धरणी गिरे विहाला ❀ प्राण कंठगत भये नृपाला॥ २९॥

दोहा—हाय प्राणप्यारे सुवन, हा मम प्राण अधार॥
पुत्र वधू हा लाडिली, हाय लषण सुकुमार॥ ३०॥
कहाँ लषण सीता कहाँ, कहाँ राम रघुचंद॥
यौं कहि दशरथ तन तजो, लहो परम आनंद॥ ३१॥

चौ०–भूपति मरन देखि सब रानी ❀ घोर शोर करि अति बिलपानी॥
गारी सकल कैकयिहि देही ❀ कहैं लियो जिय पापिनी येही ३२
सकल नारि नर करत पुकारा ❀ रुदन छयो चहुँ नगर मँझारा॥
यौं बिलपत सब रैनि सिरानी ❀ समुझायो बहु गुरु वरज्ञानी॥३३॥
नृप तनु हेत जतन करि भारी ❀ सो धरि राखो तेल मँझारी॥
पुनि वसिष्ठ वर दूत बुलाये ❀ जाहु भरत ढिग वेगि सिखाये ३४॥
जनि भरतहि कछु हालसुनैयो ❀ मम आज्ञा कहि वेगहि लैयो॥
यौं सिख दै द्रुत दूत पठाये ❀ अति उताल सो चरबर धाये ३५
उते रैनिमधि होत सवारो ❀ स्वप्न अशुभ अति भरत निहारो॥
उठि नृप सुवन सोच बहु कीनो ❀ भूरि दान विधि संयुत दीनो॥३६॥
ताछिन दूत भरत ढिग आये ❀ दै पत्री गुरु बचन सुनाये॥
सुनि दुहुँ बंधु अधिक अकुलाई ❀ चले वेगि मिलि बिदा कराई ३७॥
आये अवध लगो भयकारी ❀ निरखि बंधु दुहुँ भये दुखारी॥
वेगि जाय जननी पग लागे ❀ बूझे राम पितहि अनुरागे॥ ३८॥
कैकेयी सुत अंक लगाई ❀ निज करणी सब मुदित सुनाई॥
सुनत भरत रिपुहन दुहुँ भाई ❀ गिरे भूमि मूर्छित बिलपाई॥ ३९॥

दोहा–हा कुमात हा मात वर, हाय भ्रात हा तात॥
बहु विलाप करि बंधु दुहुँ, सोक विकल बिललात॥ ४०॥

चौ०–यौं बिलपत दुहुँ राजकुमारा ❀ कहि कुमात कटु वचन अपारा॥
ताही छिन सो परी दिखाई ❀ किये शृंगार चित्त हरषाई॥ ४१॥

वनाक्षरी–कवित्त।

दासी कैकयी की मति नासी मंथरा जो ताहि शत्रुहन देखी भई रंचहू नदूबरी। धाय वर जोरी केश धरि झकझोरी गहि रसना मरोरी कहि दीनी सीख खूबरी॥ फारे त्यों कपोल दंतझारे दलिडारे अंग भाषै रोष धारे मातु मंत्री तु अजूबरी। कूबर सुटूटो शीश फूटो पै न प्राण छूटो ऐसी मारिलातन लथोरी डारी कूबरी॥ ४२॥

दोहा–करत हाय बिललाय सो, प्राण कंठगत आय॥
तिय अवध्य लखि भरत तिहि, दीनी वेगि छुडाय॥ ४३॥

तहँ ते बिलपत बंधु दुहुँ, राम मात ढिग जाय ॥
धाय गहे पद कौशला, निरखि लिये उर लाय ॥ ४४ ॥
जननी सुत दुहुँ परस्पर, प्रेम शोक वश होय ॥
करत बिलाप बिहाल बहु, धीरज धरे न कोय ॥ ४५ ॥
सकल मातु तब सुतनको, समुझाये हिय लाय ॥
कछुक धीर धरि कै भरत, कही सत्य सकुचाय ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

गाय द्विजमारे तिय बालक सँहारे गुरु स्वामी अपचारे, झूठ वचन उचारेते। माता सुता भगिनी कुदृष्टितें निहारे मित्र दोह उर धारे शरणागत निकारेते ॥ सत्य प्रण टारे निज धरम निवारे निंदा पिशुन प्रचारे परनारी धन हारेते। होवै पाप भारे मोहिं लागै मातु सारे राम बनहि सिधारे जोपै संमत हमारे ते ॥ ४७ ॥

चौ०-सुनत शपथ जननी हिय लाये ❀ कहि मृदु वचन भरत समुझाये
पुनि करि सौंह कौशलाबोली ❀ मुहि प्रतीति तुव मति नाहिं डोली४८
भरत आगमन सुनि सब धाये ❀ गुरु मंत्री पुर परिजन आये ॥
दुहुँ बंधुन बहु बिधि समुझाये ❀ भूप क्रिया हित साज सजाये४९
पुर पूरव सरयू तट जाई ❀ मृत्युक्रिया सब करी तहाँई ॥
सब कृत हित प्राचीन सुठामा ❀ जहँ शिवधाम बिल्व हरि नामा ५०
उचित कर्म पुनि सहित बिधाना ❀ कीने भरत अमित विधि नाना॥
भये पुनीत वेद कुल माने ❀ तब ज्ञातीन सकल सनमाने५१॥

दोहा–लोक वेद कुल रीतिमय, जिमि गुरु आयसुदीन ॥
भरत उदार सप्रीति तिमि, तात कर्म सब कीन ॥ ५२ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० राजादशरथदेहत्याग-
वर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा–नृपति कर्म ते सुचित लखि, सब मिलि कियो विचार ॥
राजतिलक अब भरतको, कीजे समय निहार ॥ १ ॥

चौ०गुणि गुरु सचिव सुजन बहु आये ❀ सभामाहिँ दुहुँ बंधु बुलाये॥
कहि सब कथा सकल अभिलाषी ❀ राजतिलक हित भरतहि भाषी २

सुनि वर वचन भरत शिर नाई ❀ गुरुहि जोरि कर बिनय सुनाई॥
मो रुचि यह प्रभु सहित समाजा ❀ चलौं राम दरशनके काजा ॥३॥
पद परि निज अपराध क्षमाई ❀ सिया सहित आनौं दुहुँ भाई ॥
पुनि रघुवरहि तिलक प्रभु कीजे ❀ वेगि नाथ यह आयसुदीजे॥४॥
पुनि इक औरहु मो रुचि नाथा ❀ तिलक साज लीजे सब साथा॥
ह्वै अभिषेक उतहिं पुनि आवैं ❀ सहित राज श्री बहु छबि छावैं५॥
भरत वचन सुनि सब हुलसाने ❀ धन्य धन्य करि अमितबखाने॥
प्रमुदित ह्वै गुरु आयसुदीनी ❀ तिलकसौजसारी संग लीनी॥६॥

दोहा—देश कोश गृह धर्मको, उचित प्रबंध सुठान॥
बहुरि चित्रकूट हि भरत, कीनो वेगि पयान ॥ ७ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, गुरु मंत्री सब मात ॥
भरत संग गवने सकल, चित्रकूट कहँ जात ॥ ८ ॥

चौ०-नृपसुत सदल गंग तट आये ❀ सुनि गुहसैन साजि उठिधाये ॥
जानो भरत राजमदछाये ❀ समर करन हित वेगि सिधाये९॥
आय निषाद भरत गति देखी ❀ हृदय भयो आनंद विशेखी ॥
करि सतकार उतारे पारा ❀ चलो संगलै सुभट अपारा१०॥
पहुँचे भरत प्रयाग नहाये ❀ पुनि मुनि भरद्वाज ढिग आये॥
उचित प्रणाम ऋषिहि सब कीने ❀ मिले परस्पर आदर दीने ॥११
पुनि मुनि करी सकल पहुनाई ❀ सो अनूप अति वरणि न जाई॥
एक भरत बिन सब नरनारी ❀ ऋषिसतकार लहो सुख भारी१२
प्रात होत मुनिपद शिरनाई ❀ चले भरत रिपुहन दुहुँ भाई ॥
अवध विहाय उठे जब हीते ❀ नृप सुत राम रटत तबहीते १३
मारग बिन पदत्रान सिधावे ❀ सोलखि गुरु जननी समुझावै॥
तिन रजाय बश बैठे स्यंदन ❀ चलि कछु पुनि उतरैं नृपनंदन१४
कबहूँ राम विरह संतापा ❀ बैठि पंथ बहु करत विलापा ॥
कबहुँ भूमि परि करहि प्रणामा ❀ टेरत कबहुँ हाय सियरामा १५
कंद मूल फल करहिं अहारा ❀ भरत त्यागि दीनो सुखसारा ॥
मलिन वसन तनु छीन दुखारी ❀ सो लखिबिकल सकल नरनारी१६

भरत प्रीति निरखी सुरराई ❀ बोले गुरुहि हृदय अकुलाई ॥
जो रघुवर फिरि अवध सिधारे ❀ बनेकाज पुनि बिगरें सारे॥१७॥
सुनि गुरु कही सोच जनि करहू ❀ राम प्रतीत प्रीति उर धरहू ॥
जो रघुवर भरोस दृढ राखैं ❀ तिनकी सब पूजैं अभिलाषैं१८॥
सुनि गुरु बचन अमर हरषाने ❀ देवराज आनंद अघाने ॥
इत आतुर अति भरत सिधाये ❀ वेगहि चित्रकूट नियराये १९॥
ताही निशि सिय स्वप्ननिहारो ❀ आयो अवधनगर जनु सारो॥
दुहुँ नृपतनय सकल महरानी ❀ देखी मलिन शोक दुखसानी२०
उठि अकुलाय कहो सब रामैं ❀ सुनि दुहुँ बंधु भये करुणामैं ॥
पुनि रघुवर उताल नितकर्मा ❀ किय सिय बंधु सहित निजधर्मा२१
ताछिन गगन धूरि बहु छाई ❀ लखि बंधुहिं बोले रघुराई ॥
तरु चढि लछमन वेगि निहारौ ❀ कहा हेतु सो समुझि उचारौ२२
देखी लषण शाल चढि जानी ❀ पहिचानी सब अवध निसानी॥
धाये भरत लरन अनुमाने ❀ आय लषण द्रुत गहिधनुबाने २३
रामहि कही रोष हिय लाई ❀ आवत भरत साथ कटकाई ॥
सुनि रघुनाथ बंधु समुझाये ❀ भरत शील गुण सकल सुनाये२४
तौ लग बहु वनचर नर आये ❀ रामहि भरत चरित्र सुनाये ॥
बंधु आगमन सुनी रघुबीरा ❀ हर्ष शोकबश धरैं न धीरा॥२५॥
उत लखि चित्रकूट अभिरामा ❀ भरत भूमि परि कियो प्रणामा॥
परण कुटी दूरहि ते देखी ❀ छाई हृदय गलानि विशेखी२६
समय निहारि धीर उरधारी ❀ चले बेगि दुहुँ बंधु दुखारी ॥
आये परण कुटी ढिग धाये ❀ निरखि रामपद परि बिलपाये२७
उठि रघुबीर बंधु दुहुँ भेटे ❀ कहि वर बचन सोच बहु मेटे ॥
पुनिनृपसुतकियसियहि प्रणामा ❀ मिले लषण धनु शरकर वामा२८
तौ लग सकल लोग तहँ आये ❀ निरखि राम लोचन जलछाये॥
दुहूँ बंधु गुरु सिय पद परसे ❀ सचिवसखा सेवक हित सरसे२९

दोहा—यथा उचित सन्मानि सब, राम लषण अरु सीय ॥
सकल महारानीनके, चरण गहे लगि हीय ॥ ३० ॥

मातु सुमित्रा कौशला, बिलपति करि करि प्यार ॥
राम लषण सियको हृदय, लाय लाय बहु बार ॥ ३१ ॥
यौं सिय रघुवर लषण मिलि, हरषो सकल समाज ॥
पिता कुशल बूझी गुरुहि, द्रुत सप्रेम रघुराज ॥ ३२ ॥
सुनि वसिष्ठ जल नैन भरि, बोले हिय बिलपाय ॥
तुव वियोग तजि अवध नृप, बसे देवपुर जाय ॥ ३३ ॥
राम लषण सिय गुरु बचन, सुनत गिरे मुरझाय ॥
हाय तात हा नाथ कहि, रुदन करत अकुलाय ॥ ३४ ॥
सचिव सखा गुरु मात तिहुँ, समुझाये कहि बैन ॥
आये तट मंदाकिनी, न्हाय भरे जल नैन ॥ ३५ ॥

चौ०-अपर क्रिया विधिवत सब कीनी ❀ मौनरहे रघुबर दिन तीनी ॥
चौथे दिवस जुरे सब आई ❀ बोले गुरुहि राम सकुचाई ॥ ३६ ॥
कृपासिंधु बन सकल दुखारी ❀ जिते अवधवासी नर नारी ॥
याते भरत सहित लै साथा ❀ कौशलपुर पधारिये नाथा ॥ ३७ ॥
सुनि गुरु कही श्रमित सब लोगा ❀ पुनि व्याकुल तुव दुसह बियोगा
याते कछु दिन रहि रघुराई ❀ फिरि सुहोय जो दैव रजाई ॥ ३८ ॥
इहि विधि चित्रकूट सब रहहीं ❀ रामहि लखि आनँद अति लहहीं ॥
सर सरिता गिरि बन चहुँ फेरैं ❀ राम चरण अंकित थल हेरैं ३९
चित्रकूट मिथिलाधिप आये ❀ मिले परस्पर बहु सुख छाये ॥
सिय लखि हरष शोक अधिकाई ❀ पितु जननी गहि हृदय लगाई ४०
मिथिला अवध प्रजा नर नारी ❀ जुरे भई चहुँ भीर सुभारी ॥
चित्रकूट महँ बहु दिन बीते ❀ रहत सकल सानंद सप्रीते ॥ ४१ ॥
सचिव सखा गुरु सकल समाजा ❀ पुरपरिजन मिथिला महराजा ॥
युत मर्याद दुहूँ रनिवासा ❀ बैठी सभा विशद चहुँ पासा ॥ ४२ ॥
तब वसिष्ठ बोले मृदुबानी ❀ नीति सुधर्म सनै अनुमानी ॥
सुर नर तुव आज्ञा अभिलाषी ❀ राम चहिय सबकी रुचि राखी ४३ ॥
तुम पितु वचन मानि वन आये ❀ अब नृप भरत लिवावन आये ॥
याते करहु सुकाज बिचारी ❀ जिहि सुर नर सब होहिं सुखारी ४४

सुनि वर बचन राम कर जोरे ❀ गुरु पद पंकज वंदि निहोरे ॥
रहै मोर जिमि धर्म दयाला ❀ सोई सबहि उचित इहिकाला४५

दोहा—सुनि रघुवर बाणी कही, भरत जोरि दुहुँ हाथ ॥
है अधर्म मम माथ सब, अवध सिधारिय नाथ ॥ ४६ ॥
पुनि कर जोरि निहोरि कै, कहौं विनै यह मोरि ॥
प्रभु दिशि ते वन जाउँ मैं, चलिये अवध बहोरि ॥ ४७ ॥
यैही विनती बिविधविधि, करी भरत दुहुँ भाय ॥
सचिव सखा नृप मातु सब, अमित कही समुझाय ॥ ४८॥
राम सकोची धर्म धर, सोच विवश तिहिकाल ॥
दियो न उत्तर काहु कछु, तब गुरु कही कृपाल ॥ ४९ ॥
सुनहु राम नृप भरत सब, रहे जाहि बिधि धर्म ॥
निज हठ स्वारथ लाज ताजि, याछिन उचित सुकर्म॥५०॥
सुनि कौशिककै बचन वर, बोले रघुकुल चंद ॥
कहौं शपथ करिकै वचन, सुनौ सकल सानंद ॥ ५१ ॥
धर्म नीति ज्ञाता इतै, मिथिला अवध समाज ॥
चित्रकूट शुचि पुण्यथल, जुरी सभासद आज ॥ ५२ ॥
गुरु द्विज मंत्री मातु नृप, भरत एक मत होय ॥
जो कछु भाषैं सकल मिलि, सत्य करौं मैं सोय ॥ ५३ ॥
राम शपथ सुनि देव सब, अकुलाने बहु हीय ॥
सबहि मनाये मनहिमन, प्रेरि शारदा जीय॥ ५४ ॥
रहे मौन ह्वै सकल तब, करि हिय धर्म बिचार ।
बोले भरत प्रवीन पुनि, वचन समै अनुसार ॥ ५५ ॥
अवधराज मुहि पित दियो, मैं निज दिशिते देत ॥
यामें कछू अधर्म नहिं, सोऊ नाथ न लेत ॥ ५६ ॥
अब हौं किमि धीरज धरौं, तुव वियोग रघुराय ॥
होवै जिमि अवलंब मुहिँ, सो प्रभु देहु रजाय ॥ ५७ ॥
तब प्रमुदित ह्वै राम निज, चरणपादुका दीन ॥
करि प्रणाम सो प्रीति युत, भरत शीश धरि लीन ॥ ५८ ॥

सबहि उचित मिलि प्रेम युत, सिया लषण रघुवीर ॥
बिदा किये समुझाय पुनि, हिय धराय बहु धीर ॥५९॥
भरत कही जो अवधिते, येकहु दिन अधिकान ॥
प्रण करि भाषौं शपथ युत, तौ न राखि हौं प्रान ॥ ६० ॥
मधु सित दशमी पुष्य गुरु, दिन अभिजित मध्यान ॥
सिया लषण युत अवधते, कीनो नाथ पयान ॥ ६१ ॥

प्र० वा० अ० कां० स० ३ श्लोक ।

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः ॥
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ॥ १ ॥

तत्रैव पुनः स० ॥ ४ ॥

श्वएव पुष्यो भविता सोभिषेच्यस्तु मे सुतः ॥
रामो राजीवपत्राक्षो युवराज इति प्रभुः ॥ २ ॥

पुनः सुन्दररामायणे अयोध्याकांडे ।

मधुशुक्लदशम्यां च मध्याह्ने गुरुवासरे ॥
मेषांशौ द्वौ गते भानौ रामो गच्छति काननम् ॥३॥ इत्यादि.

दोहा—तादिन बीते अंश जे, मेष भानुके जान ॥
हौं गनिलैहौं वर्ष मनु, ध्रुव संक्रांति प्रमान ॥ ६२ ॥
राम कहो तब जिहि दिवस, चौदह वर्ष करार ॥
पूजै तिहिदिन देखियो, ध्रुव मुहि अवध मझार ॥ ६३ ॥
भ्रात वचन दृढ सुनि भरत, चले अवध शिरनाय ॥
दुहुँ समाज संयुत सकल, पुर परिजन समुदाय ॥ ६४ ॥
चित्रकूट महिमा अमित, भरत सराहत जात ॥
रघुवर पद अंकित सुथल, ध्यावत हिय हुलसात ॥ ॥ ६५॥
हर्ष शोक बश नारि नर, छिन सुख छिन दुख पाय ॥
जनक भरत संयुत सकल, पहुँचे अवधहि आय ॥ ६६ ॥
कछुक दूरि पुर बाहिरे, नंदिग्राम अभिराम ॥
वरविचार करि भरत तहँ, रहे निरखि शुचिठाम ॥ ६७ ॥
रामपादुका शुभ समय, सिंहासन पधराय ॥
भरत कियो मुनि भेष निज, सब सुख साज विहाय ॥ ६८ ॥

द्वादश दिन तितही रहो, मिथिला अवध समाज ॥
पुनि बहु गुरुहि अभार दै, गये जनक महराज ॥ ६९ ॥
जौ लग रहे बिदेह नृप, रानी सहित प्रबीन ॥
तौ लग कमलानीर तजि, अशन पान नहिं कीन ॥ ७० ॥
पुर परिजन इत अवधमें, लियो सत्यव्रत ठान ॥
राम दरश बिन भोग सुख, सकल तजे दुखमान ॥ ७१ ॥
भरत महल रनिवास सब, भेजो रिपुहन संग ॥
गुरु सचिवहि सौंपे उचित, काज बखानि प्रसंग ॥ ७२ ॥
यथायोग इहिविधि भरत, कीनी सकल सम्हार ॥
राम पाँवरी निकट सब, राजसाज अधिकार ॥ ७३ ॥
पूजत भरत सुपादुका, करत निवेदित काम ॥
फल अहार मुनि बेषनित, निशिदिन सुमिरत राम ॥ ७४ ॥
देश कोश सेवक प्रजा, न्याय धर्म सब काज ॥
सुनत गुनत निरखत सदा, भरत सुपालत राज ॥ ७५ ॥
महि मंडल चहुँ ओर सब, प्रमुदित प्रजा सुकाल ॥
नीत धर्म लखि कहत जन, जै जै अवध भुवाल ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दूजो गुरु ज्ञाताना वसिष्ठ वामदेव ऐसो सचिव सुमंत सम स्वामि सुखदाताना ॥ दशरथ राज सो न ताता दृढ प्रीति वारो रामसो सुपुत्र है जहान धर्म त्राताना ॥ कौशला सुमित्रासी न माता है विवेकी पुनि सीतासी सुतीय कहूँ पति अनुराताना ॥ रसिकविहारी नेहकारी नीतिधारी सत्य काहू ठौर भरत समान और भ्राताना ॥ ७७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० राम भरत संवाद-
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा—राम राम नित रटत उत, भरत वरणि गुणग्राम ॥
भरत भरत सुमिरत भरत, छिन छिन दृग इत राम ॥ १ ॥

चौ०-चित्रकूट सिय लषण समेता ❀ बसैं राम मुद परण निकेता ॥
गिरि कानन सर सरित निहारी ❀ विहरत सिय युत अवध विहारी२
कबहूँ सुमन लाय रघुराई ❀ भूषण वसन बिचित्र बनाई ॥
निज करते प्यारिहि पहिरावैं ❀ छबिनिहारि आनंद बढावैं ॥ ३ ॥
कबहूं फटिक शिला पर राजैं ❀ अंगराग करि सियतन साजैं ॥
विविधरंग मृदुरज शुचि आनी ❀ सारैं तिलक प्रिया रुचि जानी॥४॥
कबहूं सिय पंकज मृदु लाई ❀ सेज रचैं वर बिशद सुहाई ॥
तापर प्राण पतिहि बैठारैं ❀ निज अंचलते पवन सुढारैं ॥ ५ ॥
कबहुँ क्रीट कुंडल धनुबाना ❀ विरचैं सिय प्रसूनमय नाना ॥
निज करते प्रीतमहि सुधारीं ❀ करि करि प्यार लेहिं बलिहारी ॥६॥
कबहुँ लषण कलिका मृदु लावैं ❀ नूपुर अनुपम रुचिर बनावैं ॥
सो स्वामिनि चरणन पहिरावैं ❀ निरखि राम आनंद अघावैं ॥ ७ ॥
कबहुँ सुमनदल लछमन लाला ❀ रचैं पादुका विमल बिशाला ॥
रघुवर पदसनेह युत धारैं ❀ कबहुँ प्रसून बिजन सजि ढारैं ॥ ८॥
लषणहि दंपति युत अहलादा ❀ देहिं सुभूषण वसन प्रसादा ॥
इहि विधि तिहुँ अपार सुख लहहीं ❀ प्रीति परस्पर प्रमुदित रहहीं॥९॥
कबहुँ राम ढिग मुनिगण आवैं ❀ कबहुँ सुतिनके निकट सिधावैं ॥
कबहूं ऋषितियजुरि सियपाहीं ❀ पति रुचि लखिनिजसंग लैजाहीं१०
कबहुँक वनवासी नर नारी ❀ लै फल मधु मग सौंज सुधारी ॥
आवैं राम सीय पग परहीं ❀ दै सुभेट विनती वर करहीं ॥ ११ ॥
इहि विधि लषण सीय रघुचंदा ❀ चित्रकूट वसि करत अनंदा ॥
जिमि २अवधिवेषचलिजाहीं ❀ तिमि २ दैवअधिक अकुलाहीं॥१२॥
एक समै सुरपति सुत आयो ❀ नाम जयंत कागतनु लायो ॥
सिय उर हति निज तुंड परानो ❀ रघुवर कपट भेष पहिचानो॥१३॥
सिय हिय रुधिर देखि रघुवीरा ❀ तापर तजो कुपित तृणतीरा ॥
भागि तिहुँपुर सुगयो सब पासा ❀ कहुँ न बचो तब होय निरासा१४॥
राम चरण परि शरण पुकारो ❀ तब दयालु तिहि प्राण निबारो॥
इकदृग विन करि वायस त्यागो ❀ भागो पितु गृह विकल अभागो१५

एक समै विधि इंद्र विचारी ❀ रावण वध सुधि राम बिसारी ॥
याते चलि कछु युक्ति रचाई ❀ बेगहि चाहिय सुरति कराई १६
यों बिचारि दुहुँ शिव ढिग जाई ❀ निज उरकी अभिलाष सुनाई ॥
सुनि बोले शंकर वर ज्ञानी ❀ वृथा दोउ भ्रम वश यह ठानी॥ १७॥
राम वेगि दशमुख वध करिहैं ❀ भूमि भार सुर दुख सब हरिहैं ॥
कछु न शंक मानौ मन माहीं ❀ छल करि जाउ न रघुवर पाहीं १८
सो सुरपति विधि मन नहिं भाई ❀ चले दुहूँ मुनि वेष बनाई ॥
वेगहि चित्रकूट ढिग आये ❀ तहँके चरित विलोकि सकाये १९
देखे अमित भालु कपि ठाढे ❀ गहे युद्ध हित गिरि तरु गाढे ॥
पुनि हेरे तहँ विपुल दशानन ❀ परे भूमि वेधे तनु पान्नन ॥ २० ॥
सो विलोकि दुहुँ लंक सिधारे ❀ देखो दशमुख बैठ अखारे ॥
तहँ ते चकित चित्त पुनि आये ❀ चित्रकूट सो चरित लखाये २१॥
तब सशंक ह्वै गये सुधामा ❀ बहु विधि इंद्र लखे तिहि ठामा ॥
दोऊ भवन जान नहिं पाये ❀ पुनि ह्वै विकल शंभु ढिग आये २२
कही सकल गति अति अकुलाई ❀ सुनि पुरारितिन धीर धराई॥
पुनि तिहुँ राघव निकट सिधारे ❀ सो चरित्र नहिं कछू निहारे २३
आये देव देखि रघुनाथा ❀ उठे मिले प्रमुदित गहि हाथा ॥
बैठारे करि बहु सतकारा ❀ तब कीनी सुर विनय अपारा ॥२४॥
सुनि बोले रघुवर हरषाई ❀ जाहु भवन निर्भय हुलसाई ॥
वेगि करों अब निश्चर नासा ❀ राखो सत्य मोर विश्वासा ॥ २५ ॥
राम वचन सुनि सुर हरषाये ❀ मिले उचित तिहुँ सदन सिधाये॥
विधि वासव लखि चरित अपारा ❀ पायो भेद न अमित विचारा २६
इहि विधि द्वादश वर्ष बिताये ❀ चित्रकूट नित नव सुख छाये ॥
पुनि रघुवर वर इच्छाचारी ❀ तहँ ते गमन हेतु चितधारी २७ ॥

प्र० ॥ अग्निवेश्यरामायणे ॥ श्लोक ।

रामः पंचदशे वर्षे षड्वर्षामपि मैथिलीम् ॥ उपयेमे त्वयोध्यायां द्वादशाब्दानुवाससः ॥ १ ॥ सप्तविंशतिमे वर्षे वनवासमकल्पयत् ॥ अष्टादश तु वर्षाणि सीतायास्तु तदा भवन् ॥ २ ॥ त्रिरात्रमुदका

हारश्चतुर्थेह्नि फलाशनः ॥ पंचमे चित्रकूटे तु रामो वासमकारयत ॥ ३ ॥ अथ त्रयोदशे वर्षे पंचवट्यां महामना। रामो विरूपयामास घोरां शूर्पणखां वने ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-राम चलत सुनि मुनि गण आये ❀ मिले यथोचित प्रेम बढाये ॥
ऋषिपत्नी सियनिकट सिधारीं ❀ सादर शीश नाय बैठारीं ॥२८॥
मुनि तिय कही सियहि हुलसाई ❀ धन्य जानकी पिय सुखदाई ॥
धन्य पतिव्रत धर्म सदाहीं ❀ जिहि विधि हरि हर सकल डराहीं२९॥
अनसुइयापतिव्रतबलपाई ❀ कह त्रिदेव गति प्रगट दिखाई ॥
सिय बूझी सो बात लजाई ❀ ऋषि तिय कही कछू मुसक्याई३०

दोवई छंद।

एक समै मिलि उमा रमा अरु धात्री तीनहुँ नारी।
लखि रहस्य सुर गंगतीर थल भूषण वसन उतारी ॥
मज्जन करत हुतीं तहँ प्रमुदित ताछिन नारद आये।
तिनहिं बिलोकि लजाय अधिक तिहुँ तिय निज अंग छिपाये३१ ॥
सो बिलोकि मुनि रिस करि बोले क्यों तुम मोहि न जानी ॥
भई चहतिहौ जनु अनसुइया सम पतिव्रता जानी ॥
यौं कहि गमन कियो ऋषि तहँ ते पुनि यौं तिहुँ ठहराई।
पतिव्रत भंग अत्रि तियको जिमि होय सु रचिय उपाई ॥ ३२ ॥
करि विचार निज निज गृह गवनीं तिहूँ मान बहु ठानो।
विधि हरिहरहि रोष तियको लखि सकल अनंद भुलानो ॥
अमित वार बूझी तब बोलीं और कछू नहिं भाषैं।
अनसुइयाको पतिव्रत खंडै तौ हम निज तनु राखैं ॥३३ ॥
तिहूँ नारि निज निज पति सों इमि वचन कहे बिलखाई।
रमा उमा ब्रह्मानी बहु विधि हरि हर विधि समुझाई ॥
नहिं मानी तब देव सोच वश इक इक पास सिधारे।
काहू गति कोऊ नहिं जानै चले जतन निरधारे ॥ ३४ ॥
भई भेट तिहुँ बीच पंथमें तिहुँ सशोक तिहुँ देखे।
चकित कछू कहि सके न काहू वदन परस्पर पेखे ॥

पुनि धरि धीर तिहूँ तिहुँ बूझी तिहूँ तिहूँ प्रति बरनी ॥
तिहूँ हीय भो दुखी और सुनि तिहूँ ठौर इक करनी ॥ ३५ ॥
तिहूँ देव ह्वै विवश मंत्र करि यही बात ठहराई।
पतिव्रत भंग कीजिये तियको कछु छलछंद बनाई ॥
यौं विचारि निज निज गृह वेगै जाय सुधीर धराई।
चले उताल बहुरि तिहि मारग मिले बीच पुनि आई ॥ ३६ ॥
तहां विष्णु विधि शंभु मनुजह्वै आतिथि भेष तिहुँ धारे ॥
सिकताकन लैलये कमंडलु गये अत्रिके द्वारे ॥
ताछिन मुनि नाहिं रहे भवनमें अनसुइया लखि आई ॥
करि प्रणाम लैजाय सबन फल धेरे सामुहें लाई ॥३७॥
सो लखि सकल अतिथि यों बोले और न अशन कराहीं ॥
ये हम सिक्ताकन लै आये पक्क होय तौ खांहीं ॥
पैजिहि विधि भाषैं ताही विधि करौ सुभोजन करिहैं ॥
नतरु क्षुधित तिहुँ अत्रि भवनतें निज निज मारग धरिहैं ॥ ३८ ॥
अत्रितिया सुनि वचन मुनिनके भई सोचवश भारी ॥
पक्क होय किहि विधि सिक्ताकन इन नहिं बात बिचारी ॥
अतिथि क्षुधित जो जाँय द्वारते तो गृहधर्म नशावै।
इहि विधि कराहिं अनेक जलपना हिय न कछू ठहरावै ॥ ३९ ॥
पुनि पतिव्रता नारि विचारी जुपै धर्म हौं साँची।
तौपै पक्क होइगी सिकता रंचरहैं नाहिं काची।
ह्वै प्रमुदित बोली अनसुइया अतिथि कहा कन दीजे।
जिहि विधि कहौ पक्क करि आनो रुचिमय भोजन कीजे ॥ ४० ॥
सुनि तिहुँ कही अनल जलबिन कन करमें पक्क बनावो।
बहुरि नग्न ह्वै निलज हाथ निज भोजन हमैं करावो ॥
तब बोली सो अतिथि न भाषौ महा असंभवबानी।
तव सुकर्म, मम धर्म रहै जिमि देहु रजायसुज्ञानी ॥ ४१ ॥
पुनि सो तजि तिन और न भाषी तब निज हीय विचारी।
अतिथि नहीं ये छली कोउ हैं यों गुनिकै मुनि नारी।

पति पद सुमिरि ध्यान शुचि कीनो सकल चरित दरशाये।
जानी विधि हरि शंभु पतिव्रत भंगकरन मम आये॥ ४२॥
तब सुधर्मचारी वर नारी सकल शीश कर फेरे।
भये अयान बालवपु तीनौ लै सुपालने गेरे॥
पुनि ह्वै नग्न लिये कन अंजुलि अनसुइया यों बोली॥
पक्व होय तो यह सिक्ता जौ हों पतिधर्म नडोली॥ ४३॥
कहतहिं भये पक्व सिक्ताकन मृदु शुचि शुभ्र सुहाये।
सो निज करते तिहूँ शिशुन मुख दै भोजन करवाये॥
पुनि पट धारि झुलावन लागी ताछिन मुनि गृह आये।
लखि बूझी बालक ये किहिके तिय सब चरित सुनाये॥ ४४॥
मगन भये ऋषि देवचरित लखि मनहीं मन मुसक्याने॥
योहीं शंभु विरंचि विष्णुको वासर सात सिराने।
उमा विधात्री रमा उतै तिहुँ सोच विवश अकुलानी।
पुनि नारद कैलास पधारे त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी॥ ४५॥
बोले हँसि मुनीश गिरिजासें लखौ देवतिहुँ जाई॥
पतिव्रता अनसुइया निजगृह राखे बाल बनाई॥
सुनि ह्वै बिकल शिवा उठिधाई धात्रिहि सुगति सुनाई॥
दोऊ तिय अकुलाय कही सब सिंधुसुता ढिग आई॥ ४६॥
सोच सकोच विवस तिहुँ वनिता ह्वै जिय निपट हिरासा॥
भूर गरूर दूरधरि गमनी अत्रितियाके पासा॥
आय लजाय धाय ऋषितियके पाँय परीं अकुलाई॥
अनसुइया करि प्यार वधू सम गहि निज हृदय लगाई॥ ४७॥
पुनि तिहुँ बालन शीश धरोकर लहे शुद्ध निजरूपा॥
विदाकिये सबही तिय संयुत कहि वर वचन अनूपा॥
निज निज धाम गये हरि हर विधि कहैं परस्पर माहीं॥
कोऊ अनसुइयासम तिहुँ पुर वर पतिव्रता नाहीं॥ ४८॥

दोहा—इहिविधि अनसुइया कथा, ऋषितिय सियहि सुनाय।
मिली परस्पर प्रेमभरि, गई गेह सुखपाय॥ ४९॥

मुनि अनसुइया दरश की, सियहि भई अति चाह ॥
प्रातपयान विचारि उर, छिन छिन होत उछाह ॥ ६० ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूट चरित्र
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा-प्रात होत सिय लषण युत, चित्रकूटते राम ॥
आये परमानंद चलि, अत्रिमुनीके धाम ॥ १ ॥
धाय गहे तिहुँ मुनि चरण, ऋषि उठि अंक लगाय ॥
यथा उचित सतकार युत, विनयकरी सतभाय ॥ २ ॥
बहुरि राम सिय लषण तिहुँ, धरि ऋषितिय पद माथ ॥
कही मात तुव दरश लहि, अब हम भये सनाथ ॥ ३ ॥
अनसुइया उठि तिहुन को, उर लगाययुत प्रेम ॥
आशिषदीनी विशद शुभ, संततरहै सुक्षेम ॥ ४ ॥

चौ०-पुनि बहु प्रीति सहित ऋषि नारी ❀ लैजानकिहि गोद बैठारी ॥
पट भूषण अमोल शुचि दीने ❀ निजकर सिय तनु भूषित कीने५॥
बहुरि प्यार करि नीति सिखाई ❀ पतिव्रत रीति सकल समुझाई ॥
सोसिख सीय हृदै धरिलीनी ❀ ऋषितिय मुदित सु आशिषदीनी६॥
पुनि तिहुँ अशन अनूप कराई ❀ बिदाकरी निज हृदय लगाई ॥
मुनि मुनि तियहि मुदित शिरनाई ❀ चले सीय संयुत रघुराई ॥ ७ ॥
अपर मुनिनके आश्रम आये ❀ सबलहि राम दरश सुखपाये ॥
ऋषिगण अमित भांति सनमाने ❀ विनती करि निज निज थल आने८
तहँ वसि बहुरि गमन तिहुँ कीनो ❀ मिलो विराध पंथ मदभीनो ॥
सो खल धाय सियहि लै अंका ❀ चलो शोर करि घोर निशंका९॥
तिहि लखि राम लषण अकुलाने ❀ धाय जाय धनु शर संधाने ॥
बाणन मारि बिकल करि डारो ❀ तब विराध किय कोप अपारो१०
लैकर शूल राम पर धावा ❀ दुहूँ बंधु तिहि मारिगिरावा ॥
सोतनु त्यागि शुद्ध वपु पाई ❀ गयो देवपुर विनय सुनाई ११॥
तब दुहुँ बंधु भूमिखनिभारी ❀ गर्ति राखि तिहि देह सुधारी ॥
पुनि ह्वै सजग लषण सिय साथा ❀ चले विपिन निरखत रघुनाथा१२

मुनि शरभंग ज्ञान गुण छाये ❋ रघुवर तिहि आश्रम नगिचाये॥
दूरहिते नभपंथ मझारे ❋ स्यंदन हरित तुरंग निहारे १३॥
गुणी राम मुनि दरशनकाजा ❋ मुदित आज आये सुरराजा॥
इमि विचारि कछु बिलमत रामा ❋ गये गये जब इन्द्र सुधामा १४॥
राम लषण अरु मुनि शरभंगा ❋ मिले परस्पर सहित उमंगा॥
ऋषि तिहुँ उचित सबहि सनमाने ❋ करि बहु विनय अनंद अघाने १५

दोहा—मुनि बोले सियनाथ मैं, जातहुतो सुरधाम॥
तुव आगम सुनि पुनि रहो, अब पूजे सब काम॥ १६॥
यौं कहि ऋषिवर विरचि सर, ताबिच बैठि विशोक॥
योगानल तनु दाहकरि, गये विष्णुके लोक॥ १७॥

चौ०लखि मुनि अपर विनय बहुकीनी। राम भक्ति निज सब कहँ दीनी
तहँते चले हरषि रघुनाथा ❋ ऋषिगण लगे मुदित मन साथा १८
कछुक दूरि चलि रघुवर हेरी ❋ लागी चहूँ अस्थिकी ढेरी॥
करुणाकर बूझी तिन पाहीं ❋ किनके सकल अस्थि ये आहीं १९
सुनि मुनि सबहि नैन भरि नीरा ❋ बोले विह्वल बचन अधीरा॥
ये सब अस्थि ऋषिनके नाथा ❋ दले निशाचर जानि अनाथा २०
सुनि रघुवर नैनन जल छायो ❋ करि प्रण सत्य मुनीन सुनायो॥
अभय होहु धरि मम विश्वासा ❋ करि हौं सकल खलन कर नासा २१
राम सत्य प्रण सुनि मुनि हरषे ❋ ताछिन सुमन देवगण वरषे॥
ऋषिगण निज निज आश्रम आये ❋ विपिन राम सिय लषण सिधाये
राम आगमन सुनत सुतीक्षण ❋ चले धाय आनंद मगनमन॥
तनु पुलकत हुलकत हिय भूरी ❋ गावत हँसत नचत सुखपूरी २३
इहि विधि आय गहे पदधाई ❋ राम लिये तिन अंक लगाई॥
पुनि बहु विनय सुतीक्षण ठानी ❋ तिहुँ पूजे निज आश्रम आनी २४
राम अनन्य उपासक चीना ❋ भक्तितत्त्व निज मुनि कहँ दीना॥
परमानंद सुतीक्षण पाई ❋ बहुरि विनय कर जोरि सुनाई २५
मम गुरु वर कुंभज मुनि नाथा ❋ हौं तिन दरश करौं चलि साथा॥
सुनि लै राम सुतीक्षण संगा ❋ चले चहूँ मन मुदित अभंगा २६

वेगि अगस्त्य आश्रमहिं आये ❀ चारहु मुनि पद शीश नवाये ॥
ऋषि विलोकि रघुवर उर लाये ❀ आसन दे सप्रेम बैठाये ॥ २७॥
तिहुँ आदर करि सहित विधाना ❀ पुनिबहु गुणगण किये बखाना ॥
रामदरशहित बहु मुनि आये ❀ लखि निज सकल सुकृत फल पाये२८

दोहा–पुनि अगस्त्य मुनिसे कही, राम दुहूँ कर जोरि ॥
नाथहि विदित समस्त सो, जो कछु रुचि हैं मोरि ॥ २९ ॥
नाथ रजायसुहोय जहँ, वास करौं तिहि ठाम ॥
जाते सुर मुनि सुखलहैं, सिद्धि होय सब काम ॥ ३० ॥
सुनि कुंभज मुनि विहँसि कै, बोले सहित विचार ॥
ऋषि शापित दंडकविपिन, ताकर करौ उधार ॥ ३१ ॥
विमल सरित गोदावरी, पंचवटी शुभठाम ॥
लषण सीय संयुत तहां, वास कीजिये राम ॥ ३२ ॥
यौं कहि मुनि रघुवीर को, दियो विशद सारंग ॥
खड्ग अनूपम द्वै रुचिर, पत्री सहित निखंग ॥ ३३ ॥
लहि रघुवर प्रमुदित भये, पुनि मुनि पद शिरनाय ॥
चले बंधु सिय सहित वन, मगमें मिले जटाय ॥ ३४ ॥
तिनहि पिता सम पूजि तिहुँ, गोदावरि तट जाय ॥
पंचवटी बिच परण गृह, विरचिरहे रघुराय ॥ ३५ ॥

इति श्री०रा० र० व० वि० मुनिसमागमवर्णनो नाम नवमोविभागः ॥९॥

दोहा–सुभग सरित गोदावरी, विमल नीर गंभीर ॥
परम सुहावन सुखद नित, अतिपावन दुहुँ तीर ॥ १ ॥
मंजु कंज विकसित विविध, गिरि कानन अभिराम ॥
प्रफुलित द्रुमवल्ली अमित, सुथल सदा सुखधाम ॥ २॥
तनु परसत हरसत हियो, सरसत त्रिविध समीर ॥
सुख वरसत दरशत छटा, जहँ निवसत रघुवीर ॥ ३ ॥
मृग विहंग बहु रंगके, कानन करत कलोल ॥
कोकिल कीर मयूर चहुँ, बोलत मधुरे बोल ॥ ४ ॥
कहुँ कदली कहुँ सुमन कहुँ, वृंदा कहुँ तरु वेलि ॥

लाय रची वर वाटिका, सिय निज कर युत केलि ॥ ५ ॥
पंचवटी थल विमल वर, विहरत सीता राम ॥
परम प्रीति संयुत लषण, सेवत हैं वसुयाम ॥ ६ ॥
देव सदाशिव हेत नित, राम करत अभिषेक ॥
सविधि हवन प्रतिदिन सदा, साधत सहित विवेक ॥ ७ ॥

प्र०—वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ १६ ॥ श्लोक ॥

कृताभिषेकः सर राजरामः सीताद्वितीयः सह लक्ष्मणेन ॥
कृत्वाभिषेकस्त्वगराजपुत्र्या रुद्रः सनंदिर्भगवानिवेशः॥इत्यादि.

दोहा—लखि पुनीत मृग बंधु दुहुँ, प्रमुदित करत अहेर ॥
दै आमिष बलि पितर सुर, लेत प्रसाद सुफेर ॥ ८ ॥
कंद मूल फल सरस मधु, मधु मैरेयक शुद्ध ॥
अशन पान सिय लषण युत, रघुवर करत प्रबुद्ध ॥ ९ ॥
पंचवटी कृत वास इमि, सिय सबंधु रघुनंद ॥
वन विहरत निर्भय सकल, संतत परमानंद ॥ १० ॥

दोवईछंद।

एक समय रावणकी भगिनी शूर्पणखा तहँ आई ॥
देखि राम घनश्याम रूपकी शोभा सो ललचाई ॥
रघुवर सों बूझी तुम को हौ इहां कहां ते आये ॥
सुनि सियनाथ सरल चित अपने सबही चरित सुनाये ॥ ११ ॥
तब बोली यह तिया तिहारी क्या गौ निपट कुरूपा ॥
मो सँग करो विहार विपिन नित हो तुम योग सुरूपा ॥
राम कही सुंदर वर गोरो है मम बंधु कुँवारो ॥
सो विन तीय दुखारी तिहि मिलि रहो सुजाय निहारो ॥ १२ ॥
तब आई लछमन छबि देखी ह्वै प्रमुदित यों भाखी ।
रमौ छैल भलि हम तुम जोरी प्रथमहि विधि रचिराखी ॥
लषण कही सुनि सुनौ कामिनी तुम उनहीं ढिग जावो ।
दास पास दासी इत बनिहौ रानी तहाँ कहावो ॥ १३ ॥
तहँते सो रघुवर ढिग गमनी तिन तित फेर पठाई ।
बहुरि लषण भेजी सोरिसकरि धरि कराल वपु आई ॥

बोली अधम तिहारी तियको अबहिं लेति हौं खाई ।
तिहि विलोकि डरि जीय सीय अति लगी पीयहिय धाई ॥१४॥
तब रघुवीर क्रोध भरि अनुजहि नैन सैन कछु कीनी ।
लखि कृपाण लै लषण तासु दुहुँ श्रुति अरु नासा छीनी ॥
कटत नासिका श्रवण निश्चरी भभरि भगी बिललाती ।
गिरी आय खर निकट विकल बहु रोय धुनै शिरछाती ॥ १५ ॥

हीरक छंद ।

ताकी गति हेरि सकल निश्चर अकुलायकै ॥ बूझो सब कारण सो भाषौ विलपायकै ॥ बोलो खर यातुधान वेगै तहँ जावहू । दोउ नर नारी मम सन्निध गहि लावहू ॥ १६ ॥ धाये दश चारि सुभट शूर्पणखा संगमें । आये रघुवीर निकटछाके रणरंगमें॥देखे तिन अच्छन लै तच्छन धनुबानको । ठाढे युतलच्छन सजिरच्छन तनुत्रानको॥१७॥ दूरहिते निश्चरी दिखाये दुहुँवीरको । धाये करि कोप सकल त्यागि तन पीरको॥ धारे बहु शस्त्र ते प्रहारे इकबारहीं ।राघव तिन मारे महिडारे ततकारहीं ॥ १८ ॥ शूर्पणखा हेरि मरन निश्चर बलवानको । लागी भय भूरि भभरि भागी जनथानको॥ बोली खर पास जाय भेजे भट ते मरे । लोटे सब पंचवटी हेरौ चलि भूपरे॥१९॥शूर्पणखा बैन सुनत क्रोधित खरयौं कही॥साजौ सब साज समर देखौं चलिहौं सही॥ दूषण त्रिशिरादि सहस चौदह वर वीर ते । लीने कर शस्त्र अमित भारी रणधीरते ॥ २० ॥ शूर्पणखा अग्रहै अमंगल मुख सर्वते । पाछे खर दूषणादि धाये भट गर्वते ॥ पूरीनभधूरि भूरि हेरी रघुवीर सो । बोले तब लषण लखौ आई खल भीरसो॥२१॥सीतहि लै साथ बंधु धनु शरकर सज्जहू । बैठौ दुरि कंदराहि याछिन थल तज्जहू॥बोले सुनि लषण नाथ ऐसी जनि भाखिये ॥ह्वै है बहु युद्ध अबहिं मोकहँ ढिग राखिये॥२२॥ बोले पुनि राम लषण शंका जनि मानहू ॥ मारौं द्वै दंड माहिं खलदल दृढ़ जानहू ॥ आज्ञावश अनुज लेके सिय संगमें । बैठे दुरि कंदराहि छायो बल अंगमें ॥२३॥ ताही छिन यातुधान आये अति जोरते । धाये दशहू दिशान छाये रवघोरते । रा

म रूप देखतही सैन चकित होगई। निश्चर मन मोहि युद्ध बुद्धि सकल खोगई ॥ २४ ॥ भेजे खर दूत दोय आये ढिग रामके। बोले खल बैन सो सिखाये शठ वामके ॥ तापस तिय सौंपि खरहि वनते द्रुत भागहू। वीरनके हाथन ते काहे तनु त्यागहू ॥ २५ ॥ भाषी सुनि बैन तबहिं रघुवर मुसक्यायकै। सेवें खर शूर्पणखहि नीकी विधि भायकै ॥ वृद्ध औ कुरूप फेरि हीनी श्रुति नासिका। भूलिहू न कोऊ तिहि राखै गृहदासिका ॥ २६ ॥ राघवके बैन सकल दूतन जबहीं कहे। सो सुनि खर दूषणादि क्रोधानलते दहे ॥ बोलो खर वीर न अब दाया कछु धारहू। वेगहि भट जाय पकरि तापसहति डारहू ॥ २७ ॥ धाये सुनि सुभट शक्ति पट्टिश कर चंड लै। भिंडिपाल तोमर असि मुद्गर वर खंड लै ॥ शूल औ त्रिशूल परिघ धारे दृढ भल्ल हैं। दंडही उदंड मंड मंडित बहु मल्लहैं ॥ २८ ॥

अर्द्धावली छंद।

यौं सकल निश्चरन संग खर धायकै। शस्त्रवर्षा करी रामपर आयकै ॥ देखि रघुवीर बहु वीर वर बंडको। कीन टंकोर रव घोर धनु चंडको ॥ २९ ॥ कान लग तान बहु बान वर्षन लगे ॥ विपुल बलवानके प्राण कर्षन लगे ॥ कटत भुज शीश भट अटत अकुलायकै। षटत नहिं नटत पद हटत भय पायकै ॥ ३० ॥ झुंड गजतुंड सह शुंड धरणी परै। रुंड खलमुंड बहु कुंड शोणित भरे ॥ सुदल बल विचल अविलोकि द्रुत धायकै। शक्ति शर समर खर प्रखर किय आयकै ॥ ३१ ॥ राम लखि सुभट वर चाप मंडित लियो। बान संधान खर त्रान खंडित कियो ॥ परत खर त्रान महि त्रिशिर शर जालते। शाल रघुलाल तिहि काल नख भालते ॥ ३२ ॥ निरखि रघुवीर वरवीर उर थीरते। कीन सुविदीर बहु त्रिशिर तनु तीरते ॥ हेरि दूषण त्रिशिर शक्ति कर चंडलै। युद्ध किय क्रुद्ध भट उद्ध पुनि खंडलै ॥ ३३ ॥

पद्धरी छंद।

इमि यातुधान अति कोप कीन। पुनि घेरि शोर करि घेरि लीन॥
गहि उपल वृक्ष डारत प्रचार। वर्षत अपार मल अस्थिछार३४॥
वारिवंड चंड निश्चर अनेक। निरद्वंद बीर रघुनंद एक॥
खल दल अखंड करि खंड खंड। डारत सुभूमि हति चंड चंड॥३५॥
खर दूषणादि निश्चर समस्त। बाणन विदारि कीने परस्त॥
भोकटक खिन्न बहु छिन्न छिन्न। कर चरण शीश तनु भिन्न भिन्न३६॥
बहु भिरत आय बहु गिरत झूमि। बहु घूमि प्राण तजि परत भूमि॥
बहु क्रुद्ध युद्ध किय धाय धाय। बहु खल परांय करि हाय हाय३७॥
रघुवीर चंड कोदंड धारि। बाणन बिदारि खल झारि मारि॥
खर दूषणादि त्रिशिरादि सर्व। भो यातुधान दल निहत गर्व।३८॥
निश्चर सहस्र षट दंड मध्य। रघुवीर एक कीने सुवध्य॥
खर यातुधान संहार हेर। कोप्यौ अपार किय समर फेर३९॥
निश्चर सहस्र वसु एक वार। वर अस्त्र शस्त्र कीने प्रहार॥
तिन सकल खंडि रघुवीर वीर। हिय भरो क्रोध बहु समर धीर४०॥
कोदंड चंड शर मंड मंड। वर वंड वीर किय खंड खंड॥
स्यंदन गयंद बेसर तुरंग। वाहन सुढंग सब कीन भंग ४१॥
पुनि विशिखबाण गहि गहि अपार। काटे समस्त निश्चर हथ्यार॥
कर चरण शीश कटि कटि अनेक। द्रुत परत एक पर एक एक॥४२॥
पिक्करत वीर धावत रिसाय। चिक्करत हाय करि करि पराय॥
रघुनाथ हाथ लाघव अभूत। तनु तेज धीर भुजबल अकूत॥४३॥
कर लहत गहत अरु बहत बान। धनु सजत तजत कोऊ न जान॥
दिशि विदिशि दीन शरजाल छाय। नभ भूमि काहु कछु नहिं लखाय४४
भरि नैन श्रौन मुख विशिख तीर। निश्चर अधीर कीने सुवीर॥
करि हाय हाय भट यातुधान। छोड़त सुप्राण लगि वज्रबान॥४५॥
बल झुंड रुंड अरु मुंड भूरि। छाये कराल चहुँ धरणि पूरि॥

बहु श्वान गृध्र वायस शृगाल। तिन लखत भखत अति जिय निहाल४६
कर चरण शीश लैलै परांय। मड़राय धाय गहि जाँय खाँय ॥
पलभखी जीव आमिष अहार। लहि करैं पान शोणित अपार॥४७॥
बहु समर घोर करि यातुधान। लगि रामबाण सब तजत प्रान ॥
चौदह सहस्र निश्चर समस्त। शरग्रस्त त्रस्त भे ध्वस्त अस्त॥४८॥
इहि भाँति प्रबल खलदल उदंड । खर दूषणादि त्रिशिरा प्रचंड ॥
वर वीर सकल दशशत षडष्ट। ते यातुधान भे समर नष्ट ॥ ४९ ॥
निश्चर विनाश लखि देववृंद । बोले सु जैति जैरामचंद ॥
चहुँ सुमन वृष्टि कीनी अपार। नभ छई विपुल दुंदुभि धुकार॥५०॥
लखि विजय मुदित ह्वै लषण लाल। सिय सहित धाय आये उताल ॥
करि नेह राम उरलाय लीन। कहि विशद बैन आनंद दीन॥५१॥
सिय देखि राम तनु त्रान खंड । अकुलाय नीर लोचन उमंग ॥
विलपाय धाय रघुराय अंक। लीने लगाय जिय अतिसशंक५२॥
तिन लखि अधीर रघुवर प्रवीन। तनु त्रान वेगि अति दूर कीन ॥
सिय लषण राम नख शिख निहार। पायो सुहीय आनँद अपार॥५३॥

दोहा—इमि रघुवीर सुधीर वर, वीर समेत हुलास ॥
जनस्थानवासी सकल, निश्चर किये विनास ॥ ५४ ॥
खर दूषण त्रिशिरादिये, चौदह सहस सुधीर ॥
दशमुख आज्ञाते रहे, जनस्थान वरवीर ॥ ५५ ॥
सुनि दुखकारी सकल शठ, रहे भये सो नाश ॥
ऋषिगण अति आनँद लहो, सब छूटी खल त्रास ॥ ५६ ॥
सुर मुनि सब रघुवीरकी, अस्तुति करत अपार ॥
दंडकवन पावन भयो, होत सु जैजैकार ॥ ५७ ॥
सिया लषण संयुत सदा, रहत सजग रघुवीर ॥
छिनहुँ न छोड़त बंधु दुहुँ, धनु शर असि तूणीर ॥ ५८॥
पंचवटी इहि विधि रहैं, सिया लषण रघुचंद ॥

धीर वीर विहरत विपिन, प्रतिदिन परमानंद ॥ ५९ ॥
कियो राम सिय मंत्र कछु, लषण सुजानों नाहिं ॥
यथारूप गुणनेह युत, संतत तिहूँ रहाहिं ॥ ६० ॥
पंचवटी गोदावरी, सुभग तपोवन ठाम ॥
परम मनोहर सिद्धि थल, जहँ विहरत सिय राम ॥ ६१ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० पंचवटीवास वर्णनो
नाम दशमोऽविभागः ॥ १० ॥
इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रन्थे वनचरित्रवर्णनो
नाम चतुर्थोविधानः ॥ ४ ॥

लीला छंद।

इहि विधि सब यातुधान ॥ नाशे हति राम बान ॥
कानन चहुँ झुंड झुंड ॥ छाये बहु रुंड मुंड ॥ १ ॥
शूर्पणखा देखि हाल ॥ अतिही जिय ह्वै विहाल ॥
भागी तहँते सशंक ॥ धाई बहु वेग लंक ॥ २ ॥
आई दशशीशपास ॥ विलपी बहु ह्वै निरास ॥
ताको सब हेरिहाल ॥ बूझी अतिही उताल ॥ ३ ॥
क्रोधित करि अरुण नैन ॥ बोली बहु निदरि बैन ॥
बूझै कह निलज बात ॥ मोगति तुहिं नहिं लखात ॥ ४ ॥
डूबो मति अंधकूप ॥ तोसम कहुँ होत भूप ॥
देखै कछु देश कोश ॥ तोको नहिं रंच होस ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

भावै मति बंक मद छावै है उतंक, तिय अंकलै निशंक, पर्यंक माहिं सोवैहैं ॥ अथवत भान कब होत है विहान सो न जान सुरापान माहिं रैनिदिन खोवै हैं ॥ रसिकविहारी राज काज औ समाज साज कैसो का अकाज काज रंचहू न जोवै है ॥ तो सों जो नरेश सो कलेश बहु पावै देश जावै पछितावैऔविनाश वेगि होवैहै६

दोहा—शूर्पणखा इमि रावणहि, कहि अनेक कटुबात ॥
बहुरि कथा सब वरणिकै, बार बार विलपात ॥ ७ ॥

सो०—सुनि खरवध दशमाथ, विकल भयो बहु सोचवश।
पुनि रिस करि निज हाथ, मलत उसासन लेत बहु ८ ॥
निरखि शोक वश भ्रात, पुनि बोली कुलनाशिनी ॥
सुन दशमुख मम बात, जिहि कीने तुव होय भल ॥९॥
राम तिया छबिसिंधु, कैसहु सो हरिलावहू।
तौ तिहि दुख दुहुँ बंधु, करि विलाप निज तनु तजैं॥१०॥
शूर्पणखाके बैन, मन भाये दशमुख सुनें।
हिय आयो कछु चैन, चलो वेगि रथसाजि सो ॥ ११ ॥
आयो जहँ मारीच, कियो अमित सतकारसो ॥
बहुरि दशानन नीच, ताहि सुनाई सकल गति ॥ १२ ॥
चौ०—पुनि बोलो तुम मृग बनि जावो ❀ छल करि दुहुँ बंधुन भरमावो॥
तब इकंत लखि मैं तहँ आऊँ ❀ लै सीतहि निज लंक सिधाऊँ १३ ॥
तब मारीच ताहि समुझायो ❀ राम तेज बल अमित सुनायो ॥
सुनि बोलो दशवदन रिसाई ❀ मुहिं लखि परै मृत्यु तुव आई १४ ॥
तब मारीच चलो गुणि साथा ❀ मरन भलो रघुवरके हाथा ॥
निशिचरपति तहँ आय लुकायो ❀ सो अनूप मृग तनु धरि आयो १५॥
पंचवटी बिच इत उत जाई ❀ बार बार दुरि दई दिखाई ॥
औचक लखो सीय तिहि रूपा ❀ अकथ अभूत कुरंग अनूपा १६॥

घनाक्षरी—कवित्त।

नील मणि नैन औ प्रवालके विशाल शृंग जटित अनेक रत्न, कंचनको अंग है। दशन सुहीरनके रजतमई हैं खुर रसिकविहारी रूप सुभग सुढंग है॥ ताहि अविलोकतहीं सीय रघुनंदनको टेरे हुलसाय छाई अमित उमंग है। धावो वेगि धावो लाल आवो इत आवो श्याम देखौ याहि देखौ कैसो रुचिर कुरंग है॥ १७ ॥

दोहा—लै धनु शर सिय वचन सुनि, दुहूं बंधु उठि धाय।
जनकसुता ढिग आयकै, चहुँ चितये अकुलाय॥ १८॥
वेगि सिया पिय हाथ गहि, दरशायो मृग सोय।
लखि अनूप दुहुँ राजसुत, चकितरहे छबि जोय॥ १९॥

जनकसुता पुनि श्याम सों, बोली सहित उमंग।
करि अहेर वा जियत गहि, लीजे लाल कुरंग ॥ २० ॥
सुनत प्रियाके प्रिय वचन, धनुशर सजि रघुराय।
चले वेगि मृग हेतु सो, बहु लषणहिं समुझाय ॥ २१ ॥
रामहि निरखि कुरंगसो, कहुँ दुरि कहुँ दरशाय।
यौं छल करि बन अगम बिच, लैगो दूरि भुराय ॥ २२ ॥

चौ०—जब मृग छल रघुवीर विचारा ❀ तबतकि ताहि चंड शर मारा ॥
गिरो कहत हा लछमन सीता ❀ सुनत भई रघुवर हिय भीता २३
सो तजि कपट मरो कहि रामा ❀ दिव्य देह धरि गो सुरधामा ॥
पुनि रघुनाथ रुचिर त्वच लीना ❀ वेगि फिरे सिय ढिग चित दीना २४
जब मारीच शोर करि भारी ❀ हाय लषण सिय गिरा उचारी ॥
सो सुनि जनकसुता अकुलानी ❀ कही वीर धावो धनुपानी २५ ॥
भो कलेश तुव भ्रातहि भारी ❀ तब इमि आरत गिरा उचारी ॥
लषण कही तजि तुमहि न जाहीं ❀ तिनहिं देइ दुख को जग माहीं २६
वचन सुनत सिय रिस करि भारी ❀ कही लषण दुरनीति विचारी ॥
जानत हौ जिय भ्रातहि मारी ❀ हम लीजे मिथिलेशकुमारी २७
कै तुम भरत मंत्र दुहुँ कीनो ❀ स्वारथहेत संग बन दीनो ॥
सो रुचि नहिँ पूजिहै तिहारी ❀ मोहिं न गुनौ और सम नारी २८

दोहा—जाछिन प्यारेको सुनौं, हौं दृढ़ अशुभ प्रसंग।
ताही छिन विन अनल यह, भस्म करों निज अंग ॥ २९ ॥
यौं कहि पुनि बोली सिया, लषण जात कै नाहिं।
जौं न जाहु तौ अबहिं मैं, प्राण तजौं छिन माहिं ॥ ३० ॥

चौ०—अनुचित सुनत रोष उर धारे ❀ लछमनहू कटु वचन उचारे ॥
वेगि कृपाण धनुष तूणीरा ❀ सजिके चलत भये वर वीरा ३१ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥

आर्तस्वरं तु तं भर्तुर्विज्ञाय सदृशं वने ॥ उवाच लक्ष्मणं सीता गच्छ जानीहि राघवम् ॥ १ ॥ रक्षसां वशमापन्नं सिंहानामिव गोवृषम् ॥ न जगाम तथोक्तस्तु भ्रातुराज्ञाय शासनम् ॥ २ ॥ तमुवाच ततस्तत्र

क्षुभिता जनकात्मजा ॥ सौमित्रे मित्ररूपेण भ्रातुस्त्वमसि शत्रुवत् ॥ ३ ॥ सुदुष्टस्त्वं वने राममेकमेकोऽनुगच्छसि॥ मम हेतोः प्रतिच्छन्नः प्रयुक्तो भरतेन वा ॥ ४ ॥ अब्रवील्लक्ष्मणः सीतां प्रांजलिः स जितेन्द्रियः ॥ उत्तरं नोत्सहे वक्तुं दैवतं भवती मम ॥ ५ ॥ स्त्रीत्वादुष्टस्वभावेन गुरुवाक्ये व्यवस्थितम् । गच्छामि यत्र काकुत्स्थः स्वस्ति तेऽस्तु वरानने ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—गमनत पर्णशाल चहुँ फेरा ❀ करि महि धनुषरेख कर घेरा ॥
कही इती विनती चित दीजो ❀ रेख उलंघि काज जनिकीजो ३२
योंकहि लषण वेगि पगधारे ❀ रोष सोचवश विकल अपारे ॥
सूनो थल दशमुख जब पायो ❀ तब सो तापस वेष बनायो ३३ ॥
रथदुराय शाला ढिग आई ❀ आतिथि भिक्षु सम गिरा सुनाई॥
लखि सिय देन लगी फल जाई ❀ तब बोले इमि निश्चरराई ॥ ३४॥
हों न लेहुँ बंधनमय भिक्षा ❀ है इहि भांति मोहिं गुरु शिक्षा ॥
याते रेख बाहिरे आई ❀ जो कछु देहु लेउँ हुलसाई ३५ ॥
भावीवश सिय कछु न विचारी ❀ धनुरेखा उलंघि पग धारी ॥
देन लगी भिक्षा तिहिजाई ❀ तब दशमुख स्वदेह प्रगटाई ३६॥
अंतर भक्ति सहित शिरनाई ❀ प्रगट निश्चरी मति दरशाई ॥
गहिलीनी सीतहि बरियाई ❀ वेगि लै चलौ रथ बैठाई ॥ ३७ ॥
रावण गहत विदेहकुमारी ❀ ताहि अमित कटुवाणि उचारी ॥
घोर शोर करि रोवन लागीं ❀ ताछिन दुसह शोक दुख पागीं ३८॥
आरत दीन पुकारत सीता ❀ बचन उचारत विकल सभीता ॥
हाय नाथ हा अवध बिहारी ❀ हाय वीर यों विलपत भारी ॥ ३९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जनकसुताको हरिलीनी दशशीश जबै रथ पै चढाय, लैचलो है निज भौनको । विकल अधीर बिललाति कुररीकी भाँति दीन है पुकारति है भूमि नभ पौनको ॥ रसिकविहारी हाय प्रीतम धनुषधारी आपनी दशाया मैं सुनाऊँ सबै कौनको । अबतो परी है बालमृगी या वधिक हाथ वेगही छुड़ावो धावो दुष्ट दल दौनको ॥४० ॥ हाय

रघुचंद हाय दशरथनंद प्योरे हाय रघुवीर धीर पीरके हरैया हाय । हाय प्राणवल्लभ दयालु रघुलाल हाय संकट हरैया उर आनँद भरैया हाय ॥ हाय सुखकारी हाय रसिकविहारी धाय कीजिये सहाय आय धनुष धरैया आय । हाय प्राणप्रीतम सुजान बलवान ऐसी सुरति बिसारी क्यों हमारी रघुरैया हाय ॥ ४१ ॥ हाय मतिमान धीर लषण सुजान तव कीनो अपमान सो निदान भई घात है । हाय बलवान धाय वेगही छुड़ावो आन निकसत प्राण छिन कलप विहात है ॥ रसिकविहारी धनुधारी हौ तिहारी वीर मेरो दुखहारी और कोऊ ना दिखात है । हाय रघुनाथ मोहिँ निरखि अनाथ दशमाथ गहि हाथ निज साथ लीने जात है ॥ ४२ ॥ मेरी महि माय हाय सोऊ ना छुटावै मोहिं ठाढ़े कुज भ्रात भूरि तेऊ नगिचायना ॥ तातके समान भानु देखै ना बचावै आन भगिनी लता ये लखैं तेऊ गहैं धाय ना । संगिनी कुरंगिनी सुहेरैं पै नटेरैं काहू ऐसे समयहितू और कितहूँ जनायना ॥ रसिकविहारी दुःखहारी धनुधारीविन विपत परै पै कोऊ करत सहायना ॥ ४३ ॥

दोहा०–इहि बिधि अमित विलाप युत, जनकसुता कर जोरि ॥
जड़ चेतन वन वसहिं तिन, विनवैं अधिक निहोरि ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कदली कदंब अंब शिंशुपा अशोक वट निपट अधीन दीन देखि दया कीजियो ॥ सरित समीर दिशि कानन सुपंथ गिरि प्यारे ते बताय वेगि ये तो यश लीजियो ॥ रसिकविहारी कीर सारिका चकोर मोर भृंग पिक कोकिल नमौनही रहीजियो ॥ केहरी कुरंग व्याल आवैं रघुलाल तिनै मेरो हाल सकल उताल कहि दीजियो ॥ ४५ ॥

चौ०· कराति विलाप अमित इमिसीता ❀ लिये जात दशवदन सभीता ॥
सुनि सिय रुदन जटायू धावा ❀ गहि रथनभते भूमि गिरावा ४६ ॥
रावणकर धनु शर रथ भंजा ❀ कियो युद्ध खल बल मद गंजा ।
चोंचन नखन सुअंग बिदारी ❀ छीनलई हठि जनकदुलारी ४७
तब रावण कर गहि असिधायो ❀ गृद्ध पंख दुहुँ काटि गिरायो ॥

झटित जाय दूजो रथलायो ❋ सिय जटायुसो भेद न पायो ४८॥
पुनि सीतहिलै निश्चर राई ❋ नभमारग ह्वै चलो पराई ॥
बहु विधि करति विलाप जानकी ❋ तजी आश तिहि समै प्राणकी ४९

दोहा-नभमारगह्वै सीय को, लिये जात दशशीश ॥
ताछिन देखे जनकजा, गिरिपर बैठे कीश ॥ ५० ॥
कछु निज भूषण अंगते, सिय दीने तहँ डारि ॥
आय परे बिच कपि सकल, चक्तरहे निहारि ॥ ५१ ॥
कोउ न जानो भेद कछु, किहिके भूषण आँय ॥
सहजहिं वनचर तिनहिं लै, धरे कंदरामाँय ॥ ५२ ॥
दशकंठहु जानो न सो, जो कछु कीनो सीय ॥
वेगि लैगयो लंकमधि, शोक हर्ष वश हीय ॥ ५३ ॥

चौ०-सियहि लंकपति लंकहि लाई ❋ माधि अशोकवाटिका दुराई॥
विकट निश्चरी विविध बुलाई ❋ ते सब शस्त्र लिये कर आई ५४
साम दाम भयभेद सिखाई ❋ तिनहिं दशानन दई रजाई ॥
सजगरहो निशि दिवस सदाई ❋ करहु सिया रखवारी जाई ॥ ५५
लंकनाथ आज्ञा शिर धारी ❋ सीता निकट सुवेगि सिधारी ॥
तिनहिं निरखि मैथिली सकानी ❋ मौन रहीं मुख कढ़ी न वानी ५६
इहिविधि सिय निश्चरिन मँझारी ❋ निशि दिन विलपत रहैं दुखारी
ते सब बहु प्रकार समुझावैं ❋ साम दाम भय प्रीति जनावैं ५७
सिय रावण गृह दृढ व्रतकीना ❋ निद्रा अशन पान तजिदीना ॥
सो गति लखि सब देव दुखारी ❋ करि सुमंत्र दृढ़ युक्ति विचारी ५८
पंचम निशि सुरपति दुरि आये ❋ निद्रा घोर संग निज लाये ॥
पायस शुचि अनूप करधारे ❋ भक्ति सहित सिय निकट पधारे ५९
सब निश्चरी नींद वश सोई ❋ सो न भेद जानो कछु कोई ॥
सियहि बुझाय सुअशन कराई ❋ दै बहु धीर गये सुरराई ॥ ६० ॥

दोहा-शुद्ध सिद्धि चरु देवकृत, गुणद पियूष समान ॥
कबहुँ न क्षुधा पिपासहो, पुनि न तेज बलहान ॥ ६१ ॥
यदपि देवपति अमित विधि, सियहि गये समुझाय ॥
तदपि निपट व्याकुल करैं, हाय हाय विलपाय ॥ ६२ ॥

चौ०–जबसिय खबर विभीषणपाई ❀ तब ह्वै दुखित हिये अकुलाई॥
कला नाम निज सुता बुलाई ❀ भक्तियुक्ति शुभरीति सिखाई६३
कहीसहज नित सिय ढिगजावो ❀ सखिनसहित तिन धीर धरावो॥
पैन भेद कोऊ यह जानै ❀ रावण न तरु क्रोध उर आनै६४॥
सो सुनि कलासंग सखि चारी ❀ लखि औसर सियपास सिधारी
जाय पाँय परि विनती कीनी ❀ पितु प्रणाम कहि धीरज दीनी ६५
इहि विधि कला नित्य सियपाहीं ❀ सखिन सहित लखि औसरजाहीं
पुनि जो सिय ढिग निश्चरि रहहीं ❀ तिनमहँ द्वैतिय शुभ मति अहहीं
त्रिजटा अरु शरमाशुभ संगिने ❀ ये दुहुँ गुप्त रहैं सिय अंगिनि॥
सप्तनारि ये जनकदुलारी ❀ बाढी प्रीति परसपरभारी॥६७॥
इहि विधि सिया लंकमाधिरहहीं ❀ निशि दिन पिय वियोग दुखदहहीं
राम नाम मुख दृग पति ध्याना ❀ करि राखैं सीता निज प्राना॥६८॥

दोहा–इहि विधि दशमुख सीय लै, राखी लंक दुराय॥
नगरद्वार चहुँ विपिन मग, परम प्रबंध दिढाय॥ ६९॥
माघमास तिथि अष्टमी, शुक्र दिवस मध्यान॥
दशकंधर सीता हरी, ग्रन्थन माहिं प्रमान॥ ७०॥

प्र० अग्निवेश्यरामायणे।

ततो माघे सिताष्टम्यां मुहूर्ते वृंदसंज्ञके॥
राघवाभ्यां विना सीता जहार दशकंधरः॥ ७॥

पुनः हनुमन्नाटके।

अर्द्धरात्रे दिनस्यार्द्धे अर्द्धचंद्रेर्द्धभास्करे॥
रावणेन हता सीता:शुक्लपक्षे सिताष्टमी॥ ८॥ इत्यादि

इति श्री० रा० र० वि० वि० सीताहरण
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः॥ १॥

दोहा–इहि विधि भये जु मासदश, दुखित रहैं सियलंक॥
निश्चरपति अरु निश्चरी, दरशावत बहु शंक॥ १॥
सिया कलादिक सखि प्रातिन, प्रति दिन करहिं विलाप॥
प्रिय वियोग दुखते सदा, बढत विरहतनु ताप॥ २॥

घनाक्षरी कवित्त।

विरह विहाल शीशनाय सियसोचत हैं मोचत दृगनवारि ऊंची श्वास भरिकै॥ रसिक विहारीको मिलावै धनुधारी अब भूमिहू न मेरे हेत फाटत दरीरकै॥ श्याम रघुराई कहा चूक बनि आई मोतें ताही सों दुराई चुप ह्वै रहे विसरिकै। हाय प्राणप्यारेको दरश मोहिं दुर्लभ भो विमुख मरौंगी याविद्योग ज्वाल जरिकै॥ ३॥ निपट निलज्ज सदा सहत वियोग परि रटत हमेस हाय रहत सतापीतू॥ येरे मति-हीन दीन दुखित घनेरो वृथा विलपत रैनिदिन भयो है विलापीतू॥ रसिकविहारी प्राणप्यारे ढिग जारे अब विरह सुनारे कस होत मृखा-लापीतू॥ ऐसहू कलेश धृग जीवन है तेरो हाय निकसत नाहीं क्यों कठोर प्राण पापीतू॥ ४॥ जाके हिय लागी लखै सोई या वियोग पीर निपट कराल है कृपाण कठिनाईते॥ दोऊ तन दाहै हेली दुसह व्यथा है अति रंचहू न चाहै सुख सुजन मिताईते॥ प्रानको पयान दुख एकको नशात सबै, समुझ सयानी भटू निज निपुनाईते॥ रसिकविहारी सुखकारी यौं विचारी वेगि मरन भलो है यह विरह कसाईते॥ ५॥ सुनत सदाही मैं दयालु देव मानों किमि प्रगट जनात निठुराईको निकेत है। रसिकविहारी दीन रक्षक बतावै ताहि मिथ्या सो अजान सुधि काहूकी न लेत है॥ अमित उदार यों ही करत बखान वाको मेरी जान कृपन महान इहि हेतहै। हौं तो वह जाँचो कछु दाम को न काम जामें सोऊ नेक मीच मोहिं माँगेहून देतहै॥ ६॥ मोसी मंदभागिनी न कोऊ है जहान हेली ते हैं बड़ भागिनी जु श्याम सुख पागैंगीं। आनँद अभंग नवने-हकी उमँग माहीं छाकि रस रंग संग सब निशि जागैंगीं॥ जन्म धिग मेरो हाय प्रीतम वियोग भयो धन्य सोतिया जो अति हीय अनुरागैंगीं॥ रसिकविहारी रघुचंद हैं निशंक अब अमित मयंकमुखी आय अंकलगैंगी॥ ७॥

सवैया कवित्त।

जानतिहौं रसिकेश सुभावरहैं दृढ़प्रीतिकी रीतिमें माचे। नेहि-नके वश वेगहि होत अभंग सदा रसरंगमें राचे॥प्रेम लगाय लुभाय

न लेय कोऊ,हौं तजौं इहि सोचकी आँचे। और नहीं इमि है कितहूँ जिमि हैं साखि श्याम सनेहके साँचे ॥ ८॥

घनाक्षरी कवित्त।

इत उत जाय बार बार फिरि आय आय, रसिक-विहारी ढिग मेरेही अरत है। गोदावरि तीर धाय, जोलों नीर लाऊँ वीर तौलों हेर हेर प्यारी प्यारी ही ररतहै ॥ शैनहूं में नैन खोलि खोलि अविलोकत ते मोहिं विन देखे छिन धीर न धरत है ॥ भूलै है न सोई सुख हूलै है हिये में हाय मेरे प्राण प्यारे वह प्यार जो करत है ॥ ९॥ चौदह सहस्र यातुधान बलवान भूरि जिनते संहारेते अमोघबान खोगये। दीन दुख टारतते दुष्टनको मारतते एकैबार अमित समस्त गुण गोगये ॥ निरखि पराई पीर नीर दृग ढारतते धारतते विविध सुकर्म धर्म धोगये। रसिक विहारी लाल परमदयालु सोई मेरे हेत निपट कठोर अब होगये ॥ १०॥

सवैया कवित्त।

है जु पतिव्रत धर्म महा,तिहि मैं दृढ कै अपने उर ठानों। प्रीतम के पदपंकजते बढ़ि और कछू तिहुँ लोक नमानों ॥ सो फल हीन कियो सिगरो अब काह कहौं पिय नेक न जानों। मोहिय दाहत शोक यही उन सत्य सनेह नहीं पहिचानों ॥ ११॥

दोहा-जनकनन्दिनी बिकल नित, इहि विधि अति बिलपाय ॥
पति वियोग वश दुखित जिय, नेक न धीर धराय ॥ १२॥
तिया कला त्रिजटादिते, समुझावैं सतभाय ॥
स्वामिनि धीरज धारिये, सुधिलै हैं रघुराय ॥ १३॥
सुनि तिनके बर बचन बहु, सिय धारैं छिन धीर ॥
पुनि बोलै अकुलाय उर, उठै बिरहकी पीर ॥ १४॥

सवैया कवित।

कौन सुनै अरु कासों कहौं पुनि सांचिये कोउ न मानत है।
जिहि व्यापी नहीं या वियोग व्यथा सु कहा दुखको पहिचानत है ॥
रसिकेस कहूं विरही जौ मिलै विरही गति सो उर आनत है ॥

नर नारि सयोगी वियोगी कहा मिलिकै बिछरो सोई जानतहै॥१५॥
कोउ कहै दुख त्यागौ सबै हिय धीर धरौ मिलि हैं रस भीनों॥
पै मन मेरो न मानत है बिछुरे तन छोडिवोई प्रण लीनों॥
मोहि जुपै समुझावति हौ रसिकेश तुपै अतिही भल कीनों॥
हों करतारसें पूछौं इतो बिरहीके ललाट कहूं सुख दीनों॥ १६॥
चित चाहिय जाको सँयोग सदा वह ताहिको वेगि वियोग करावै॥
देखि दशा विरहीनकी वाके हिये कछु रंच दया नहिं आवै॥
यौंरसिकेश संदेसो अबैं करतारको कोऊ न जाय सुनावै॥
छीन सुधा सबके करते फिर नाहक क्यों जु हलाहलप्यावै॥ १७॥

सो०—पुनि सिय बोली वीर, तन मन ते न वसाय कछु॥
बिन सुन्दर रघुवीर, नेक धीर कोउ न धरै॥ १८॥

सवैया कवित्त।

प्राण समीरते बोलत है पिय तू परसै किधौं हौं परसौं॥ रसना पपिहाते कहै रट पीउ की तू सरसै किधौं हौं सरसौं॥ तनकी अरु जीवकी होड लगी अति तू तरसै किधौं हौं तरसौं॥ रसिकेश बदी दृग मेघनसों घनो तू वरसै किधौं हौं वरसौं॥ १९॥

दोहा—यौं कहि सिय बोलीं बहुरि, अली धरौं किमि धीर॥
राजकुँवर बिन रैनि दिन, देत सकल ऋतु पीर॥ २०॥

घनाक्षरी—कवित्त।

शिशिर समीर तीर घालिवो न चूको नेक शीत भीत देवेमाँह कसर लगाईना॥ रैनहूँ अचैंन अधिकैवेमें न राखो चैन पाला त्यौं कसाला मध्य कीनी लघुताईना॥ रसिक बिहारी फेर नीरहू न धारी धीर निरखि दुखारी मोहि काहू दया आईना॥ येते बलवान मिलि प्राण हठि लेते हाय जो पै एक होतो विरहानल सहाईना॥ २१॥ फूलनकी शूलनते शूल शूल शालो हीय कोकिलाकी कूकन लै लूकसी लगाईरी॥ त्रिविध समीर तीर ताकि तनुबेधो वीर विरह कृपान तान विशिष चलाईरी॥ रसिकविहारी धीर धारी वरियारी वीर हाय यावि-चारी तब कीनी मोसहाईरी॥ निठुर कसाई सो वसंत दुखदाई घात पाई प्राण लैवे माँह कसर न लाईरी॥२२॥ आतप अपार फेर विरह

कृशानु झार लागि तन होतो छार कैसहू न जीतीमैं ॥ लूह की लपेट तातो श्वासकी सपेट जैसी भई जिय जानौं का बखानौं गति बीतीमैं॥ रसिकबिहारी धनुधारीकीकृपाते बचि जैहै प्राण ऐसी सत्य हीय धरि लीतीमैं ॥ ग्रीषम वियोग दोऊ दाहतैं मरीती हाय जोपै श्याम नाम सुधा छिनहुँ न पीतीमैं ॥ २३ ॥ मेघन घिराय झरि लाय दामिनी दिपाय घोर घहराय तमछाय डर पायोरी ॥ पौन जोर तोर तरु चातक सुमोर शोर करकै करोर कला दुख दरशायोरी ॥ अबला अधीन दुखी विरहिनि दीन देखि रसिकबिहारी दया रंचहू न लायोरी ॥ पावस प्रपंची निशि दिवस सताई मोहिं फेरि वह पापीके सुहाथ कह आयोरी ॥ २४ ॥

दोहा—हौं पाहन निज हीय करि, इती सही सब शंक ॥
निपट दुसह दुख देतहै, अब यह शरद मयंक ॥ २५ ॥
यौंकहि सिय शशि ओर लखि, बोलीं बचन रिसाय ॥
सुखी न रैहो चंद तुम, मो अबलाहि सताय ॥ २६ ॥

सवैया कवित ।

टुक जीय विचारौ अहो द्विजराज अजौं दुख दीनको देखि लचौ॥
रसिकेश सु शीतलता तजिकै मुहिं हेत बृथा जनि तापतचौ ॥
यह बात भली जु न मानहु तौ पछितैहौ घने बहु नाच नचौ ॥
प्रथमै हिय कारो भयो पै अबै मुखकारो भये बिन नाहिं बचौ २७॥

दोहा—येही विधि सिय सियन प्रति, करति विलाप अपार ॥
दुखित हीय दुहुँ दृगनते, चली जात जलधार ॥ २८ ॥
गदगद कंठ सनेह मय, बहुरि कहे सिय बैन ॥
सखी सुमिरि पिय हीय गति, हौं सोचौं दिन रैन ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दुसह कलेश नित विरह व्यथाको सहौं पै न प्राणप्यारे ढिग प्राणहि पठाऊं मैं ॥ रसिकबिहारी यो कठोर हिय मेरो तऊ करि करि हाय रैनि दिवस बिताऊं मैं ॥ प्रीतमको हीय अंग कोमल महाहै सखी कैसे दुख झेलैं याते ऐसी जिय चाऊं मैं ॥जौलौंहैं वियोग तौलों श्यामको सनेह मोमें अधिक न होवै यही ईशते मनाऊं मैं ॥ ३० ॥

दोहा–दशरथ राज किशोर नित, सब विधि मुदित रहायँ ॥
तौ तिनके सुखते सखी, हौं अति सुखी सदायँ ॥ ३१ ॥
याते हौं शिरनायकै, विनय करौं कर जोरि ॥
गिरिजापति पूजैं सदा, यह अभिलाषा मोरि ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दोऊ बंधु रूप गुणसिंधु दीनबंधु हेली परम सुधर्म सतकर्ममें सने रहैं खल दल घालनको भक्त प्रतिपालनको सत्य प्रणयेई सदा हीयमें ठने रहैं ॥ अंचल पसार बारबार वर माँगौ येही तन मन प्राणप्यारे मुदित घने रहैं ॥ वसुधाबड़ाई वित्त वीरता समेत जैसी रसिकबिहारी सुखी संतत बने रहैं ॥ ३३ ॥

दोहा–यौं कहि सिय पुनि नेह भरि, बिलखि कहे मृदुबैन ॥
हाय श्यामसुंदर बदन, कब देखौं भरिनैन ॥ ३४ ॥
सुनि कलादि नारी सबै, सियहि दई बहु धीर ॥
राज सुता अब वेगही, मिलन चहत रघुवीर ॥ ३५ ॥
सुनि वरवानि कलहि सिया, हिये लई लपटाय ॥
पुनि सबही आदर दियो, बहु विधि प्रीत बढ़ाय ॥ ३६ ॥
येही विधि नित जानकी, करि करि विविध विचार ॥
कहत रुचत सो विरह वश, नेक न रहत सम्हार ॥ ३७ ॥
सिय विलाप इमि अमितहै, कहँ लग करौ बखान ।
वाल्मीकि नाटक विविध, ग्रन्थ न माहिं प्रमान ॥ ३८ ॥

वाल्मीकीये सुंदर कांडे । सर्ग २८ ॥ श्लोक ।

हा राम हा लक्ष्मण हा सुमित्रे हा राममातः सह मे जनन्यः ॥
एषा विपद्याम्यहमल्पभागा महार्णवे नौरिव मूढवाता ॥ १ ॥
हा राम सत्यव्रत दीर्घबाहो हा पूर्णचन्द्रप्रतिमानवक्त्र ॥
हा जीवलोकस्य हितः प्रियश्च वध्यां न मां वेत्सि हि राक्षसानाम् ॥२॥
अनन्यदेवत्वमियं क्षमा च भूमौ च शय्या नियमश्च धर्मे ॥
पतिव्रतात्वं विफलं ममेदं कृतं कृतघ्नेष्विव मानुषाणाम् ॥ ३ ॥

मोघं हि धर्मश्चरितो ममायं तथैकपत्नीत्वमिदं निरर्थकम् ॥
या त्वां न पश्यामि कृशा विवर्णा हीनात्वया संगमने निराशा ॥ ४ ॥
पितुर्निदेशं नियमेन कृत्वा वनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च ॥
स्त्रीभिस्तु मन्ये विपुलेक्षणाभिः संरंस्यसे वीतभयः कृतार्थः ॥ ५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनीविलाप
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा—सीता प्रेम वियोगको, कीनो कछू बखान ॥
नेह विरह रघुचंदको, वरणौं सहित प्रमान ॥ १ ॥
इत मारीचहि मारिकै, वेगि फिरे रघुलाल ॥
धनु शर साजे लषण उत, आये अतिहि उताल ॥ २ ॥
निरखि बंधुको चकित ह्वै, बोले अति अकुलाय ॥
कहौ कुशल हैं जानकी, किमि आये इत धाय ॥ ३ ॥
हाय लषण यह काकियो, सियहि अकेलि विहाय ।
इत आये बिनकाजहीं, असि धनुबाण सजाय ॥ ४ ॥
जानत हौ निशिचरनते, भई शत्रुता भूरि ॥
लखि सूनी हरि लेहिंगे, मेरी जीवनमूरि ॥ ५ ॥
पुनि कर गहि वर बंधुते, बूझी ह्वै अतिदीन ॥
सत्य कहौ प्यारी कुशल, क्यों तुव वदन मलीन ॥ ६ ॥
मम आज्ञा करि भंग तुम, इत आये किहि हेत ॥
राम बचन सुनि लषण ते, बनै न उत्तर देत ॥ ७ ॥
पुनि धरि धीरज जोरिकर, बोले दुखित निहोरि ॥
नाथ कही सो सत्य पै, मोरि कछू नाहिं खोरि ॥ ८ ॥
कहि अनेक अनुचित बचन, हिए रोष बहु लाय ॥
बरियाई मुहिं जानकी, इत भेजो रघुराय ॥ ९ ॥
यौं कहि पुनि वृत्तांत सब, रामहि लषण सुनाय ॥
बोले दुहुँ करजोरिकै, कहा दोष मम आय ॥ १० ॥
सुनि बोले रघुवंश मणि, तुम लछमन मतिमान ॥

तिय वाणी मानी हिये, ऐसे भये अयान ॥ ११ ॥
मूढ मत्त शिशु तिय दुखी, पांचहु एक समान ॥
इनके वचन सरोष सुनि, रोष न करैं सुजान ॥ १२ ॥
सो०–यौं कहि पुनि रघुराय , लै उसास ह्वै सोचवश ॥
बोले अति अकुलाय, हाय लषण यह काकियो ॥ १३ ॥
मुहि इमि परत जनाय, पंचवटी सीता नहीं ॥
लीनीनिश्चर खाय, कै हरिकै हरि लै गयो ॥ १४ ॥
यौं करि अमित बिलाप, सोचत जल मोचत दृगन ॥
हृदय बढत संताप, छिन छिन चले उताल अति ॥ १५ ॥
बंधुसहित रघुवीर, आये आश्रम दूरिते ॥
सूनी निरखि कुटीर, भये अधीर सुवीर दुहुँ ॥ १६ ॥
तहँते आतुर धाय, आय परणशाला लखी ॥
विकल भये रघुराय, इत उत अविलोकत चहूँ ॥ १७ ॥
बोले निपट अधीर, हाय लषण प्यारी कहाँ ॥
कहूँ धनुष कहुँ तीर, गिरो गात कंपित भयो ॥ १८ ॥
पुनि अतिही अकुलाय, गिरे भूमि विलपन लगे ॥
हाय प्रिया रटलाय, टेरत अरु हेरत चहूँ ॥ १९ ॥
बहुरि उठे रघुराय, धाय धाय हेरत विकल ॥
टेरत हैं चहुँ जाय, आवो प्यारी कित गई ॥ २० ॥
लषण अमित दुखछाय, धाय धाय हेरैं चहूँ ॥
कितहुँ न परै लखाय, तब पुनि खोजैं टेरि कै ॥ २१ ॥
येही विधि दुहुँ भाय, सर सरिता गिरि विपिन चहुँ ॥
धाय धाय अकुलाय, हेरी सियहि न कहुँ लखी ॥ २२ ॥
तब अति भये अधीर, रघुवर तन मन सुधि गई ॥
बढ़ी विरह दुख पीर, धाय धाय बूझत सबहि ॥ २३ ॥
ताछिन कछु न जनाय, को हम किहिते का कहत ॥
जड़ चेतन इक भाय, सबहीते बूझत विकल ॥ २४ ॥
दोहा–पंकज सम कर पद मृदुल, पंकजसे दृग लाल ॥
हेपंकज ! कहु तुम लखी, पंकज वदनी बाल ॥ २५ ॥

हे कदंब ! प्रिय ताहिविन, भयो कलेश कदंब ॥
कहि कदंब सुख देहु जो, तुम कहुँ लखी कदंब ॥ २६ ॥
हौं सशोक प्यारी विना, मोको करहु विशोक ॥
लखी कहूँ ममवल्लभा, बोलो वेगि अशोक ॥ २७ ॥
कदली सम ऊरू युगल, कदली दलसी पीठ ॥
हे कदली मो भामिनी, कहूँ परी तुव डीठ ॥ २८ ॥
विन कुरंगनैनी प्रिया, मोतन भयो कुरंग ॥
तुम कहुँ हेरी होय तो, बोलो वेगि कुरंग ॥ २९ ॥
चक सारस शुक मोर पिक, हे खंजन अलिमाल ॥
लखी होय कहुँ मैथिली, तौ मुहिं कहो उताल ॥ ३० ॥
इहि विधि बूझत विकल अति, विनवत सबहि निहोरि ।
जोरि जोरि कर कहत हैं, कहो प्रिया कित मोरि ॥ ३१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सुवट तमाल ताल कदम रसाल साल देखो इहि काल मो विहाल मन ह्वै गयो । प्यारी संग छूटो पुण्य खोटो भाग फूटो मोहिं विरह जुलूटो यो अपार दुख छै गयो ॥ रसिकविहारी पढि डारी भुरकी धौं कोउ मोरी तिय भोरीको भुराय छलकै गयो । मौन क्योंरहौरे निठुराई ना गहोरे कोऊ नेकतौ कहौरे को प्रियाको हरि लैगयो ३२॥ केहरि कुरंग कपि कुंजर भुजंग भालु धाय ढिग आय नेक धीरज धरावोरे । निपट अधीन प्राणवल्लभाविहीन हौं तौ हीन छीन दीन देखि दाया उर लावोरे ॥ रसिकविहारी प्यारी रूप उजियारी वह कित बनचारी एक वारी तौ बतावोरे । सबहि निहोरौं लाज छोरौं कर जोरौं हाय कोऊ मोहिं मेरी मनमोहनी मिलावोरे ॥ ३३ ॥ मोंविन सुजाके हिय छिनहू न होतो कल सोक्यौं निठुराई करि मनको जितैगई। रूप गुणवारी हाय जनकदुलारी प्यारी नेक कृपा कोर मेरी ओर न चितै गई ॥ खग मृग रसिकविहारी हौं दुखारी मोको वा ढिग पठावो प्रिया भामिनी तिते गई । दीन अविलोकि मोहिं कोऊ तौ बतावो आय हाय वह मेरी प्राणवल्लभा कितै गई ॥ ३४ ॥ येहो भूमि भूधर

मतंग मृगराज मृग मोदिशि निहारौ तो वियोगी दीन वागोंहों ॥ गोदावरि पंचवटी विटप विहंग बेलि मेरो दुख हरहु तिहारे पाँय लागोंहों ॥ क्षत्री जाति यदपि न याचिवो उचित मोको रसिक बिहारी या विरह भीति भागोंहों । हौं तो रघुराज पै विहाय सब लाज आज देहु मोहिं कोऊ मैं प्रियाको दान माँगौं हौं ॥ ३५ ॥

चौ०–यौं बहु सबहि निहोरत धाई ❀ कतहुँ न कछू प्रिया सुधिपाई॥ बैठे इक तरुतर अकुलाई ❀ तब बोले लछमनहिं रिसाई३६

घनाक्षरी कवित्त।

विकल वियोगी दीन अबल विलोकि मोतें जेते जड़ चेतन ते सबै मुख फेरो है ॥ राय है अधीन कर जोर मैं सुनाई विनय दया करियेको नेक मोतन न हेरोहै॥ छिनमें विदारौं इन पापी अभिमानि-नकों जानत नरोष रघुवंशको करेरो है ॥ रसिकबिहारी प्राणप्यारी ना बतावै कोउ आन तो लषन धनुबान कित मेरो है ॥ ३७ ॥

लोक तिहुँ जारौं सातो सागर सुखाय डारौं गिरिन ढहाय डारों भूमि उलटाऊमैं ॥ रंचमें विदारि डारों दशो दिग पालनको खगन समेत शशि सूरहि गिराऊंमैं ॥ नभते पताल लैकै कितहूँ कहूँ जो नेक रसिकबिहारी प्राणप्यारी सुधि पाऊँ मैं ॥ जानकी न लाऊं तौ पै क्षत्रीना कहाऊँ राम नाम पलटाऊँ धनुबाणना उठाऊँ मैं ॥ ३८॥

सो०–रघुवर रोष निहारि, लषण कह्यो कर जोरि कै ॥
मिलि हैं जनक कुमारि, नाथ धीर उर धारिये ॥ ३९ ॥
मिलिहैं यह सुनि श्याम, विकल उठे अकुलायकै ॥
कहँ भामिनी ललाम, इत उत फिरि खोजन लगे ॥ ४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

हेरत चहूँघा हाय सीते कहि टेरतहैं रसिक बिहारी प्यारी मिलि क्यौं दुरानी है ॥ विरह व्यथाते है विहाल रघुराय जैसे काहू भाँति तैसी गति जाय ना बखानीहै ॥ उड़ि मग धूरि भूरि पूरि रही श्याम गात अधिक सुहात सो सुरीत दरशानी है ॥ हेरि निज नाथ तिय विरहे दुखारी मनों भूमि अकुलाय धाय उर लपटानीहै ॥ ४१ ॥

दोहा–राजकुँवर इमि दुखित अति, खोजत सिय चहूँ ओर ॥
कहुँ बूझत हेरत कहूं, कहुँ टेरत करि शोर ॥ ४२ ॥

धाय परणशाला लखत, धाय लखत बन जाय॥
प्रिया विरह व्याकुल निपट, विलपत करि करि हाय॥४३॥
कहुँ न मिली प्यारी तबै, परणशाल ढिग धाय॥
आय गिरे मूर्छित विकल, कहत बचन विलपाय॥ ४४॥

घनाक्षरी कवित्त।

चलत अपार जल धार दुहुँ नैननते, नेक हू सम्हार सार हैन तन प्रानकी॥ झांवरो भयो है मुख, बावरो भयो है चित्त, धावरो भयो है जीय सुधि न अपानकी॥ रसिकबिहारी धनुधारी सिय प्यारी बिन, जैसे हैं दुखारी गति तैसी ना बखान की॥ लाय लाय सुरति, प्रियाके गुण गाय गाय बोले विलपाय हाय हाय हाय जानकी॥ ४५॥ हाय मृगनैनी हाय प्यारी सुखदैनी, हाय प्रिया वर वैनी विनतोहिं कित जाऊंमैं॥ हाय हाय जानकी सुहाय प्राण प्राणकी जुहाय गति प्राण की या किहिको सुनाऊंमैं॥ रसिकबिहारी हाय सुरति बिसारी प्यारी छिन छिन भारी कैसे दिवस बिताऊं मैं॥ हाय प्राणवल्लभा किशोरी क्यौं दुराय रही नेक मिल आय धाय अंकसो लगाऊं मैं॥ ४६॥ लाय जा सु अंक नेक बचन सुनाय जारी नाय जा हिये में रस मरत बचायजा॥ चाय जा दयातें प्रीति रीति में हिताय जारी ताय जा वियोग प्रिया प्रेमको निभायजा॥ भायजा घनेरी मनमोद उमगाय जारी गाय जा सुगीत की तनीतहि बिछायजा॥ छायजा छबीली सुख रसिकबि-हारी प्यारी हाय फेर आय एक बार तौ मिलायजा॥ ४७॥ जीय अकुलावै तब कौन जो धरावै धीर हाय टक लाय चाय काको रूप हेरौं मैं॥ कोहै उमगाय धाय उर लगिजाय आय हिय हुलसाय काके गल भुज गेरौं मैं॥ नेह सरसाय को मनाय गहिलेवे अंक कोहै इमि जातें इतराय मुख फेरौं मैं॥ प्यार करि मोकों अब प्यारेको पुकारै हाय रसिकविहारी काहि प्यारी कहि टेरौंमैं॥ ४८॥

दोहा—विरह वीर बाढ़ी अधिक, तन मनकी सुधि हैन॥
भयो चित्त भ्रम मत्त सम, बोलत अलबल बैन॥ ४९॥

सवैया कवित्त।

दूरहिते मुहिँ देखतहीं तहँ जाय दुरी छलतें रस भीनी ॥
आज प्रमोद मई रसिकेश विनोद की रीति नई चित दीनी ॥
बैठि रहीं पटघूँघट घाल सुमेरी विहाल दशा यह कीनी ॥
क्यों तरु ओट गही नवला अब आवो भला हौं कला लखिलीनी ॥
फेरि भुजा गहि आपने आपहि बोलत नेह भरे रघुराई ॥
हाय छबीली रहीं अबलों कित क्यौं यह आज लई निठुराई ॥
यौं कहि चौंकि चहूं चितवैं कहँ प्यारी गई विलपैं अकुलाई ॥
टेरैं बहोरि प्रिया इत आवोजू आवो तुमैं रसिकेश दुहाई ॥ ५१ ॥
पुनि वेलिन धाय गहैं भरि अंक निशंक हिये हुलसावत हैं ॥
यह वाटिका प्यारी रची करते कहि यौं अति नेह बढ़ावत हैं ॥
इत प्राणप्रिया नित डोलत ती रजलै रसिकेश लगावत हैं ॥
हरषावत हैं उमँगावत हैं अकुलावत हैं विलपावत हैं ॥ ५२ ॥

दोहा—यौं विलपत दिन बीति गो, अथवन लागो भान ॥
साँझ समै लखि राजसुत, प्राण अधिक अकुलान ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

विरह विहाल रघुराई को लखाई परी औचक ललाई मंजु अथवत भानकी। रसिकविहारी उमगाय उठिधाये वेगि बंधुहि बुलाय बोले भूली सुधि प्रानकी ॥ आवो वेगि धावो समुझावो औ मनावो गहि लावो तुम जावो आन मानैं हैं न आनकी ॥ आयकै परानी जात बहुरि हिरानी जात देखो देखो लषण दुरानी जात जानकी ॥ ५४ ॥

दोहा—निरखि दशा रघुलालकी, विकल सुमित्रा लाल ॥
गदगद हिय दृग जल बहत, बोले वचन विशाल ॥ ५५ ॥
देखि रावरी विकलता, मोजिय अति अकुलात ॥
जनक सुता मिलि हैं बहुरि, धीर धरौ उर तात ॥ ५६ ॥
सुनि सुबंधुके वचन वर, राम कही विलपाय।
पंचवटी प्यारी बिना, मोपै लखी न जाय ॥ ५७ ॥
यौं कहि लै धनुबान असि, कटि कसि वेगि निषंग।
चले राम व्याकुल अतिहि, गमने लछमन संग ॥ ५८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

खोजत पियारी चले विरह दुखारी राम रैनि उजियारी माहँ बंधु बाँह गहि कै। सुधि बुधि भूली रघुराय अकुलाय बोले विलमौ घरीक तात तरु छाँह लहिकै॥ आतप सहो न जात लषण कही हो नाथ रसिकविहारी रहि चंद्रिका उलहि कै। सुनिकै मृगंक नाम झझकि उठे हैं राम हाय मृगनैनी हाय चंद्रमुखी कहिकै॥ ५९॥

दोहा–पुनि शशि ओर निहारि कै, कही रोष उर धार॥
अरे चंद मतिमंद तू, क्यों न भयो जरि छार॥ ६०॥

सवैया कवित्त।

मंदर ते दबि तू नगयो अरु राहु न लील लयो वरियाई॥
मोहिं वियोगी विलोकि जरावत रे शशि तैं हूँ भयो दुखदाई॥
मैं रसिकेश मयंक अबै तुहि कै शत खंड जु देंहु गिराई॥
प्राणप्रियामुखकी अनुहारि निहारि तजैं तुहिं चंद्र कसाई॥ ६१॥

दोहा–पुनि बोले वर बंधुसों, सुनौं लषण दृढ बैन॥
जनकनंदिनीके बिना, अब मो प्राण रहै न॥ ६२॥

घनाक्षरी कवित्त।

कीने मैं अनेरे कोटि जनम घनेरे दोष है कै इकठाम आय करनी सुजागी है॥ जाते प्रतिशोक शोक संतत अपार होवै हेरि जिहि बीरता सु वीरताहु भागी है॥ तातको विछोह भ्रात मातको विछोह राज साजको विछोह यौं विपत्ति संग लागी है॥ रसिकविहारी महि मंडलमें मेरी जान मोसम न कोऊ कहूँ दूसरो अभागीहै॥ ६३॥ राजकाज छूटो सखा सुजन समाज छूटो सब सुखसाज छूटो कीनो ना विचारमैं॥ तापस कहाऊँ कंद मूल फल खाऊँ गिरि कानन रहाँऊँ सोउ लीनो मनमारमैं॥ येते बहु कठिन कलेश सहि राखो तनु रसिकबिहारी करौं कहलों सम्हार मैं। अबतौ निदान प्रान देहौं प्रानप्यारी हेत सैहौं ना वियोग दुख दुसह अपार मैं॥ ६४॥ धिग गुन ज्ञान धिग आन बान सानकाने धिग है कृपान धनु बान करलीवे कों॥ धिग सब आज राज कांज औ समाज साज धिग

ममशर्म पर्म धर्म कर्म कीवेकों ॥ धिग सत बैन नैन शैन ऐन चैन धिग धिग है अशन धिग नीर क्षीर पीवेकों ॥ रसिकविहारी प्यारी जनकदुलारी बिन धिग तन प्रान धिग मेरे यह जीवेकों ॥ ६५ ॥ वसन दुराय धनुबानको वहाय तन भसम रमाय कंद मूल फूल खाऊंगो ॥ बैठौं दूरिजाय गिरि कंदर दुराय निज प्यारी गुन गाय वन जनम बिताऊंगो ॥ रसिकविहारी बंधु सदन सिधारौ तुम हौं तौ अब येही प्रण सत्य ठहराऊं गो ॥ पाऊं गो प्रियातौ औध लाऊंगो दिखाऊं मुख नातर छबीली ढिग प्राण मैं पठाऊंगो ॥ ६६ ॥

दोहा–सुनि लछमन अति विकल ह्वै, भ्रात चरण धरि माथ ॥
हाथ जोरि बोले दुखित, काह कहो इमि नाथ ॥ ६७ ॥
जो पै प्रभु सर्वज्ञ ह्वै, इहिविधि होत अधीर ॥
लहि कलेश पुनि इतर जन, धारैंगे किमि धीर ॥ ६८ ॥
पुनि मर्यादा सिंधु ह्वै, तिय हित त्यागत प्रान ॥
धीर वीर हिय सोचिये, नाथ परम मतिमान ॥ ६९ ॥
सुनि सुबंधु वाणी बहुरि, बिलखि कही रघुराय ॥
लषण अबै जानौं न तुम, प्रीत विरह कह आय ॥ ७० ॥
सत्य सनेही होत जो, प्रिय बिछुरे निज प्रान ॥
तृण सम त्यागत तात गति, लखो कहौं कह आन ॥ ७१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

पूँछौ उमगै क्यौं सिंधु पूरण मयंक देखि पूछौ तौ कमोदिनी बिलोकि भानु क्यों लजै। पूँछौ तौ पपीहै क्यौं न पीवै नीर स्वाती बिन पूँछौ तौ मलिंदै क्यौं न चाहै चंपकी रजै ॥ रसिकविहारी चित्त रीतिहै अलक्ष जब पूँछौ बहु ठौर तब शंका हीयते भजै। पूँछौ तौ पतंगै क्यौं जरै है धाय दीपकमें पूँछौ वारिके विहीन मीन जीव क्यों तजै ॥ ७२ ॥ चारि षट् बहुरि अठारह विचार देखौ सात नव तीनमें निहारौ सब साजलों। सज्जन प्रवीन कवि कोविद धुरीन देव मानुषगुनीन पूँछौ सकल समाजलों। भूत औ भविष्य वर्तमान अनुमान लेहु हेरो बुधिहीन भूप रंक शूर राजलों ॥

रसिकबिहारी चर अचर विलोकौ पै न प्रीत करि कोऊ सुखपायो काहूँ आज लों ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त।

होत नहीं चित रंचहु चैन करै कतलाम वियोग छुरी है ॥
छूटत है कुलकानि औ लाज फिरै मन ज्यौं चहुँ तेजतुरी है ॥
जाहर होत जहानमें सो नरहैं कहुँ एकहु भांति दुरी है ॥
हायहहा अब कीजे कहा रसिकेश या इश्क बलाय बुरी हैं ॥ ७४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छूटि जात खान पान भूषन वसन भौन छूटि जात वित्त देश प्रेमकी पगनमें ॥ तात मात दारा पति पुत्र सखा बंधु छूटै तन मन प्रान छूटै नैनकी खगनमें ॥ रसिकबिहारी नेम धर्म परलोक लोक छूटि जात मोद बहु चित्तकी ठगनमें। येते सब छूटि जात रंचहु न लागै बार विरह न छूटै नेक नेहकी लगनमें ॥ ७५ ॥

दोहा—नेह सिंधु यह अगमहै, कोऊ लहै न अंत।
सत्य नेह तजि जगतमें, और नहीं कछु तंत ॥ ७६ ॥
हौ तौ सांचे नेहके, रहत सदा आधीन ॥
नेह अपूरव वस्तु तिहि, अबलों लषण न चीन ॥ ७७ ॥
हाय लषण यह प्रीतकी, रीत प्रिया मम जान ॥
सो न निकट हौ नेहको, कासों करौं बखान ॥ ७८
लखौ लषण प्यारी बिना, हौं किमि भयो मलीन ॥
ऐसिहि ह्वैहै सीयकी, गतिमों संग विहीन ॥ ७९ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

देह विन प्रान जैसे दिन विन भान जैसे चूना विन पान जैसे कूप विन वारी है॥रैनि विन चंद जैसे तालविन कंज जैसे कुल विन पुत्र जैसे फूल विन क्यारीहै ॥ भूपविन भूमि जैसे पत्र विन वृक्ष जैसे दीप विन भौन जैसे वीर विन रारी है ॥ रसिकबिहारी जैसे प्यार विन यार सूनो प्यारी विन लाल तैसे लाल विन प्यारीहै॥८०॥

सवैया कवित्त।

बिरही समुझायहु धीर हिए नधरै न धरै न धरै न धरै ॥
जगलो गहि सो रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै ॥
निज प्रीतमके विन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भरै ॥
विधि काहुहि प्रीय विछोह कबौं न करै न करै न करै न करै ॥८१॥
फलहै तिहि के शत कर्मनको जिहिके जिय माहिं सदा कल है ॥
कल है नाहिं जाहि कलेशनते न लगै कहुँ ताहि कछू भल है ॥
भल है रसिकेश सदा अति सो हठिकै दृढ़ प्रेमहि जो न लहै ॥
नल है निज मीत वियोग कबौं जगजीवनको सुयही फल है ॥८२॥

दोहा—इहि विधि वर्णत लषणतें, प्रीत विरह दुख भीति ॥
जनकसुतहि खोजत चहूँ, गई रैनिसबबीति ॥ ८३ ॥
कहूँ न पाई प्रियहि पुनि, भये विकल रघुराय ॥
बंधु कंध धरिकै भुजा, बोले अति विलपाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंक द्युति चंपा अरु संपा चपलाई लई कंज कोमलाई मंजु गजगति लीनी है । लोचन कुरंग दंतदाडिम अधरबिंब पल्लव सुपानिहैरं ग्री वा कंबु छीनी है॥श्रीफल उरोज केशपन्नग कुमार लीने रसिकविहारी यह प्यारी गति कीनी है । लंकहारिकानन कलंक औ मयंक मुख रंक सब लैकै एक शंक मोहिं दीनी है ॥ ८५ ॥

दोहा—यों कहि करगहि लषणको, मग डगमग पग चाल ॥
कहत सियाको रूप गुण, बूझत चले विहाल ॥ ८६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

सुजन विहीन सुख हीन तनछीन दीन विकल अधीन सोकली-न दुख वोरीसी ॥ रसिकविहारी वरवेनी है विथोरी शीश विषम वि-योगमें लथोरी वैसथोरीसी ॥ विरह विलोरी नेह सिंधुमें हिलोरी बा-ल निपट न जोरी औ लजोरी अति भोरीसी । बूझो करजोरी प्रिया मोरि गई चोरी कोउ देखी कहूँ नवलकिशोरी एक गोरीसी ॥८७॥
दूजी नाहिं नारी जग जाकी अनुहारी और तेज गुण भारी त्यों अ-नूप छवि न्यारी है॥ पीत रंगसारी हेम भूषण विचित्र धारी चंपाद्युति

हारी मंजुकेसरकी क्यारी है ॥ रसिकविहारी सुखकारी सो अपारीनव अति सुकुमारी चारु आनन उज्यारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि ऐसी रूपवारी सो हमारी प्राणप्यारीहै ॥ ८८ ॥ अमल कपोलवारी मंजु मुख गोलवारी कोमल सुबोलवारी लोलदृगवारी है । पानिप अमोलवारी सुमति अडोलवारी कानन कलोलवारी हीय सुखकारीहै॥सुचित अलोलवारी सरस सुडोलवारी रसिकविहारी त्यौं अतोल चाह धारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि ऐसी रूपवारी प्राणप्यारी सो हमारीहै ॥ ८९ ॥ दीपति अभंग वारी हृदय उमंगवारी छोटे अंग वारी रंग वारी ढंग वारीहै । झीने जीलवारी अति खीनेडीलवारी चारु वेनी लटवारी सुखदेनी सीलवारी है ॥ रसिकबिहारी सटकारे कारे केशवारी वेस भेस वारी मिथिलेश देशवारी है । कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगिं प्यारी सो हमारी हैं जु ऐसी रूपवारीहै ॥ ९० ॥ भ्रुकुटी कमानवारी तीखे नैन बानवारी हँसनि कृपानवारीभारी सानवारीहैं ॥ वदन विशालवारी अधर प्रबाल वारी पानी पदलाल वारी मत्तचाल वारीहै॥ रसिकविहारी नेहवारी दिव्य देहवारी संतत अछेहवारी सत्य नेहवारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तौ बतावो वेगि प्यारी सो हमारी है जु ऐसी रूपवारी है ॥ ९१ ॥

तोटक छंद ।

इमि दीन सुवैन जु बोलत हैं ॥ वनिता विरही वन डोलत हैं ॥
जबहीं नव फूलनको निरखैं ॥ तबहीं करि हाय हिए करखैं ॥९२ ॥
अविलोकि रसाल न मौरन को ॥ पुनि हेरि लता तरु ओरन को ॥
रघुलाल विहाल जु होय रहे ॥ अकुलाय मनोजहि बैन कहे ॥९३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

येरे मैन नृपति अनीति तू न ऐसी कर तोहिं निरमोही नेक दाया ना शरम है ॥ तानै बाणमोपै कहा मैंतो हौं वियोगी दीन जारो मम अंग विरहागिनी परम है ॥ रसिकविहारी टुक मो दिशि निहारी धीर धरि दे धनुष यह निंदित करम है ॥ वैसही मरोहौं प्राणप्यारीके विछोह हौं तौ मृतकहि मारवो न वीरको धरमहै ॥ ९४ ॥

दोहा—यौं कहि कै कछु दूरि चालि, पुनि बोले रघुनाथ ॥
अरे मदन शर पाँचहू, छोड़ि हिये यकसाथ ॥ ९५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

येरे पंचबाण पांचौ बाण भले मारे मोहिं, वीर तुव रोष यह अति उपकारी भो ॥ सब दुख छूटो विरहानलकी ज्वालन ते तो शर समेत मम अंग जर छारी भो ॥ अब विन तीरके न ह्वैहै बरियाई तो पै मैन तू निरायुध निपट दुखकारी भो ॥ कोऊ भीति मानिहै कहूँ ना रंच तेरी सदा रसिकबिहारी लोक सकल सुखारी भो ॥ ९६ ॥

सो०—या विधि विरह विहाल, बिलपत हेरत फिरत हैं ॥
तिय विछुरनकी ज्वाल, बढी न नेक सिरात है ॥ ९७ ॥
हेरत हेरत श्याम, बैठ गये मग बीचही ॥
निज मनहीं मन राम, सोचतहैं चित चकितह्वै ॥ ९८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आजलों सुनीना कहूँ ऐसी रघुवंश माहिं रसिकबिहारी भई जैसी यह बातहै ॥ ऐसो को जु हेरै रघुवंशिनकी वाम ओर गति भवितव्यते न काहूको बसातहै ॥ इतै महि सासुके सँकोच सकुचात अति कुलपति भानु उतै तिनहिं लजातहैं ॥ नीचौ अरु ऊंचो मुख करत न राम याते सौहें दृग दीने बैठे मन अकुलातहैं ॥ ९९ ॥

सो०—येजू राजकुमार, लषण कहो अकुलायकै ॥
आतप तपनि अपार, इतते उठि तरुतर चलिय ॥ १०० ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

सुनी बंधुकी वाणि राजीवनैना । तबै दीन ह्वै लाल बोले सुबैना ॥
जबै ते सिया प्राणप्यारी बिछोही। तबै ते सबै देतहैं ताप मोही १०१
शशी शीतहै सो घनो अंग जारै । त्रिधापौन सोऊ हिये वज्र मारै ॥
घरीहू रहै द्यौसना धीर धारी । कटैहै न मोको भई रैनभारी १०२॥
लखौं नैनमें शूलसे फूल लागैं । करैं शोर पक्षी चहूँ दाग दागैं ॥
कहूँ कैसहू रंचना चित्त पागै । छबीली विना प्राणहूँ भार लागै १०३
कहाँ जाउँ कासो कहौं का करौंमैं । महा सोचको सिंधु कैसे तरौंमैं ॥
न कोऊ कहूं मोहिं ऐसो लखावै । धरावै हिये धीर प्यारी मिलावै १०४

चौ०-सुनि अधीर राघवकी बानी ❀ समुझाये लछमन गहि पानी ॥
तब कछु धीर धारि रघुराई ❀ बोले बहु गलानि उर छाई १०५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कनक कुरंग कहुँ आज लों न देखो सुनो ताके हेत बिनहिं बिचार उठि धायो मैं । नारिमत आयो खल छलको न ज्ञान लायो. निपट दुरायो चेत सकल भुलायो मैं ॥ मोसम न कोऊ बुद्धि-हीन है त्रिलोक माहिं रसिकबिहारी यह दृढ ठहरायो मैं ॥ ऐसी मति मेरी तो नशावतो समस्तकाज याते भई नीकी राजत्यागि बन आयो मैं ॥ १०६ ॥

दोहा—यों रघुवर वरबंधुसे, कहत अनेकन बात ॥
सोच विवश विलपत विकल, सिय खोजत चहुँ जात १०७
मैं इत रघुवर विरहको, कीनो कछू बखान ॥
रामायण नाटक अधिक, देखो सकल सुजान ॥ १०८ ॥

प्र०। वाल्मीकीये ॥ आरण्यकांडे ॥ सर्ग ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ॥ श्लोक ॥

राक्षसं मृगरूपेण चरंतं कामरूपिणम् ॥ निहत्य रामो मारीचं तूर्णं पथि न्यवर्तत ॥ १ ॥ त्वरमाणो जगामाथ सीतादर्शनलालसः ॥ शून्यमावसथं दृष्ट्वा बभूवोद्विग्नमानसः ॥ २ ॥ यत्नान्मृगयमाणस्तु नाससाद वने प्रियाम् ॥ शोकरक्तेक्षणः श्रीमानुन्मत्तइव लक्ष्यते॥३॥ वृक्षाद् वृक्षं प्रधावन्स गिरींश्चापि नदीं नदम् ॥ बभ्राम विलपन्रामः शोकपंकार्णवप्लुतः ॥ ४ ॥ ककुभः करभोरूं तां व्यक्तं जानाति मैथिलीम् ॥ लतापल्लवपुष्पाढ्यो भाति ह्येष वनस्पतिः ॥५॥ यदि ताल त्वया दृष्टा पक्वतालोपमस्तनी ॥ कथयस्व वरारोहां कारुण्यं यदि ते मयि ॥ ६ ॥ किं धावसि प्रिये नूनं दृष्टासि कमलेक्षणे ॥ वृक्षैराच्छाद्य चात्मानं किं मां न प्रतिभाषसे ॥ ७ ॥ पीतकौशेयकेनासि सूचिता वरवर्णिनि ॥धावंत्यपि मया दृष्टा तिष्ठ यद्यस्ति सौहृदम्॥८॥ इत्येवं विलपन्रामः परिधावन्वनाद्वनम् ॥ क्वचिदुद्भ्रमते वेगात्क्वचिद्विभ्रमते बलात् ॥ ९ ॥ अदृष्ट्वा तत्र वैदेहीं संनिरीक्ष्य च सर्वशः ॥ उवाच रामः प्राक्रुश्य प्रगृह्य रुचिरौ भुजौ ॥ १० ॥ सीतया रहितोहं

वै न हि जीवामि लक्ष्मण ॥ वृतं शोकेन महता सीताहरणजेन माम् ॥ ११ ॥ तन्मामुत्सृज्य हि वने गच्छायोध्यापुरीं शुभाम् ॥नत्वहं तां विना सीतां जीवेयं हि कथंच न ॥ १२ ॥ नमद्विधो दुष्कृतकर्मकारी मन्ये द्वितीयोऽस्ति वसुंधरायाम् ॥ शोकानुशोको हि परंपराया मामेव भिन्दन् हृदयं मनश्च ॥ १३ ॥ पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि ॥ तत्रायमद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं य दहं वसामि ॥ १४ ॥

पुनः ॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक।

आलिंगिताऽत्रसरसीरुहकोरकाक्षी पीताधरेति मधुरो विधुमंडलस्य ॥ रंगावतारमकरंदविमर्दितानि पुष्पाण्यमूनि दयिते क्वगतेत्यरोदीत ॥ ॥ १५ ॥ हा जानकि प्रचलितोत्पलपद्मनेत्रे हा मे मनः कमलकाननराजहंसि ॥ एष प्रिये तव वियोगजवह्निदग्धो दीनं प्रयामि भवतीं प्रविलोकयामि ॥ १६ ॥ इत्यादि ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० रघुनंदनविलाप
वर्णनो नाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

दोहा—कहत परस्पर वचन बहु, सोच विवश अकुलात ॥
सिय खोजत दुहुँ बंधु चहुँ, विपिन चले मग जात ॥ १ ॥
कछुकदूर चलिकै लखे, कानन पंथ मझार ॥
रुधिर बिंदु जहँ तहँ परे, अरु विनाशित द्रुमडार ॥ २ ॥
तिहि आगे भूतल परो, रथ खंडित धनुबान ॥
अरु निश्चर पद चिह्न महि, देखत हिय अकुलान ॥ ३ ॥
तिहि विलोकि विलपायकै, कही लषण सों राम ॥
द्वै निश्चर सिय हेतु जनु, कियो इहां संग्राम ॥ ४ ॥
यौं सोचत कछु और चलि, लखो गृद्ध मग बीच ॥
तिहि विलोकि रघुवर कही, सिय लीनी यहि नीच ॥ ५ ॥
है निश्चर यह सिय भखी, गृद्ध रूप धरिलीन ॥
क्रोध सोच वश बंधु दुहुँ, धनुष बान कर लीन ॥ ६ ॥

चौ०-निकट जाय अविलोको ताही ❀ तब जानो जटायु यह आही ॥
धाय राम तिहि अंक लगायो ❀ भये विकल कछु वचन न आयो ७॥
पुनि बूझी रघुवर तिहि बाता ❀ सो कछु कही विकल बिलपाता ॥
सकल कथा वर्णन नाहिं पायो ❀ तौ लग प्राण कंठमधि आयो ८ ॥
तिहि रघुवीर अंक गहि राखो ❀ सो खग राम राम इमि भाषो ॥
हेरिवदन दिशि दृग भरि आँसू ❀ गृद्धराज त्याजो तनु आसू ९ ॥
गीधमरन लखि सानुज रामा ❀ कियो विलाप अतिहि तिहि ठामा॥
पुनि निजकरते समय समाना ❀ रामकृत्य किय सहित विधाना १०
तहँते चले बहुरि दुहुँ भाई ❀ दृग भरि करत जटायु बड़ाई ॥
खोजत फिरत सियहि चहुँ ओरा ❀ इकनिश्चरी मिली वन घोरा ११॥
उदर दीह कुच जंघन छाये ❀ दंत कराल केशविखराये ॥
कलुष अंग लीने मृगव्याला ❀ भक्षण करत निशंक निहाला १२
सो निशाचरी लषणहि देखी ❀ भई हृदय आनंद विशेषी ॥
धाय आय कर गहि लपटानी ❀ बोली मदन विवश ह्वै वानी १३॥
है अजामुखी नाम अनूपा ❀ मोसम तिय न कहूँ सुठिरूपा ॥
चलौ इतै घन विपिन अपारा ❀ तहँ हम तुम मिलि करहिं विहारा १४
सुनत वचन लछमन तिहि डाटी ❀ दुहुँ कुच श्रवण नासिका काटी ॥
सो कुरूप ह्वै अतिहि डरानी ❀ घोर शोर करि विकल परानी १५
चले बंधु दुहुँ पुनि निरभीता ❀ विपिन चहूँ दिशि खोजत सीता॥
लखो फेरि इक निश्चर भारी ❀ निपट कराल रूप भयकारी १६॥
शीश विहीन ग्रीव तनु कारो ❀ आनन उदर थूल वपु भारो ॥
विशिख दंत शोणित लपटाना ❀ दुहुँ भुज इक योजन परमाना १७
सो कबंध निज भुजा पसारी ❀ गहि लीने दोऊ धनुधारी ॥
भये विवश परि निश्चर हाथा ❀ दुख बहु लहो लषण रघुनाथा १८
पुनि औसर लखि राजकुमारा ❀ वेगि कृपानतान खर धारा ॥
दक्षिण भुजा राम तिहि काटी ❀ वाम बाहु लछमन द्रुत छाटी १९॥
भयो विकल जब तब अकुलाई ❀ बूझी सुनि जाने रघुराई ॥
पुनि नृपसुत पूछो तिहि हाला ❀ कहो कबंध समस्त उताला २०॥

निश्चर हो मैं सुभग अनूपा ❀ मुनिन सताऊं धारि कुरूपा ॥
तब अस्थूलशिरा ऋषि कोही ❀ दीनी घोर शाप यह मोही॥२१॥
खल तुव यह वपु रहै सदाई ❀ सुनि हों गिरो चरण पर धाई ॥
तब मुनि कही राम वन ऐहैं ❀ दुहुँ भुज काटि दाह तुहि दैहैं२२॥
शुद्ध रूप ताही छिन ह्वैहै ❀ रघुवर कृपा परम सुख पैहै ॥
सुनि मुनि वचन हीय हरषाना ❀ पुनि मैं विपिन महा तप ठाना२३
सो लखि विधि प्रसन्न अति भयऊ ❀ दीर्घ आयु हो यह वर दयऊ ॥
तब निशंक हौं सुरपति धामा ❀ कीनो जाय भूरि संग्रामा २४ ॥
कियो इंद्र तब वज्र प्रहारा ❀ गयो शीश मो उदर मझारा ॥
सो गति लखिहौं भये दुखारी ❀ बहु सुरेश प्रति विनय उचारी २५॥

दोहा—नाथ मोंहिं अब आजते, जिहि बिधि मिलै अहार ॥
कृपा लाय हिय देवपति, कीजे सो उपचार ॥ २६ ॥
तब सुरेश करिकै दया, दियो मोंहिं वरदान ॥
लंबित हो तुव भुज दुहूँ, योजन येक प्रमाण ॥ २७ ॥
पुनि तुव दुहुँ भुज काटि हैं, राम लषण वन माहिं ॥
दिव्य देह धरि अमरपुर, प्रमुदित सुखी रहाहिं ॥ २८ ॥
भयो सिद्धिवर इंद्रको, तबते विपिन रहाउँ ॥
करि केहरि मृग मनुष हौं, नित प्रति धरि धरि खाउँ ॥२९॥
सुनि कबंधवच बंधु दुहुँ, सिय सुधि पूछी ताहि ॥
सो भाषी मुहिं शाप वश, अबहिं ज्ञान कछु नाहिं ॥ ३० ॥
सर रचि मो तनु दाहिये, तब सुदिव्य तनु पाय ॥
यथा शक्ति वर्णन करौं, सीता मिलन उपाय ॥ ३१ ॥
सुनत बंधु दुहुँ सर रचो, तामधि तिहि बैठार ॥
दाह कियो प्रगटो सु तब, सुभग शुद्ध वपु धार ॥ ३२ ॥
कही सु तब हे राजसुत, कपि सुकंठ ढिग जाय ॥
करौ मिताई सो तुमैं, देहै सीय मिलाय ॥ ३३ ॥
पुनि मतंग वन वसति इक, नारी शबरी नाम ॥
शुद्ध भक्त तुव वृद्ध तिहि, दरश दीजियो राम ॥ ३४ ॥

नाम ठाम गिरि विपिन मग, रामहि सकल बताय ॥
गयो कबंध सु देवपुर, दुहुँ बंधुन शिरनाय ॥ ३५ ॥

हरिगीतिका छंद।

इमि सुगतिकारि सुकबंधकी दुहुँ बंधु पुनि तहँते चले ॥
बूझत विलोकत सियहि खोजत कर सजे धनु शर भले ॥
इत राम शबरी मिलन आतुर जात हिय उमगात है ॥
अनुरागिनी रघुचंद दरशनहेत उत हरषात है ॥ ३६ ॥
जब ते सुनी सबरी कि रघुवर चित्रकूटहि छाय हैं ॥
तहँ वास करि सानंद पुनि युत बंधु इहि दिशि आय हैं ॥
तबते सदा उठि प्रातही बहु दूर लौं मग झारही ॥
पुनि धाय छिन छिन जाय उर उमगाय पंथ निहारही ३७॥
कबहूं सुनिर्तत मगन मन सिय राम गुणगण गायकै ॥
कबहूं दुहूं द्दग मूँदि बैठत श्याम ध्यान लगाय कै ॥
कबहूं अनेक विचार करि करि हीय होत हिरास है ॥
कबहूं मुदित मन हँसत शबरी लगी दरशन आश है ॥ ३८॥
कबहूँ विचारत राम मेरे भवन किहि विधि आय हैं ॥
जो आय हैं तो भीलनी गुणि मुहिं न पद परसाय हैं ॥
कबहूं कहत मनमाहिं यों रघुवीर परम दयाल हैं ॥
लखि दीन दै हैं दरश मो कहँ सत्य जन प्रणपाल हैं॥३९॥
कबहूं विपिनबिच जाय बीनत बेर हिय हुलसायकै ॥
तिन चीखि मीठे जानि रघुवर हेत धरत सुखायकै ॥
कबहूं निहोरी मुनीन भाषत नाथ नहिं बिसराइयो ॥
तुवधाम आवैं राम तो मुहि दूरतें दरशाइयो ॥ ४० ॥
इहि भांति शबरी रहति निशिदिन रामपद अनुरागिनी ॥
तिहि धन्य भक्ति अनन्य पूरन शुद्धतिय बडभागिनी ॥
जिय जानि प्रीति प्रतीति सांची रामहिय हुलसायकै ॥
सौमित्र संयुत दरशदीनो ताहि बेगहि आयकै ॥ ४१ ॥
सो निरखि रामहि धाय उर उमगायकै चरणनपरी ॥

आनंद जल भरि नैन गदगद बैन वर विनती करी ॥
सिय नाथ शबरी हाथ गहि वेगै उठाई धीरते ॥
सोगहे लछमन पाँय धोये नेह युत दृग नीरते ॥ ४२ ॥
पुनि लाय शुचितृणसाथरी सुबिछाय बहु सनमानिकै ॥
हुलसाय वेगहि धाय जाय सुबेर दीने आनिकै ॥
रघुराय नेह बढाय लै सुख पाय सो फल खात हैं ॥
तिहि बार बार सराहि बहु विधि मुदित हिय बतरात हैं ॥ ४३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

विविध विधानके अनेक पकवान जेते होतहैं जहान मेरी जानसब सीठेहैं ॥ रसिकविहारी फल सरस रसाल आदि तेऊ यह स्वाद पाय सकल उवीठे हैं ॥ कंद मूल अधिक अतुल रुचिकारी सोऊ एकहू न इनकी समान मोहिं दीठेहैं॥ रंचहून सीठे ना उवीठेयोंनदीठे कहूं लषण कहौतो सत्य कैसेबेर मीठे हैं॥४४॥ब्रह्मके उपासी तपराशी वनवासी वर विपुल मुनीशनके आश्रम सिधायो मैं ॥ कीने सनमान तिन सहित विधान तऊ काहू ठौर कबहुँ न पेट भरि खायो मैं ॥ अमृत समान शबरीके इन बेरनमें रसिकविहारी मन भायो स्वाद पायो मैं ॥ अवध विहाय वन आयो जब ते हों बंधु तबते विचारौ सत्य आजही अघायो मैं ॥ ४५ ॥

दोहा–शबरी सुनि रघुवर वचन, हिय फूली न समाय ॥
धाय धायकै छिनहि छिन, देत मधुर फल लाय ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बेर बेर बेरलैं सराहैं बेर बेर बहु रसिकविहारी देत बंधु कहँ फेर फेर ॥ चाखि चाखि भाषैं यह वाहु ते महान मीठो लेहु तौ लषण यौं बखानतहैं हेरहेर ॥ बेर बेर देवै बेर शबरीसु बेर बेर तोऊ रघुवीर बेर बेर तिहि टेर टेर ॥ बेरजनि लावो बेर बेर जनि लावो बेर बेर जनि लावो बेर लावो कहैं बेर बेर ॥ ४७ ॥

सो०–इहि विधि रघुकुल चंद, अशन कियो फल बंधु युत ॥
शबरी प्रति सानंद, बोले सत्य सनेह भरि ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सदन सिधाऊँ पाऊँ व्यंजन अनेक तऊ याके सम एकहू पदारथ न तूलैगो ॥ करि करि प्यार मातु अशन करैहैं जब मेरे हीय तबहिं सनेह यह शूलैगो ॥ आजको अपार सुख कहँलो बखानौ सब छिन छिन नित प्रति चित्त अति फूलेगो ॥ शबरी तिहारे इन बेरनको स्वाद मोहिं रसिकविहारी कहूं कबहूं न भूलैगो ॥ ४९ ॥

दोहा–यौंहीं परम प्रमोद भरि, वचन कहे बहु राम ॥
सुनि शबरी मन मुदित ह्वै, विनय करी अभिराम ॥ ५० ॥

चौ०–ताही छिन सब मुनि सुधिपाई ❀ लषण सहित आये रघुराई॥
शबरीके आश्रम पग धारे ❀ यह सुनि लजित भये ऋषि सारे॥
भक्तिअधीन राम कहँ जानी ❀ आये तहँ मुनिवर विज्ञानी ॥
मिले यथोचित लछमन रामा ❀ बैठे सब शबरीके धामा॥५२॥
राम लषण अरु मुनि समुदाई ❀ करत परस्पर विनय बडाई॥
पुनि ऋषिवर बोले धनुधारी ❀ हम इत जल बिन रहत दुखारी
है सर सुभग भरो गंभीरा ❀ पै नाहिं ग्रहण योग तिहि नीरा॥
रुधिर वरन वन कीट अपारा ❀ बहु कुगंध नाहिं जाय निहारा५४
सो रघुवर तुव पद परसावे ❀ तौ वह नीर शुद्ध ह्वै जावे ॥
सुनि बूझी सियनाथ प्रवीना ❀ किहि कारण जल भयो मलीना॥
तब मुनि कही हेतु यह आई ❀ शबरी न्हातरही निशिजाई ॥
औचक एक समै लखि लीनी ❀ ताही दिवस बरजि यहि दीनी५६
पै सुनीर इन बहु दिन परसो ❀ याते मलिन भयो सर सरसो ॥
अब तुव चरण लागि शुचि होवै ❀ हम सबको अपार दुख खोवै ५७
सुनि रघुनाथ कही मृदुबानी ❀ हौसमस्त मुनिवर विज्ञानी ॥
परम शुद्ध शबरी कहँ जानौ ❀ याते कछु दुरभाव न मानौ ५८॥
शबरी अबहिं संग तुव जावै ❀ सर नीरहि निज पद परसावै ॥
होय तड़ाग शुद्ध इहिकाला ❀ सकल अमल जल लेहु उताला५९
यौं कहि पुनि बोले रघुवीरा ❀ सुनहु सकल मुनिगण मतिधीरा॥
हौं रंचहु छल छिद्र न राखौं ❀ जो मुहिं रुचै सत्य सो भाखौं६०

दोहा–योग याग जप त्याग तप, नेम धर्म व्रत दान ॥
इन सबहीते अधिक मुहि, सत्यसनेह सुहान ॥ ६१ ॥
ऊँच नीच कोऊ करै, सत्य प्रीति मो माँहि ॥
होय अधमते अधमपै, तिहि वश रहौं सदाहिं ॥ ६२ ॥
सुख दुख संपति विपतिमें; जिहि दृढ़ ममविश्वास ॥
हौं ताकी दुहुँ लोक मधि, पूजौं सिगरी आस ॥ ६३ ॥
जो मेरो जनहोइकै, करै और की आस ॥
ताको नामहु सुनतही, मोजिय होत उदास ॥ ६४ ॥
सोरठा–इमि अनेक वरबैन; रघुवरके सुनि मुनि सकल ॥
भरे प्रेम जल नैन, भयो महा आनंद उर ॥ ६५ ॥
ऋषि समस्त मतिमान, विविध भाँति अस्तुतिकरी ॥
जै जै कृपानिधान, अधम उधारन धर्म धर ॥ ६६ ॥
चौ०–पुनि मुनि राम रजायसुपाई ❀ शबरिहि सरतट गये लिवाई ॥
तहँ बोले समस्त ऋषि ज्ञानी ❀ परसावो पद सुनि सकुचानी ६७
पुनि शबरी रामहि शिर नायो ❀ सर जल माँहिँ स्वपद परसायो ॥
भयो शुद्ध पगलगत सुनीरा ❀ निरखत रहे चकित मुनिधीरा ६८
सब ऋषि धन्यवाद तिहि दीना ❀ आये रघुवर निकट प्रवीना ॥
तिनाहि यथोचित मिलि दुहुँ भाई ❀ बिदाकिये आनंद बढ़ाई ॥ ६९ ॥
पुनि शबरिहि बूझी रघुराई ❀ तुम कछु जनकसुता सुधि पाई ॥
सुनि बोली सुकंठ ढिगजावो ❀ तिहिसहायते सीतहि पावो ७० ॥
तब रघुनाथ कहीतिहि पाहैं ❀ तव गुरु थल हम देखन चाहैं ॥
सुनि शबरी दुहुँ नृप सुत संगा ❀ चलि दरशायो सहित उमंगा ७१
विपिन विचित्र लता द्रुम नाना ❀ परमरम्य नहि जाय बखाना ॥
विमल प्रकाश रैनि दिन रहई ❀ त्रिविध समीर सुखद नित बहई ७२
सत्यसिंधु जलमय सरसोहै ❀ जिहि लखि मान सरोवर मोहै ॥
दल फल फूल सकल सब काला ❀ रहैं एक ढिग केहरि व्याला ७३ ॥
लखि मतंगवन केर प्रभावा ❀ राम लषण हिय बहु सुख पावा ॥
पुनि शबरिहि बोले रघुराई ❀ जाहु धाम अब हिय हुलसाई ७४

तब शबरी रघुवर पगलागी ❀ करि बहु विनय भक्ति दृढ माँगी॥
शुद्ध प्रीति लखि कृपानिधाना ❀ दियो यथारुचि तिहि वरदाना ७५
पुनि शबरी सर विरचि उताला ❀ दही देह योगानलज्वाला ॥
दिव्यरूप लहि बैठि विमाना ❀ मुदित कियो सुरधाम पयाना ७६

दोहा—उत शबरी धरि दिव्य तन, मुदित गई सुरधाम ।
इत सुग्रीवहि मिलनहित, चले बंधु युत राम ॥ ७७ ॥
सीतहि खोजत बंधु दुहुँ, चहुँ गिरि बिपिन मझार ॥
आये पंपासर निकट, हेरी छटा अपार ॥ ७८ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० वनअटन वर्णनो नाम चतुर्थोविभागः ॥४॥

दोहा—पंपासर शोभित विशद, विमल नीर गंभीर ।
सुभग विपिन दरशत चहूँ, सरसत त्रिविध समीर ॥ १ ॥
द्रुम वल्ली दल फूल फल, विविध अनूपम रंग ।
छाय रहो ऋतुराज चहुँ, कूजत विपुल विहंग ॥ २ ॥
लखि वसंतऋतु राम अति, त्रिलपत प्रिया विहीन ।
ह्वै अधीर गहि बंधु कर, कहत वचन अति दीन ॥ ३ ॥
जनकसुतहि खोजत लषण, वीति गये द्वैमास ।
कछु न मिली सुधि अजहुँलों, अब जिय होत निराश ॥ ४॥
हाय प्राणप्यारी विना, अब किमि धारौं धीर ।
मिलि ऋतुपति रतिपति हिये, मारत तकि तकि तीर ॥ ५॥
अविलोकौ किहि भाँति चहुँ, छाय रहो ऋतुराज ।
फिरैं मत्त मधुपान करि, प्रमुदित मधुप समाज ॥ ६ ॥

घनाक्षरी कवित ।

झूमैंहैं चहूंघा गजराजसे रसाल भूमैं घूमैंहैं समीर तेज तरल तुरंगज्यौं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनके प्यादे भांति भांति लसैं सहित उमंग त्यौं ॥ छाई नव वल्ली छटा छहर रही है घनी तेई रथ राजैं मोर भ्रमत अभंग क्यौं ॥ रसिकविहारी साज साज ऋतुराज आयो छायो वन बाग सेना लीने चतुरंग यौं ॥ ७ ॥ कहूं भौंर गुंजैं मंद सरस सुहाये सुर कोकिला अलाप कहूं मधुर उचारैं हैं ॥ लह लहे पल्लव मृदुल छबि छावै कहूं महक प्रसूननकी कहूं सुख सारैं हैं॥

कहूं चटकाहट गुलाबनकी लोनी प्रात कहूं शर मैन नर नारिनको मारैं हैं। रसिकविहारी साज नागरी सिंगारैं कहूँ अजब अनोखी ये वसंतकी बहारैं हैं ॥ ८ ॥ वेलिन वसंत ज्यौं नवेलिन वसंत वन बागन वसंत रंग रागन वसंत है ॥ कुंजन वसंत दिज पुंजन वसंत अलि गुंजन वसंत चहुँ ओरन वसंत है ॥ छैलन वसंत अरु फैलन वसंत संग सैलन वसंत बहु गैलन वसंत है ॥ रसिकविहारी नैन सैननमें बैननमें जितै अविलोकौ तितै वरसै वसंत है ॥ ९ ॥ निर्तत मयूर महा मुदित मयूरी मिलि मत्त अलि डोलैं लिये अलिनीलसंत सो। रसिकविहारी कीर सारिका सुकोकिलादि करत कलोल केलि कूजत हसंतसो ॥ निज निज नारी संग अपर विहारी चहूँ खेद जड चेतनको सकल न संत सो। संत सम सुखद वसंत सबहीको यह प्यारी बिन मोको भयो दुखद असंतसो ॥ १० ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक।

अयं वसंतः सौमित्रे नानाविहगनादितः ॥ सीतया विप्रहीनस्य शोकसंदीपनो मम ॥ १ ॥ संतापयति सौमित्रे क्रूरश्चैत्रवनानिलः ॥ अमी मयूराः शोभंते प्रनृत्यंतस्ततस्ततः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–इहिविधि बहु वर्णन करत, लखि वसंत चहुँ ओर ॥
प्राणप्रिया बिन विकल अति, विलपत राजकिशोर ॥ ११ ॥
इत उत हेरत लषण युत, ऋष्यमूक गिरि पास ॥
आये फिरत मतंग वन, सिय बिन निपट हिरास ॥ १२ ॥
तहँ गिरिपर कपि पंचये, हनूमान सुग्रीव ॥
तार नील नल रहत नित, परम भीम बलसीव ॥ १३ ॥

चौ०–जब सुग्रीव लखे दुहुँ वीरा ❀ तब हनुमंतहि कही अधीरा ॥
भेद लेहु वेगे तुम जाई ❀ को किहि हेत फिरैं इहि ठाई ॥ १४ ॥
तब हनुमान विप्र तनु धारी ❀ आय जैति वर गिरा उचारी ॥
पुनि कर जोरि विनय युत रीती ❀ बूझी कपि सब कथा सप्रीती ॥ १५ ॥
सुनि लछमन गुण ज्ञान निधाना ❀ निज चारित्र सब कियो बखाना ॥
तब हनुमंत स्वामि पहिचाने ❀ पुलकि सप्रेम चरण लपटाने ॥ १६ ॥
पुनि लछमन बूझो कपि हाला ❀ कहो पवनसुत सकल उताला ॥
राम बंधु सुनि अति हरषाने ❀ बोले बहुरि सत्य हित माने ॥ १७ ॥

घनाक्षरी कवित।

जाकी इंद्र वरुण कुबेर कृपा चाहैं सदा जाके नारदादि ऋषि सेवत चरणहैं ॥ परम प्रचंड खल खंडिवे उदंड जाके दोऊ भुजदंड दिन दुखके हरणहैं॥ चक्रवै नरेश अवधेशके किशोर वीर संतत त्रिलोकहूके पालन करणहैं ॥ धीर धनुधारी तिय विरह दुखारी राम रसिकबिहारी सो सुकंठके शरणहैं ॥ १८ ॥

प्र० ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक ॥

यस्य प्रसादे सततं प्रसीदेयुरिमाः प्रजाः ॥ स रामो वानरेंद्रस्य प्रसादमभिकांक्षते ॥ ३ ॥ सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणंपुरा ॥ गुरुर्मे राघवः सोयं सुग्रीवं शरणं गतः॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—सुनि अंजनिसुत विनती कीनी ❀ कहिसुकंठ गति धीरज दीनी॥
पुनि कपि रूप धारि हनुमाना ❀ लै निज कंध दोउ बलवाना ॥ १९ ॥
ऋष्यमूक गिरि पर द्रुत आये ❀ प्रमुदित हाल समस्त जनाये ॥
सुनि सुग्रीव धाय ढिग जाई ❀ परे चरण आनंद अघाई ॥ २० ॥
तब रघुवर उठि अंक लगाये ❀ नीति प्रीति मय वचन सुनाये ॥
सुनि सुग्रीव परम सुखमाना ❀ निज निज गति दुहुँ कीन बखाना२१
दोहा—पुनि रघुवर सुग्रीव दुहुँ, शिषि साखी बिच दीन ॥
प्रीति निरंतर परस्पर, शुद्ध सत्य दृढ कीन ॥ २२ ॥
राम कही हति वालि हैं।, तुमैं करौं कपिराय ॥
मुदित कही सुग्रीव मैं, दैहौं सियहि मिलाय ॥ २३ ॥
पुनि बैठे इक ठौर मिलि, गहे परस्पर हाथ ॥
वर्णत निज निज शोक गति, दुहुँ सुकंठ रघुनाथ ॥ २४ ॥
चौ०—ताछिन सुग्रीवहि सुधि आई ❀ बोले अति आतुर उमगाई ॥
शीत काल आतप सुखपाई ❀ हौं कपि युत बैठी रघुराई ॥ २५ ॥
ताही छिन नभते इहि ठाई ❀ भूषण गिरे अचानक आई ॥
को जानै किहिके सो आहीं ❀ लै धरि दये कंदरा माहीं ॥ २६ ॥
वर भूषण अमोल सुठि रूपा ❀ कंचन मय माणि जटित अनूपा ॥
पै अब हौं सुसत्य अनुमानी ❀ हैं ध्रुव जनकसुताके जानी॥२७॥

सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ बोले सपदि प्रेम उमगाई ॥
हाय सखा कित वेगहि लावो ❀ सो प्रिय भूषण मोहिं दिखावो२८॥
सुनि सुकंठ अति आतुर जाई ❀ रामहिं दिये सुभूषण लाई ॥
उठि रघुवीर हुलसि हिय लीने ❀ हैं निज प्राणप्रियाके चीने ॥ २९॥

घनाक्षरी–कवित्त।

भूषण सु लेतही पिछाने निज लाडिलीके हिय हुलसायो अति रसिकबिहारीको॥कारि कारि प्यार फेरि फेरि तिहि हेरें श्याम कलित केयूर मंजु रूप उजियारीको॥ चूमि चूमि कुंडल निहारें नेह ऊमि ऊमि बार बार धारें कर जानि सुकुमारीको॥ भरि भरि नैन बैन बोलैं उर लाय लाय हाय यह नूपुर हमारी प्राणप्यारीको॥ ३०॥

दोहा–यौं सिय भूषण हेरि कै, प्रेम विवश रघुवीर॥
करत विलाप विहाल अति, तन मन भयो अधीर॥ ३१॥
पुनि बोले वर बंधुसे, राघव अति विलपाय॥
भूषण प्राण अधारके, लखौ लषण ये आय॥ ३२॥
रामानुज कर लै निरखि, भरे नीर दुहुँ नैन॥
गदगद कंठ सनेह मय, कहे सत्य वर बैन॥ ३३॥

घनाक्षरी कवित्त।

अमल अमोल गोल कुंडल प्रकाशमान ऐसो दरशात कोऊ राजभामिनीको है॥ तैसही अमंद भुजबंद चंद ते दुचंद दीपति सु दिव्य दुतिहारी दामिनीको है॥ परम पुनीत पद भूषण अनूप चारु पूजनीय संतत त्रिलोक नामिनीको है॥ रसिकबिहारी और नाहिं पहिचानैं एक जानैं यह नूपुर हमारी स्वामिनीको है॥ ३४॥

चौ०–सुनि सुबंधुवाणी रघुराई ❀ लै उसाँस बोले विलपाई॥
हैं तिहुँ भूषण प्राणप्रियाके ❀ पाये आज अधार जियाके॥ ३५॥
यौं कहि पुनि सुकंठ प्रति भाखे ❀ सो भूषण लगाय उर राखे॥
कहौ सखाको हरी जानकी ❀ कितलैगयो अधार प्राणकी ॥३६॥
सुनि सुग्रीव कही मृदुवानी ❀ को कहँको कितगो नहिं जानी ॥
पै हिय धीर धरौ रघुराई ❀ हौ लैहौं सिय खोज लगाई॥ ३७॥

यौं कहि पुनि बहु धीर धराई ❀ राम सुकंठ लये हिय लाई ॥
बोले वचन नेह दुख साने ❀ विरही हम तुम दोउ मिलाने ॥३८॥
बहुरि कही रघुवर सो भाषो ❀ किहि कारण वाली इमि माषो ॥
सुनि सुकंठ बोले कर जोरी ❀ राजकुँवर कछु मोरि न खोरी ॥ ३९॥

सो०–मायावी जिहि नाम, असुर जु आयो इक समै ॥
वालि कियो संग्राम, भ्रात संग हौंहू रहो ॥ ४०
पुनि सो असुर पराय, जाय धसो महि विवर महँ ॥
वालि क्रोधवश धाय, तिहि पाछे प्रविशो तहाँ ॥ ४१ ॥
मोहिं राखि बिल द्वार, भ्रात कही यक पक्षलों ॥
नाहिं आऊं तिहिमार, तौ लखियौ हौं हत भयो ॥ ४२ ॥
मैं तिहि आयसुधार, तितहि रहो यक मास लग ॥
शोणित तबै अपार, बहो नदी सम विवरतें ॥ ४३ ॥
भ्रात वचन हौं पाय, जानो बाली हत भयो ॥
शिला विवर मुख लाय, आयो भय दुख शोक वश ॥ ४४॥
तब पुर लखि पतिहीन, सब मंत्री हित बंधु मिलि ॥
राज तिलक मुहिं कीन, करन लगो नृपकाज सब ॥ ४५ ॥
कछु दिन गये कपीश, ताहि मारि आयो सदन ॥
करी मोहिं लखि रीस, कहि कटु वच ताडन कियो ॥४६ ॥
हरिलीनी ममनारि, एक बसन दै मोहिंसो ॥
गृहते दियो निकारि, प्राणघात लाई तऊ ॥ ४७ ॥
तिहि भयते चहुँ ओर, विकल फिरो बहु वर्षलों ॥
इहां शाप अति घोर, याते रहौं निशंक इत ॥ ४८ ॥
सुनि सुकंठके बैन, दुखित भये जल नैन भरि ॥
बोले करुणाऐन, वेगि वालि हौं मारिहौं ॥ ४९ ॥

चौ०–राम वचन सुनिकै सुग्रीवा ❀ कही नाथ वाली बलसीवा ॥
अकथनीय ताको पुरुषारथ ❀ सुनो सकल मैं कहौं यथारथ ॥५०॥
रहै द्वैघडीयामिनि जबहीं ❀ गमन करै वाली नित तबहीं ॥

दिनकर उदै होन नाहिं पावैं ❀ चहूं सिंधु संध्या करि आवैं ॥८१॥
कबहूँ कीश केलि जिय लावै ❀ तब गहि गिरि नभ ओर चलावै ॥
पुनि कंदुक सम सो कर झेले ❀ इहि विधि अमित बार वन खेलै ८२

दोहा–अपर वालि बल सुनिय प्रभु, दैत्य दुंदुभी नाम ॥
जिहि सहस्रगजमत्त बल, गिरि समान वपु राम ॥ ८३ ॥
असुर मत्त सो युद्ध हित, गयो सिंधुके पास ॥
ताहि विलोकि नदीशके, उर छाई बहु त्रास ॥ ८४॥
तब पयोधि सविनय कही, हम तुव लायक नाहिं ॥
बली हिमंचल करहिंगे, युद्ध जाहु तिन पाहिं ॥ ८५ ॥
सुनि दुंदुभि हिमगिरि निकट, आयो अतिहि उताल ॥
गौरि पिता तिहि देखिकै, भये निपट बेहाल ॥ ८६ ॥
तब कर जोरि अधीन ह्वै, बोले वचन गिरीश ॥
तुमते भिरै सु एकहै, वाली बली कपीश ॥ ८७ ॥
सुनत दुंदुभी महिष वपु, गिरि समान विकराल ॥
किष्किंधामधि घोररव, कीनो आय उताल ॥ ८८ ॥
सो सुनि वाली क्रोध युत, धाय कीन बहु युद्ध ॥
अमित काल लग परस्पर, रहे दुहूँ रण रुद्ध ॥ ८९ ॥
पुनि कपीश तिहि वध कियो, गहि महि पटक पछार ॥
दुंदुभिमुख दृग श्रवणते, चली रुधिरकी धार ॥ ९०॥
पुनि वाली कर तौलि तिहि, वपु फेको रिस ठान ॥
सो मतंग आश्रम परो, योजन एक प्रमान ॥ ९१ ॥
रुधिर बिंदु बहु मुनि निकट, परे भयो अति शोर ॥
धाये चौंकि मतंगवन, लखो महिष मृत घोर ॥ ९२ ॥
गिरि समान तनु गिरतहीं, भो बहु विपिन विनाश।
कियो क्रोध सो देखिकै, मुनि मतंग तपराश ॥ ९३ ॥
त्रिकालज्ञ ऋषि ध्यान धरि, लखो वालिकृत हाल ॥
तब कपीशहित क्रोधवश, दीनो शाप कराल ॥ ९४ ॥
मम आश्रम वाली कबहुँ, आवै योजन माहिं ॥

सहस खंड तिहि शीशके, तौतत्क्षण है जाहिं ॥ ६५ ॥
ताते वालि न आवही, इत इक योजन माहिं ॥
याते हौं इहि ठौर अति, निर्भय रहो सदाहिं ॥ ६६ ॥

चौ०—यौं सुकंठ वाली बलगाथा ❀ कहत सुनत लछमन रघुनाथा ॥
सहजहि डोलत विपिन मझारा ❀ पंचकोश दुहुँ राजकुमारा ॥ ६७ ॥
सो दुंदुभी अस्थि अति भारी ❀ गिरिसम निरखि लषण धनुधारी ॥
बामचरण ते सहज उठायो ❀ द्वैशत धनुष प्रमाण बहायो ॥ ६८ ॥
पुनि सुग्रीव कही रघुवीरा ❀ कपिपति महाबली रणधीरा ॥
याते मुहिं अपनी कदराई ❀ तिहि वध सहज न परत जनाई ६९ ॥

दोहा—धनुष प्रमाण कहावही, अर्ध अधिक त्रैहस्त ॥
सो द्वै शत धनु अस्थि यह, फेंको लषण समस्त ॥ ७० ॥
पैविलोकि ये राजसुत, वाली बल है भूरि ॥
द्वैशत धनुते होत है, यक योजन बहु दूरि ॥ ७१ ॥

चौ०—सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ कहि बहु वीर रीति समुझाई ॥
बहुरि सुहिय विचार ठहराई ❀ तिन प्रतीत हित सहज सिधाई ७२
सो दुंदुभि वपु अतुलित भारी ❀ रघुवर पद अंगुष्ठ निज धारी ॥
सहज पँवारि दियो बलवाना ❀ परो सु दश योजन परमाना ७३ ॥

दोहा—सो लखि कही सुकंठ पुनि, बल न कछू विलगान ॥
तव वाली दुहुँ मध्यको, अधिक सु न्यून समान ॥ ७४ ॥
सहित रुधिर त्वच मांस गरु, वाली फेंको ताहि ॥
शुष्कभयो बहु दिवस हरु, अब मेलो प्रभु याहि ॥ ७५ ॥

चौ०—सुनि रघुनाथ कही मुसक्याई ❀ तुव उर जिमि प्रतीति ठहराई ॥
वरणौ वेगि सु हम दरशावैं ❀ जिहि लखि सब निश्चय उर लावैं ७६ ॥
तब सुग्रीव कही रघुलाला ❀ शाल सात ये विटप विशाला ॥
गहि वाली झकझोरत जबहीं ❀ पत्र हीन होवैं तरु तबहीं ॥ ७७ ॥
सो प्रभु यक शरते तरु एका ❀ पत्र हीन कीजे धरि टेका ॥
तब तव बल वाली समजानौं ❀ तिहि वधकी प्रतीत उर आनौं ७८
सुनि सुग्रीव वचन बलवाना ❀ सातहु तरु वेधे इक बाना ॥
पत्री पत्र हीन करि पत्री ❀ प्रविशो तूण प्रवेशि धरत्री ॥ ७९ ॥

सो प्रभाव लखिकै सुग्रीवा ❀ जानी दृढ रघुवर बलसींवा ॥
गहि पद कीनी विनय सप्रीती ❀ नाथ मोहिं अब भै परतीती ८०॥

दोहा—इहि विधि करि बहु चरित पुनि, आप कियो विश्राम ॥
सह सुकंठ रघुवर लषण, अपर कीश बलधाम ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीरामसुग्रीवमिलन
वर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा—पंपासरते सरस शुचि, लाये लषण प्रवीन ॥
कंद मूल फल फूल मधु, स्वादित खग मृग मीन ॥ १ ॥
करि कबंधवाणी सुरति, अशन कियो हरषाय ॥
खग मीनन को स्वाद बहु, वर्णत हैं रघुराय ॥ २ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये । आरण्यकांडे ॥ सर्ग ७२ ॥ श्लोक ।

घृतपिंडोपमान् स्थूलान्तान्द्विजान् भक्षयिष्यथ ॥ रोहितांश्चक्रतुंडांश्च नलमीनांश्च राघव ॥ १ ॥ पंपायामिषुभिर्मत्स्यांस्तत्र राम वरान्हतान् ॥ निस्त्वक्पक्षानयस्तप्तानकृशाऽनेककंटकान् ॥ २ ॥ तव भक्त्यासमायुक्तो लक्ष्मणः संप्रदास्यति ॥ भृशं तान्खादतो मत्स्यान्पंपायाः पुष्पसंचये ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोबई छन्द ।

यौं प्रमुदित कछु दिवस रहे पुनि कही सबहि श्रीरामा ॥
करिहौं वेगि वालिवध गमनौ सजिकिष्किधा ग्रामा ॥
दै आज्ञा गहि बाण शरासन चलेसबंधु उताला ॥
संग सुकंठ आदि कपि पाँचहुँ हर्षित बलीविशाला ॥
जाय नगरसन्निध सब वनमधि गहि तरु ओट विराजे ॥ ३ ॥
पाय रजाय सुकंठ आय तुर पुरीद्वार बहु गाजे ॥
सुनि वाली क्रोधित ह्वै धायो भिरे सबल सुग्रीवा ॥
दोऊ भ्रात उद्धयुद्ध अति दुहूँ अमित बलसीवा ॥ ४ ॥
इत उत लखत सुकंठ सुयुद्धत तब करि क्रोध हरीशा ॥
हने अमित तलमुष्टि वज्रसम बंधुहि धरि भुज शीशा ॥
ह्वै विहाल सुग्रीव पराने ऋष्यमूक वनलीना ॥

वालि न गयो शापभय तहँते भवन गवन द्रुत कीना ॥ ५ ॥
जाय सुकंठ विकल रघुवर सो कही नाथभल कीना ॥
दै:विश्वास पठाय भिरायो फेर फेर मुख लीना ॥
सुनि श्रीराम अंक भरि भाषी हौ दोऊ इकसारा ॥
हौं ताही भ्रम भीति विवश ह्वै बाण न कियो प्रहारा ॥ ६ ॥
यौं कहि राम सुकंठ कंठमधि गज पुष्पी पहिराई ॥
भाषी जाहु चिह्न अब लखिकै ध्रुव मारौं कपिराई ॥
प्रभुरजाय वश चले सुगल पुनि फिरि फिरि हेरत पाछे ॥
दृढ़ करि हीय आय पुर द्वारे गर्जत भये सु आछे ॥ ७ ॥
सुनि वाली पुनि उठो क्रोध वश तब तारा सब भाषी ॥
राम सुकंठ मित्रता प्रथमहि जो सुतमुख सुनिराषी ॥
सो तिय शीक्ष हरीश नमानी भिरो आय बलवाना ॥
दोऊ भ्रात विरुद्ध क्रुद्ध भरि उद्ध युद्ध बहु ठाना ॥ ८ ॥
भये थकित सुग्रीव विकल पुनि हेरत बारहिंबारा ॥
तब रघुवर तरु ओट दूरते बाण वालि उर मारा ॥
गिरो कपीश भूमि विह्वल ह्वै साजि शर राघव धाये ॥
दुहूँ बंधु चहुँ कपि संयुत द्रुत तासु निकट चलि आये ॥ ९ ॥
तिनहि निहारि वालि इमि भाषी यह न वीरको धर्मा ॥
क्षत्री ह्वै भूपति दुरि मारो कीनो राम अकर्मा ॥
तब रघुवीर कही सुन हरिपति अनुज वधू तू लीनी ॥
याते तोहिं दंड वध दीनो नाहिं अनीति कछु कीनी ॥ १० ॥
इहि विधि दुहुँ कटु मृदुल बैन बहु कहे वालि अरु रामा ॥
तजो प्राण कपि भयो शोर चहुँ सब धाये तजि धामा ॥
तारा अरु अंगद बहु विलपत आरतगिरा पुकारी ॥
कीश ऋच्छ किष्किंधावासी रुदन करत नर नारी ॥ ११ ॥
तब रघुवीर धीर दै सबही सुग्रीवहि समुझाई ॥
मृतक क्रिया वर सविधि यथोचित सकल सपादि करवाई ॥
पुनि आज्ञादै अनुजहि प्रमुदित द्रुत भेजो रघुनाथा ॥
जाय लषण पुर साजि सुकंठहि कियो तिलक कपिनाथा ॥ १२ ॥

इहि विधि वालिहिमारि राम अरु करि सुग्रीवहि राजा ॥
हनुमंतहि मंत्री दृढ़ थापो अंगदको युवराजा ॥
तारा भ्रात नारि निज नारी रुमासहित कपिनाथा ॥
रहत सदा सानंद राज लहि विलसत भये सनाथा ॥ १३ ॥
वरषा काल निरखि श्रीरघुवर सानुज गिरि पर छाये ॥
परमरम्य कंदरा शिलावर द्रुम फल फूल सुहाये ॥
पावसऋतु लखि राम विरह वश प्यारी बिन अकुलाहीं ॥
नैन नीर भरि दीन बैन बहु बोलत अति विलपाहीं ॥ १४ ॥
दोहा—वरषा हिय करषा करत, रंच दया हिय नाहिं ॥
विरहीको जिय लेन को, मदन पठायो माहिं ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कीधौं विरहीके प्राण दाहे धूम धुंधर ये कीधौं है सपक्ष गिरि उडत उतंग हैं ॥ कीधौं ऋतु पावसके विविध वितान तने कीधौं नभ मंडलमैं तरल तुरंग हैं ॥ रसिकविहारी कीधौं बालक निशाके श्याम कीधौं वरषाके दूत डोलत सुढंग हैं ॥ कीधौं युगमासके विलासके अवास सोहैं छूटे किधौं मदन महीपके मतंग हैं ॥ १६ ॥

आवत चहूंघा घन घेरि नभ मंडलमें करत अँध्यारी भारी गरजत जोरसे ॥ दुरि दुरि दौरि विज्जु छटा छहरात ज्यौंही त्यौंही तरु तोरैं पौन प्रबल झकोरसे ॥ रसिकविहारी मोर मुदित पुकारतहैं जित तित झिल्ली झनकारत हैं जोरसे ॥ वरसत नीर धारा धरणी धरै न धीर होत हैं अधीर सब मदन मरोरसे ॥ १७ ॥

घुमडि घनेरे घहरात घन घेर घेर झूम झूम घूम घूम मंडित घमंड है ॥ रैनि अँधियारी कारी कारी भयकारी भारी जोरते झकोरै पौन प्रबल प्रचंडहै॥दादुर दिमाक दरशावें दिशि चारो भले झिल्ली झनकारैं सुरदीरघ अखंड है॥रसिकविहारी दुति दामिनी दमक्के देखि अबला सशंकै यह पावस उदंड है ॥ १८ ॥

धावैं हैं वलाक झुंड झुंड नभमंडलमें नीके कोकिलानके सरस सुर माचैं हैं ॥ गुंजत मधुप पुंज पुंजनमें कुंजनमें बोलत पपीहा पीउ पीउ रंग राचैं हैं ॥ रसिकविहारी उर आनँद अपार होत पावसके

साज सबै सांचै सुख सांचै हैं ॥ लरज उठैं हैं सुनि मेघकी गरज देखौ बागनमें मुदित मयूरगण नाचैं हैं ॥ १९ ॥

सवैया कवित।

झूमिरहीं द्रुमडारैं चहूँ दिशि भूमि हरीं लखि होत हरो हिय ॥
लोनी लता लपटीं तरु अंगन मानो नवेली रहीं मिलिकै पिय ॥
इन्द्र वधू छबि छावैं चहूँ रसिकेशविलोकतही हुलसे हिय।
श्याम मनाये न मानतीं जो सोई आपुहिते तजिमान मिलैं तिय २०॥
वरसै बहु नीर फुहारनतैं अविलोकि घनो विरहासरसै ॥
सरसै दुख देखत कुंजनको रसिकेश मनोज जहां दरसै ॥
दरसै चहुँ प्रावि‍ट रूप अनूप वियोगिनी हाय हिये तरसै ॥
तरसै घनश्याम विना घनश्याम लखे छिन वीतत है वरसै ॥ २१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

घन गरजैंहै किधौं दुंदुभीरसेशकी है छाये मेघ कीधौं तने पावस वितान हैं ॥ संपाकी दमक कीधौं चमक कृपाणनकी कीधौं नीर बुंदैं कीधौं मदनके बान हैं ॥ पवन प्रचंड कींधौं दूती या विरहकी है रसिकविहारी ऋतु कीधौं भूपसानहै ॥ उडत बलाक कीधौं आनँद वियोगिनके जरत जवासे किधौं विरहीके प्रान हैं ॥ २२ ॥ हीय मुद्दानी रतिरानीके प्रगट भयो पावस सपूत पूत सब सुखदाई है ॥ सुनि हरषायकै सिधाई चारु इन्द्रवधू मघवा अनंद ह्वै अमीकी झरि लाई है ॥ निर्तत कलानि कल कोकिल करैंहैं गान दल फल फूल सौंज दिशन सजाईहै ॥ रसिकविहारी घन गरज मची है आज मदन नरेश द्वार बाजत बधाई है ॥ २३ ॥

दोहा—यौं बहु विधि वर्णत विलखि, लखि पावस भरि नैन ॥
विरह विवश अति दीन पुनि, रघुवर बोले बैन ॥ २४ ॥

सवैया कवित।

अति शीतल मंद सुगंध समीर सदा तिहि को तनु जापरसौ ॥
कल कोकिल चातक मोर मलिंद उतै रव मंजु महा सरसौ।
वर इंद्र वधू बक दामिनि हो नवभामिनिके ढिग जा दरसौ ॥
रसिकेश जहाँ मम प्राणप्रिया घन घेरि घने तहँ जा बरसौ ॥ २६ ॥

दोहा—इमि कहि पुनि वर बंधुसे, बोले निरखि अधीर ॥
सुनौ सुनौ हेरौ लषण, प्यारी गति मति धीर ॥ २६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

धाय धाय बैठत कदंब जंबु अंबनकै चाय टकलाय लाय मेरी ओर हेरैहैं ॥ आय आय बोलै बार बार छाय छाय शोर भाय भाय डोलै डार डार चहुँ फेरै है ॥ जाय जाय दुरत घरीक प्रीति पाय पाय रसिकविहारी रहै इत उत नेरैहै ॥ जीव तरसावै पीउ पीउ रटलावै हाय हायकै पपीहा प्राण प्यारी मोहिं टेरै है ॥ २७ ॥

दोहा—इमि पावस लखि राजसुत, विलपत होत अधीर ॥
अमित भांति समुझायकै, लषण धरावै धीर ॥ २८ ॥

प्र०॥ वाल्मीकीये ॥ किष्किंधाकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥ श्लोक।

अयं स कालः संप्राप्तः समयोऽद्यजलागमः ॥ संपश्यत्वं नभो मेघैः संवृतं गिरिसन्निभैः ॥ ४ ॥ क्वचिद्बाष्पाभिसंरुद्धान्वर्षागमसमुत्सुकान् ॥ कुटजान्पश्य सौमित्रे पुष्पितान्गिरिसानुषु ॥ मम शोकाभिभूतस्य कामसंदीपनान्स्थितान् ॥ ५ ॥ इत्यादि ॥

इति श्री०रा०र०वि०वि०वालिवधवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०—इहि विधि राजकिशोर, पावस विलपि वितीत किय ॥
शरद निरखि चहुँ ओर, काजसमै गुणि मुदित भे ॥ १ ॥
उत प्रथमै हनुमान, सुरति दिवाय सुकंठको ॥
भेजे बहु बलवान, सुभट बुलावन हेतु चहुँ ॥ २ ॥

चौ०-इत रघुवीर लषण प्रति भाषी ❀ लखो सुकंठ सुरति नहिं राखी ॥
राज तीय लहि कै सुखसारो ❀ भये मत्त ममकाज बिसारो ॥ ३ ॥
इहि विधि राम क्रोध करि भारी ❀ कही लषण जावो धनुधारी ॥
कहो वेगि बनचरहि बुझाई ❀ अब विलंब तुव नाहिं भलाई ॥ ४ ॥
सुनि लछमन धनु शर कर धारी ❀ आये क्रोधित नगर मझारी ॥
राजद्वार मधि खबर जनाई ❀ अंतर गये रजाय मँगाई ॥ ५ ॥
गृह पैठत किय धनुष टँकोरा ❀ पूरित भयो शोर चहुँ ओरा ॥
लषण क्रोध लखि अंगद धाई ❀ कपिनाथहि गति सकल सुनाई ६ ॥
लषण कोप सुनिकै हरिपाला ❀ भेजी तारहि सिखै उताला ॥

सो सुंदरी आय शिरनाई ❀ करि बहु विनय सुधीर धराई ॥७॥
तारा अरु अंगद हनुमाना ❀ करि बहु विनय सहित सनमाना ॥
सादर लै सँग महल पधारे ❀ जाय लषण कपिपतिहि निहारे ८॥
सदन विचित्र अनूपम साजे ❀ कंचनमय आसंन वर भ्राजे ॥
रुमा रूप मय गल भुज धारी ❀ अपर अनेक लसैं नवनारी ॥९॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये । किष्किन्धाकांडे सर्ग ॥ ३२ ॥ श्लोक ।

दिव्याभरणमालाभिः प्रमदाभिः समंततः ॥ संरब्धतररक्ताक्षो-बभूवांतकसन्निभः ॥ १ ॥ रुमां तु वीरः परिरभ्य गाढं वरासनस्थो वरहेमवर्णः ॥ ददर्श सौमित्रमदनिसत्त्वं विशालनेत्रः स विशाल नेत्रम् ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-लषण हि देखि उठे कपिपाला ❀ राम बंधु कह वचन कराला॥
तब तारा पुनि बहु समुझाये ❀ कही सुभट हरिनाथ बुलाये ॥१०॥
सो सुनि लषण धीर उर धारी ❀ तब सुकंठ वर गिरा उचारी ॥
तन धन प्राण राज परिवारा ❀ हौं अर्पण किय प्रभु हित सारा ११॥
यौं कहि पुनि उताल शिष दीनी ❀ पवनपुत्र प्रति आयसु कीनी ॥
महि मंडल जेते कपि ऋच्छा ❀ आवैं वेगि सकल ममशिच्छा १२॥
सुनि कपि पुनि भेजे भट धाये ❀ नभ मग वेगि विपुल चहुँ जाये ॥
मिलि सुकंठ लछमन दुहुँ अंका ❀ बैठे मुदित एक परयंका ॥ १३ ॥
पुनि सुग्रीव तियन शिष दीना ❀ निज निज ठाम गमन सब कीना ॥
वेगहि शिबिका सुभगमँगाई ❀ बैठे लषण सहित कपिराई ॥ १४॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लिये यथोचित कीश समाजा ॥
सुभट शस्त्रधारी बहु संगा ❀ आये प्रभु ढिग सहित उमंगा ॥ १५ ॥
दूरहि उतरि यानते कीशा ❀ लज्जित प्रभुपद नायो शीशा ॥
राम सखहि उठि अंक लगावा ❀ सादर गहि समीप बैठावा ॥ १६॥
तब सुकंठ बहु विनती कीनी ❀ रामनीति मय वर शिष दीनी ॥
ताही छिन कपि ऋच्छ अपारा ❀ आये विविध वीर वरियारा १७

दोहा-महि मंडल जेते सकल, हैं कपि ऋच्छ विशाल ॥
ते हरीश आज्ञा सुनत, आये मुदित उताल ॥ १८ ॥

कीशपतिहि रामहि सबै, सादर नायो शीश ॥
भये मुदित प्रभु हेरिकै, अगणित ऋच्छ शुकीश ॥ १९ ॥
तब सुग्रीव बुलाय ढिग, मुख्य मुख्य कपि ऋच्छ ॥
करी सबहि भय प्रीत युत,सिया शोध हित शिच्छ ॥२० ॥
कही वेगि तिहुँ लोकमें, हेरो सीतहि जाय ॥
दिवस पंचदश मध्यद्रुत, आवो शोध लगाय ॥ २१ ॥
विनत नाम कपियूथपति, तिनहिं सुकंठ बुलाय ॥
कही सुभट तुम सीयको, शोधहु पूरब जाय ॥ २२ ॥
हनुमत ऋच्छप वालिसुत, नीलादिकन नृपाल ॥
भाषी दक्षिण दिशि सबै, सीतहि लखौ उताल ॥ २३ ॥
पश्चिम दिशा सुषेणको, सादर कह कपिराय ॥
पुनि शतबलीसुकीशको, उत्तर दई रजाय ॥ २४ ॥
इमि चहुँ दिशि अरु विदिशि पुनि, सातहु स्वर्ग पताल ॥
बहु भूगोल खगोल युत, सब भाषे हरि पाल ॥ २५ ॥
सो०-सुनि बूझी रघुवीर, सखा सकल ये किमि लखे ॥
कही सुकंठ सुधीर, भ्रात भीति भागे तबै ॥ २६ ॥
तब रघुवर मुसक्याय, बोले गई सुभीति अब ॥
सुनि सुकंठ शिरनाय, कही सु मम पौरुष कहा ॥ २७ ॥
प्रभु तव कृपा प्रभाय, कन अनु होय सुमेरु सम ॥
नेकरोष ह्वै जाय, सुरगिरिहो लघुरजहु ते ॥२८ ॥
दोहा-यों कहि पुनि हनुमानको, भाषी निकट बुलाय ॥
राम काज सिधि होय जिमि, सो कीजो मनलाय ॥ २९ ॥
चौ०-तब लखि राम हिये हुलसाई ❀ पवनपुत्र कह ढिग बैठाई॥
दई मुद्रिका अति अभिरामा ❀ जामधि वर अंकित निजनामा॥३०॥
दै मुद्रिका कही पुनि रामा ❀ हौ कपि वीर बुद्धि गुण धामा॥
नीति प्रीति जस बल मुणलीजो ❀ होवै सिद्धि काज वह कीजो॥३१॥
सुनि हनुमंत आदि सब वीरा ❀ नाय शीश कहि जै रघुवीरा ॥
गमन कियो तिमि लै भट साथा ❀ जिमि रजाय दीनी कपिनाथा ३२

चलत समय भाषी कपिराई ❀ जो ऐहैं सिय शोध लगाई ॥
सो अति ही आनंद अघै है ❀ नाम धाम धन ग्राम सुपैहै॥३३॥
सुनि गमने सब हिय हुलसाई ❀ खोजत फिरत सियहि चहुँ धाई॥
तिहूँ लोक कपि ऋच्छ सिधावैं ❀ कितहूँ कहूँ सोध नहिं पावैं ॥३४॥
इमि पश्चिम उत्तर अरु प्राची ❀ खोजी सब दिशि रंच न बाची॥
नभ पाताल हेरि चहुँ आये ❀ विवश वचन कपिपातिहि सुनाये ३५
दक्षिण हनुमंतादिक वीरा ❀ खोजत सीतहि भये अधीरा ॥
निर्जल निर्जन वन गिरि भूरी ❀ हेरे नगर देश बहु दूरी ॥ ३६ ॥
इमि खोजत इक दिवस सुवीरा ❀ भये तृषातुर निपट अधीरा ॥
तिहि थल मध्य नीर कहुँ नाहीं ❀ धाय धाय हेरैं चहुँघाहीं ॥ ३७॥
तहाँ भूमि इक विवर लखाना ❀ ताढिग आये सब बलवाना ॥
आरद पक्ष हेरि खगनाना ❀ है इत जल यह दृढ़ अनुमाना ३८
तब सबही यह कीन विचारा ❀ अविलोकिय चलि विवर मझारा
निरखो बिल द्वारा चहुँ ओरा ❀ अगम पंथ छायो तम घोरा३९॥
भयवश जाय सकत नहिं कोई ❀ तब हनुमंत अग्र हठि होई ॥
एक एक कर गहि सब गौने ❀ पैठे विवर सभै धरि मौने ॥४०॥
गये सुयोजन एक प्रमाणा ❀ तब तहँ अति प्रकाश दरशाना॥
भवन बाग सर परम अनूपा ❀ लसै एक तिय वृद्ध स्वरूपा४१॥
तिहि विलोकि सब कीन प्रणामा ❀ पुनि बूझी किहिको यह धामा ॥
कही सु मयदानव कर ठामा ❀ है कपि स्वयंप्रभा मम नामा४२॥
सुनि रजाय लै फल दल खाये ❀ करि जलपान अनंद अघाये ॥
तासु निकट पुनि सब मिलि आये ❀ सो बूझी को तुम कहँ आये४३॥
तब कपि कही सकल तिहि बाता ❀ सुनि बोली सो तिय हे ताता ॥
पैहौ सीतहि संशय नाहीं ❀ वीर धीर धारौ मन माहीं ॥४४॥
पुनि कपि कही ताहि कर जोरी ❀ करु सहाय माता अब मोरी ॥
महाअंध मग सूझत नाहीं ❀ किमि हम विवर द्वार फिरि जाहीं४५॥
तब तिहि कही कृपालु सुहाई ❀ ह्यांते निसरिसकै नहिं कोई ॥
पै तुम रामदास हौ याते ❀ मूँदहु नैन जाहु इहि ठाँते ॥४६॥

सुनि सब निज निज कर दृग ढांके ❀ मूँदे पलक रंच नहिं झांके ॥
स्वयंप्रभा तपबल तिन काढे ❀ लखैं वीर सागरतट ठाढे ॥४७॥

दोहा–सबही चित चकृत लखैं, कहत बचे अब प्राण ॥
गये हुते किहि हेतु तहँ, भयो आनको आन ॥ ४८ ॥
सिंधुतीर गिरि पै सकल, बैठे सोच कराहिं ॥
किमि जैये कपिराज ढिग, काज भयो कछु नाहिं ॥ ४९ ॥
भाषी अवधि हरीश सो, बीति गये दिन और ॥
गये हतै नृप याहिते, मरण भलो इहि ठौर ॥ ५० ॥
राम काज हित तनु लगै, दोऊ लोक बनाय ॥
लखौ जटायू गीध किमि, सुखी भयो गति पाय ॥ ५१ ॥

चौ०–इमि लिय जब जटायु कर नामा। तासु भ्रात सो सुनि तिहि ठामा
प्रगटो मंद मंद वपु भारी ❀ पंख विहीन भूरि भयकारी ५२॥
ताहि देखि सब भीत जु मानी ❀ सो भाषी सुधीर मृदुवानी ॥
कहौ अभय प्रथमहिं कह वरनी ❀ है कित किमि जटायुकी करनी ५३
तब अंगद सब कथा कहाई ❀ सुनि सुगीध भाषी बिलपाई ॥
मोहिं लै चलहू सागर तीरा ❀ देहुँ जटायु बंधु कहँ नीरा ॥५४॥
तब सब ताहि सिंधु तट आनो ❀ सो बंधुहि जल दै दुखसानो ॥
बोलत भयो कपिन समुझाई ❀ रहौ जटायु मोर लघुभाई ५५॥
एक समय हम दुहुँ अभिमानी ❀ उड़ि रवि निकट चले हठ ठानी ॥
जबहीं गये प्रकाश मँझारी ❀ तब नहिं सही गई तप भारी ५६॥
दोऊ प्राण कंठ मधि आयो ❀ पंख झांपि हौं बंधु बचायो ॥
ताछिन भानु तेज मम पक्षा ❀ जरे गिरो मैं ह्वै निरपक्षा ॥ ५७ ॥
परो आय इत निपट विहाला ❀ इहाँ निशाकर मुनी दयाला ॥
करत रहे तप सो मुहि हेरी ❀ कियो सचेत शीश कर फेरी ५८॥
पुनि मुनि कही अयोध्याधामा ❀ दशरथ सुत ह्वै हैं श्रीरामा ॥
तासु तीय निश्चर हरि लै है ❀ तिहि विशोध कपि नाथ लगै है ५९
चहूँ ओर बहु सुभट सिधावैं ❀ खोजत कीश भालु इत आवैं ॥
सिया शोध तुम तिनहि बतैहो ❀ ताही समय पक्ष पुनि पैहो ६०॥

दोहा–यौं कहि भाषी गीध पुनि, संपाती मम नाम ॥
सब गृद्धनको भूप हौं, पै अब भयो निकाम ॥ ६१ ॥
जरठ पक्ष बिन हीनवल, बनै इतो अब काम ॥
पुनि गिरि पै मुहि लै चलौ, कहौं सिया जिहि ठाम ॥ ६२॥
सुनि प्रसन्न ह्वै सपदि सब, संपातिहि कर धारि ॥
लाय उच्च गिरि शिखर पै, सादर दिय बैठारि ॥ ६३ ॥
संपाती तब देखि कै, दक्षिण शीश उठाय ॥
कही इहाँ ते मोहिँ सब, सम्मुख परत लखाय ॥ ६४ ॥
निरखत कोश सहस्रलों, गीध दृष्टि इमि होय ॥
दूर विलोकन हेत कहुँ, समता करै न कोय ॥ ६५ ॥
सो लखि सत्य बखान हूँ, करौ प्रतीति निशंक ॥
शत योजन इहि ठामते, सिंधुपार पुरलंक ॥ ६६ ॥
तहाँ निशाचर अमितहैं, भूपति रावण नाम ॥
सो सीतहि हरि लै गयो, बैठी दुखी सुठाम ॥ ६७ ॥
यौं वर्णत संपातिके, प्रगट भये वर पक्ष ॥
सब आयो विश्वास दृढ़, निरख प्रभाव प्रतक्ष ॥ ६८ ॥

चौ०संपाती लहि पंख अनूपा ❀ प्रमुदित भयो विशद वर रूपा ॥
सबहि धीर दै सियहि बताई ❀ गमनो खग नभ पंथ उड़ाई ६९ ॥
सुनि कपि भालु परम सुख पागे ❀ किलकि कूदि बहु नाचन लागे॥
ऊर्द्ध रोम ह्वै पुच्छ उठाई ❀ सिंहनाद कीने हरषाई ॥ ७० ॥
सो निशि सुख महँ जात न जानी ❀ प्रात सिंधु लखि मति अकुलानी॥
बैठि करत सब विविध विचारा ❀ किमिको लंघै जलधि अपारा ७१

दोवई छंद ।

ताछिन गज गवाक्ष दोऊ अरु शरभ ऋषभ वरवीरा ॥
कीशगंधमादन मयंद मिलि द्विविद सुषेण सुधीरा ॥
जाम्बवंत ये क्रमते दश दश योजन कहे बढ़ाई ॥
निज निज गमन शक्ति इमि सबही सत्य बखानि सुनाई ॥ ७२॥

तब अंगद भाषी हम इतते कूदि उतै ध्रुवजावैं ॥
फिर उतते इत आगमके हित निश्चय नाहिं कहावैं ॥
सुनि ऋच्छेश कही तुम नृपसुत दुहुँ दिशि गमन समर्था ॥
पैहौ अधिप वनै किमि पठवत प्रभुबिन होत अनर्था ॥ ७३ ॥
यौं कहि ऋच्छराज हनुमानहिं लखि बोले हे वीरा ॥
पवनपुत्र बैठे सुमौन क्यौं धरी कहा इमि धीरा ॥
गुणि समर्थ प्रभु दई मुद्रिका निजबल रूप विचारौ ॥
गोपद सरिस सिंधु यह तुमको ह्वै द्रुत सजग सिधारौ ॥ ७४ ॥
जाम्बवंतके वचन सुनतहीं कपितन बल उमँगायो ॥
ऊरधरोम प्रफुल्ल पुच्छ वपु तेज तरणि सम छायो ॥
यौं हनुमंत वीर उद्धत ह्वै कियो मेघ सम नादा ॥
पुनि अंगद अरु ऋच्छराज प्रति बोले युत अहलादा ॥ ७५ ॥

वनाक्षरी कवित्त।

मेरो ना प्रभाव सीतारामकी कृपा ते यह रसिकविहारी सत्य प्रण ठहराऊँ मैं ॥ उछलि उतंक तिहुँ लोकहि उलंक आऊँ सिंधुबापुरेकी काह गिनती गनाऊँ मैं ॥ जोपै रघुराज कपिराज युवराज और ऋच्छराज काहू की रजाय नेक पाऊँ मैं ॥ एकही फलंकामें निशंका उत जाऊँ फेरि हंका दै सुलंकाको उखार इत लाऊँ मैं ॥ ७६ ॥

दोहा–सुनि सुबैन हनुमानके, ऋच्छराज युवराज ॥
बोले कपिहि सराहिकै, सादर सहित समाज ॥ ७७ ॥
हौ समर्थ पुनि या समै, उचित इतोही काम ॥
जनक सुतहि अविलोकिकै, द्रुत आवो इहि ठाम ॥ ७८ ॥
पुनि सब चलि निजनाथको, प्रमुदित सकल सुनाय ॥
करि है सोई काज जो, देहैं ईश रजाय ॥ ७९ ॥
सुनि शिष शीशनवायकै, सबही धीर धराय ॥
द्रुत महेंद्र गिरि शिखर पै, उछलि गये हुलसाय ॥ ८० ॥
जाम्बवंत अंगद अपर, कीश भालु भट वृन्द ॥
रसिकविहारी काज सब, सिद्धि जानि आनंद ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनी शोध
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा–अंजनि सुत हनुमंत कपि, रामचरण हिय ध्याय ॥
तिहि सुवेल गिरि शिखर पै, बैठे गात बढाय ॥ १ ॥
टेकि कुधरपर दोउ कर, पीठ पुच्छ करि गुच्छ ॥
श्रवण चपरि रोमांच युत, बढो तेज तनुसुच्छ ॥ २ ॥
दक्षिण दिशि लखिकै कियो, प्रलय मेघ सम गाज ॥
भाषी सबहि सुनाय हौं, जाहुँ रामके काज ॥ ३ ॥
रामबाण सम वेगते, जाय निहारौं लंक ॥
जौ न मिली तहँ तौ लखौं, सुरपुर धाय निशंक ॥ ४ ॥
तितै न पाई सियहि तौ, गहिलैहौं लंकेश ॥
अथवा लंक उपाटिकै, धरौं आय इहि देश ॥ ५ ॥
यौं कहि उछले वीर वर, तहँ तै सबल उताल ॥
चपि भूधर धरणी धसो, महा वेग भो हाल ॥ ६ ॥
पितु सम वेग प्रचंड अति, बहु तरु भये उपाट ॥
हनुमत सिंधु उलंघि वे, उछलि चले नभ वाट ॥ ७ ॥
आयत योजन तीस अरु, दशयोजन विस्तार ॥
तनु छाया हनुमान की, ताछिन परम सुढार ॥ ८ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांडे सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक ॥

दशयोजनविस्तीर्णा त्रिंशद्योजनमायता ॥
छाया वानरसिंहस्य जवेचारुतराभवत् ॥ १ ॥

दोहा–गर्जत उर आनंद भरि, जात व्योम पथवीर ॥
ताछिनको बल तेज वपु, वरणिसकै को धीर ॥ ९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

देव दहलाने औ अदेव हहलाने सिंधु जीव खहलाने जल उछल नदीशको ॥ भानुतेजमंद पथ बंद व्योमगामिनको आसन सुछंद डगो शंभु सुरईशको ॥ रसिकेविहारी राम दूत हनुमंत वीर कीनो गौन मर्दन प्रताप भुजवीसको ॥ जैजैकार करत अपार तिहुँ लोक झार विक्रम पराक्रम निहार वर कीशको ॥ १० ॥ हेम गिरि कैधौं है सपक्ष नभ कीनौ गौन कैधौं रथत्यागि प्रात सूरज

सिधायो है ॥ रसिकविहारी परमेश्वर प्रत्यक्षकैधौं व्योममें विराट रूप प्रकटि दिखायो है ॥ कैधौं खगराज हरिकाज हेत चालो आज कैधौं रामचंद्र बाण विशिख चलायो है ॥ कैधौं हनुमान वीर परमउदंड चंड सागर उलंघि वेष मंडलते धायोहै ॥ ११ ॥

चौ०—यौं हनुमंत अकाशमझारा ❀ जात निरखि किय सिंधु विचारा॥
हौं कपिहित कछु करौं सहाई ❀ सो श्रम खोय बहुरि द्रुत जाई १२॥
तब गुणि कह मैनाकहि सागर ❀ हो गिरि तुम सपक्ष गुण आगर ॥
वपु बढ़ाय इतते नभजावो ❀ निज दिशि करि आदर विलमावो १३॥
सुनि भूधर मैनाक उताला ❀ हेम शिखर युत बाढि विशाला ॥
मिष्ट वारि तरु सफल समेता ❀ गगन उच्चगो हनुमतहेता ॥ १४ ॥
नभ मारग रुद्धित कपि देखा ❀ कछू विघ्न प्रगटो दृढ़ लेखा ॥
तिहि उरते खंडित किय वीरा ❀ चलत भये सुमिरत रघुवीरा १५ ॥
तब शैल मानुष तनुधारी ❀ प्रगटि शिखर वर गिरा उचारी ॥
धन्य पवनसुत विनय सुनीजे ❀ बहुरि तात हो रुचि सो कीजे १६॥
वृद्ध राम कुल जात न दीशा ❀ तव सहाय भेजो मुहिं कीशा ॥
पुनि मो सँग बहु पवन मिताई ❀ रहौं अभय जिहि कृपा सदाई १७॥
सो तुम कपि मो पुत्र समाना ❀ ताही प्रीति करौं सनमाना ॥
है मैनाक सुनाम हमारा ❀ वसें सदा अब सिंधु मझारा ॥१८॥
प्रथम सकल गिरि रहे पक्ष धर ❀ निज इच्छित उडि परैं भूमि पर ॥
तिनते नगर ग्राम बहु नासैं ❀ कुधर सदा सबही इमि त्रासैं १९ ॥
सोलखि ह्वै क्रोधित सुरनाथा ❀ उग्र वज्र गहिकै निज हाथा ॥
पक्ष गिरिनके काटि नशाये ❀ मोदिशि देवराज जब धाये॥२० ॥
तब तव पिता पवन हितकीना ❀ मुहिं उडाय निज वेगहि दीना ॥
मैं इत जलनिधि परो दुराई ❀ तबते जलमाधि रहौं सदाई॥ २१॥
सतयुग मध्य भई यह बाता ❀ सो तुव पितुहित मानहुँ ताता ॥
याते मग श्रम विलमि निवारौ ❀ पुनि प्रभुकारज हेत सिधारौ२२ ॥
करौ अशन स्वादित फल वीरा ❀ पीजे विमल मिष्टवर नीरा ॥
सो सुनि सादर कह हनुमाना ❀ तव सतकार सकल मैं माना२३॥

बिलमौं बीच न यह प्रण धारा ❀ बेगि जात हौं सागर पारा ॥
यौंकहि गिरिहि परसि कर वीरा ❀ चलत भयोकरि नाद गँभीरा २४॥
हनुमत कर आदर गिरिठाना ❀ सोलखि इंद्र परम सुखमाना ॥
मैनाकहि प्रमुदित सुरपाला ❀ दीन अभै वरदान कृपाला २५ ॥
पुनि कौतुकी सकल सुरत्राता ❀ कही नाग मातहि यह बाता ॥
लखो चहैं हम कपि बल सबही ❀ करै सुकह तुव सनमुख अबहीं २६
सो सुरसा करि कृपा सिधावो ❀ हनुमंतहि बहु भाँति दिखावो ॥
कै भय मानि पारनहिं जावै ❀ कै सुठानि बल बुद्धि सिधावै २७
तब सो आय भई मग ठाढी ❀ बिरचि कराल रूप बहु बाढी ॥
कही कपिहि करि घोर पुकारा ❀ आव कीशमम मुखहि मझारा २८
यों कहिकै कराल मुख फारा ❀ तब बोले तिहि पवनकुमारा ॥
सिय लखि प्रभु सुनाय संदेशा ❀ करौं आय पुनि मुखहि प्रवेशा २९
सुरसा नाहिं मानी तब वीरा ❀ कह विस्तृत मम सकल शरीरा ॥
किमि तुव मुख प्रवेश बपु होई ❀ तब सो विहँसि कीशादिशि जोई ३०

दोहा—दशयोजन विस्तार मुख, कियो सुलखि हनुमान ॥
भये वीस योजन तुरत, निरखि तीस सो ठान ॥ ३१ ॥
तब कपि योजन तीस भो, तिय मुख किय चालीस ॥
इमि दश दश दुहुँ बढ़त गे, नाग मात अरुकीस ॥ ३२ ॥
जब कपि सुरसा मुख लखौ, शतयोजन परमान ॥
तब अंगुष्ठ समान वपु, किय प्रवीन हनुमान ॥ ३३ ॥
प्रविसि तासु मुख निकसि पुनि, कही व्योममाधि जाय ॥
गो आनन तू नहिं भखो, मम कछु दोष न आय ॥ ३४ ॥
लखि सुरसा कपि बुद्धि बल, करि बहु भाँति बखान ॥
गई देवपुर उत इतै, हरषलहो बलवान ॥ ३५ ॥
सकल देव सो चरित लखि, चकित रहे सकुचाय ॥
कहत तिहूँ पुर वीर सम, और समर्थ न आय ॥ ३६ ॥
पूरवसम विस्तार वपु, करि गमने हनुमान ॥
जात गगन है छाँह तनु, परै सिंधु जल आन ॥ ३७ ॥

सो०–सो छाया जल बीच, अवलोकी खल निश्चरी ॥
नाम सिंहिका नीच, गहि लीनी वरदान गुण ॥ ३८ ॥
गहतछाहँ हनुमंत, तनु कंपो गति रुद्धह्वै ॥
अकुलाने बलवंत, दशहू दिशि हेरे चकित ॥ ३९ ॥

चौ०–तब देखी कपि सिंधु मझारा ❀ ठाढी एक नारि विकरारा ॥
तीक्षण दशन विकट मुखफारे ❀ छाया गहि ऐंचै बलधारे ॥ ४० ॥
हनूमान तब गात बढ़ाई ❀ किय बहु गिरि सम तनु गरुआई ॥
आय परे तिहि मुखहि मझारा ❀ तासु अंग नख दशन विदारा॥४१॥
मृतक भई सिंहिका कराला ❀ पुनि कपि उछलि गये नभ हाला ॥
सो विलोकि खेचर सबहरषे ❀ जै जै भाषि सुमन सुर वरषे ॥४२॥
तब हनुमत करि पूरवरूपा ❀ उछले द्रुत बल धारि अनूपा ॥
ताछिन वेग अपार बढ़ाई ❀ चले सिंहिकाहति हुलसाई॥ ४३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

परम प्रकाशमान प्रभुता प्रधान स्वच्छ खल दल शाल जनपाल सुखदान है ॥ रसिकविहारी उर अधिक अनंदकारी विपति विदारी दिव्य दीपति महान है ॥ शुद्ध पक्षधारी भीतिहारी नभचारी वर सुवन विहारी वेग भारी बलवान है ॥ काज आज कैधौं खगराज द्विज राज धायो कैधौं रामबाण कैधौं वीर हनुमान है ॥ ४४ ॥

चौ०–इमि उताल केशरी किशोरा ❀ पहुँचे जाय वीर वरजोरा ॥
निरखि सुभूधर सागर तीरा ❀ परे पार ह्वै तहँ कपिधीरा ॥ ४५ ॥
चंपो कुधर सुधरणि समाना ❀ पुनि लघु वपु कीनो हनुमाना ॥
तहँते लखो लंकपुर कीसा ❀ चहूँ ओर कंचनमयदीसा॥ ४६ ॥

दोहा–परिखासिंधु गँभीर चहुँ, योजन एक प्रमान ॥
उच्च हेम प्राकारपुर, चारिद्वार दृढठान ॥ ४७ ॥
निरखि लंक कपि हीयमें, सोचत करत विचार ॥
कहा करैं कपिऋच्छ इत, दुहुँ अरु राजकुमार ॥ ४८ ॥
जय पावै इत युद्धमें, काहू की न समर्थ ॥
सामादिक चहुँ जतन बल, सकल होय ह्यां व्यर्थ ॥ ४९ ॥